आगे ब्याज दरें घटेंगी तो डेट में बढ़ेगा रिटर्न
संदीप बागला 22

ब्राइटकॉम ग्रुप में करोड़ों का गोलमाल
राजीव रंजन झा 34

2047 में 15 लाख होगी प्रति व्यक्ति आय
सौम्य कांति घोष 38

वर्ष : 12 अंक : 9 31 अगस्त 2023 मूल्य : 50 रुपये

निवेश मंथन

उद्योग के दिग्गजों से मार्गदर्शन

70% तक छूट
नियमित ग्राहक बनने पर
पेज : 46

भू-संपदा
विलासिता खंड में खूब बढ़े दाम, सस्ते आवासों की कीमतें 15% बढ़ीं 30

राज रंग
मोदी के तीसरी बार प्रधानमंत्री बनने पर कोई शक नहीं : प्रदीप सिंह 42

Nippon India Mutual Fund

Wealth sets you free

What's stronger than individuals?

Processes.

Invest for consistent returns and minimise needless risk.

Tried and tested processes are fundamental to an organisation's success as they clearly define how things are done. That's why it is imperative to choose an investment manager backed by strong processes, not just by competent individuals.

Strong processes and risk management help you achieve your goals steadily and sustainably.

#EdgeOfKnowledge

133 years of Global Experience

An investor education and awareness initiative of Nippon India Mutual Fund

Contact your Mutual Fund Distributor or Investment Advisor I Give us a missed call on 8000112244 I Visit mf.nipponindiaim.com/edgeofknowledge

Helpful Information for Mutual Fund Investors: All Mutual Fund investors have to go through a one-time KYC (know your Customer) process. Investors should deal only with registered mutual funds, to be verified on SEBI website under 'Intermediaries/Market Infrastructure Institutions'. For redressal of your complaints, you may please visit www.scores.gov.in. For more info on KYC, change in various details and redressal of complaints, visit mf.nipponindiaim.com/InvestorEducation/what-to-know-when-investing

Mutual Fund investments are subject to market risks, read all scheme related documents carefully.

INVEST IN THE PIONEERS OF NEXT GENERATION

Motilal Oswal Midcap Fund

(Formerly known as Motilal Oswal Midcap 30 Fund)

Follows unique stock selection process: QGLP#

Identifies Midcaps that have high growth potential

Invests in Leaders of respective Sectors

THINK EQUITY
THINK MOTILAL OSWAL

MOTILAL OSWAL MUTUAL FUND

BUY RIGHT SIT TIGHT

Visit: motilaloswalmf.com or contact your Financial Advisor

#QGLP: Quality, Growth, Longevity, (Reasonable) Price

Name of the scheme	Scheme Riskometer	Benchmark Riskometer Nifty Midcap 150 TRI
Motilal Oswal Midcap Fund (Formerly known as Motilal Oswal Midcap 30 Fund) (An open ended equity scheme predominantly investing in mid cap stocks)	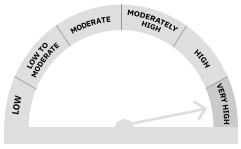	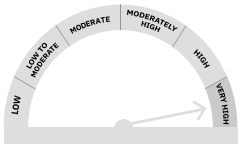
This product is suitable for investors who are seeking*		
• Long-term capital growth • Investment in equity and equity related instruments in quality mid-cap companies having long-term competitive advantages and potential for growth.	Investors understand that their principal will be at Very High risk	

*Investors should consult their financial advisers if in doubt about whether the product is suitable for them.

Scan QR to Know more

Mutual Fund investments are subject to market risks, read all scheme related documents carefully

विषय सामग्री

उद्योग के दिग्गजों से मार्गदर्शन

वित्तीय स्वतंत्रता के लक्ष्य को कैसे पायें, इस राह पर कैसे आगे बढ़ें, इस बारे में हमने अपनी इस आमुख कथा में निवेश की दुनिया के 12 दिग्गजों के विचार पेश किये हैं। ये विचार न केवल उन युवाओं के लिए बड़े महत्वपूर्ण हैं, जो अभी अपने वित्तीय जीवन का आरंभ कर रहे हैं, बल्कि जो लोग इस यात्रा में कहीं आगे तक बढ़ चुके हैं, वे भी इनकी मदद से समझ सकते हैं कि कहीं कुछ गलती तो नहीं हो रही।

8

आगे ब्याज दरें घटेंगी तो डेट में बढ़ेगा रिटर्न

ट्रस्ट म्यूचुअल फंड के संदीप बागला से ऋण (डेट) बाजार में किस तरह हलचलों पर बातचीत।

22

म्यूचुअल फंड के रास्ते कैसे पायें वित्तीय स्वतंत्रता : ए. बालासुब्रमण्यम 10
विविधीकृत पोर्टफोलिओ में रखें कमोडिटी में निवेश : अरुण रास्ते 11
संपदा सृजन से ही मिलेगी वित्तीय स्वतंत्रता : डी. के. अग्रवाल 12
पर्याप्त बचत के अलावा कोई अन्य तरीका नहीं : धीरेंद्र कुमार 13
अभी सोचें रिटायर होने के बाद की बात : नवनीत मुनोट 14
सफलतापूर्वक धन सृजन के तीन स्तंभ : निमेश शाह 15
वित्तीय स्वतंत्रता पाने से रोकती हैं आपकी 3 गलतियाँ : नितिन कामत 16
अपनी शर्तों पर जीवन जीने की स्वतंत्रता : आर. वेंकटरमन 17
वित्तीय स्वतंत्रता एक यात्रा भी, गंतव्य भी : रजनीश नरूला 18
नये निवेशक कैसे पायें वित्तीय स्वतंत्रता का मार्ग : शमशेर सिंह 19
अनुशासन और व्यावहारिक समझ से पायें वित्तीय स्वतंत्रता : संदीप सिक्का 20
जीवन बीमा के बिना वित्तीय स्वतंत्रता नहीं : विभा पडलकर 21
म्यूचुअल फंडों ने क्या खरीदा, क्या बेचा : जुलाई 2023 24
म्यूचुअल फंड : स्मॉलकैप में है जोरदार तेजी, क्या खरीदने का है सही समय? 25
तिरंगे में भी हैं वित्तीय स्वतंत्रता के सूत्र! 29
विलासिता आवास खंड में खूब बढ़े दाम, सस्ते आवासों की कीमतें 15% बढ़ीं 30
बढ़ती ब्याज दरों से घटी सस्ते आवास की माँग 31
ब्राइटकॉम ग्रुप में करोड़ों का गोलमाल : सेबी का अंतरिम आदेश 34
ब्याज दरें न बढ़ाना रिजर्व बैंक का एक सही फैसला : मधुरेंद्र सिन्हा 36
जनवरी-मार्च में घट सकती हैं दरें, पर शर्तें लागू : धर्मकीर्ति जोशी 37
खास खबर : सेबी ने घटाया आईपीओ के बाद लिस्टिंग का समय 40
2024 का चुनाव और मोदी बनाम राहुल 41
नये उत्पाद 44

2047 में 15 लाख रुपये होगी प्रति व्यक्ति आय

भारतीय स्टेट बैंक के समूह मुख्य आर्थिक सलाहकार सौम्य कांति घोष बता रहे हैं 2047 के भारत की रूपरेखा।

38

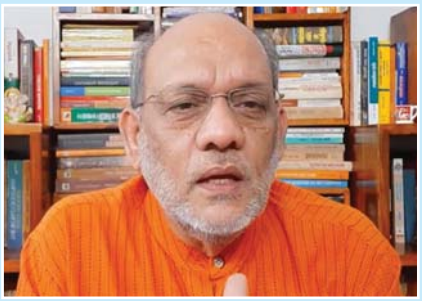

मोदी के तीसरी बार प्रधानमंत्री बनने पर कोई शक नहीं

लोक सभा चुनावों के उभरते परिदृश्य पर वरिष्ठ पत्रकार प्रदीप सिंह का आकलन।

42

निवेश मंथन

यूट्यूब पर भी जुड़ें

निवेश मंथन से

www.youtube.com/niveshmanthan

क्यूआर कोड स्कैन करें

आपकी पाती

म्यूचुअल फंडों पर भरोसा बढ़ा

पिछले अंक में 'निवेशक जागरूकता से बढ़ेगी म्यूचुअल फंडों की पैठ' लेख पढ़ा। लेख में बताये गये आँकड़ों के अनुसार सभी म्यूचुअल फंड कंपनियों को मिला कर कुल प्रबंधन अधीन संपत्तियां (एयूएम) बीते 10 सालों में 8.11 लाख करोड़ रुपये से बढ़कर 44.39 लाख करोड़ रुपये हो गयी। इससे जाहिर है कि निवेशकों का भरोसा म्यूचुअल फंड पर बढ़ा है। इस भरोसे की दो मुख्य वजहें हैं। पहला म्यूचुअल फंडों ने भारत के मध्यवर्गीय निवेशकों को मासिक आधार पर थोड़ा-थोड़ा पैसा निवेश करने का अवसर पेश किया। दूसरे, उन्होंने इस निवेश पर अच्छा लाभ (रिटर्न) दिया। लेख के अनुसार यदि निवेशकों के बीच म्यूचुअल फंड की जागरूकता बढ़ायी जाती है, तो इनका दायरा और बढ़ेगा। म्यूचुअल फंड कंपनियों के लिए समय आ गया है कि वे ग्रामीण इलाकों की तरफ बढ़ें, क्योंकि वहाँ से निवेश बाद में आयेगा, पहले वहाँ की आबादी को जागरूक करना होगा।

– रघुनाथ आचार्य, जयपुर

पत्र भेजें पुरस्कार जीतें

हम हर महीने एक पत्र को पुरस्कृत करने की योजना चला रहे हैं, जिसमें पुरस्कृत पत्र लेखक को निवेश मंथन की एक वर्ष की सदस्यता मुफ्त दी जाएगी।

पैसिव फंडों में निवेश अवधि की भूमिका

जून अंक में पत्रिका के एक लेख में यह समझाया गया था कि जोखिम उठाने की क्षमता के आधार पर किस निवेशक के लिए कौन-से पैसिव फंड अच्छे रहते हैं। जुलाई अंक का 'निवेश अवधि के अनुसार पैसिव फंडों का चयन' लेख उस लेख का अगला भाग है, जिसमें समझाया गया है कि निवेश अवधि के लिहाज से किसी निवेशक के लिए कौन सा पैसिव फंड ठीक रहेगा। जैसे कि अधिक जोखिम ले सकने वालों को भी सारा पैसा इक्विटी फंडों में नहीं लगाना चाहिए। हाँ जो लोग कम जोखिम क्षमता वाले हैं, उन्हें कुछ निवेश इक्विटी फंडों में जरूर लगाना चाहिए, ताकि थोड़े अधिक लाभ की उम्मीद रहे। लेख के अनुसार किसी निवेशक के जोखिम लेने की क्षमता कुछ भी हो कुछ पैसा इक्विटी और कुछ डेट फंडों में निवेश करना बेहतर तरीका है। इससे अच्छे लाभ की उम्मीद रहती है और जोखिम नियंत्रित हो सकता है।

– आदित्य नारायण पांडे, इंदौर

वित्तीय स्वतंत्रता का लक्ष्य कैसे हासिल होगा

निवेश मंथन पत्रिका के जुलाई अंक में छपा 'कुछ खास कदम जो आपको पहुँचायेंगे वित्तीय स्वतंत्रता के लक्ष्य तक' लेख पढ़ा। इस लेख में कुछ चीजों बतायी गयी हैं, जिन्हें अपनाते हुए वित्तीय स्वतंत्रता हासिल की जा सकती है। इनमें अपने स्पष्ट वित्तीय लक्ष्यों की योजना बनाना शामिल है, जिसके बिना शायद कोई अपने खर्चे और निवेश राशि तय न कर पाये। दूसरी बात कि अपनी वित्तीय स्थिति को समझना जरूरी है। लेख के मुताबिक बाकी चीजों में अचानक आने वाले खर्चों के लिए तैयार रहना, एक अच्छा वित्तीय सलाहकार ढूँढना, आने वाले समय के लिए निवेश करना, हमेशा कर्ज को कम रखना, इमरजेंसी स्थिति के लिए एक बजट बनाकर रखना और वित्तीय साक्षरता को लगातार बेहतर बनाना शामिल है। इन चीजों की मदद से वित्तीय स्थिति बेहतर से बेहतर हो सकती है।

– रोहित मान, जालंधर

'इंडिया' गठबंधन में त्याग की संभावना कम

जुलाई अंक में 'इंडिया गठबंधन में कौन किसके लिए त्याग करेगा' लेख पढ़ा। यही लेख का सार है, जिसके आधार पर कांग्रेस नीत इंडिया गठबंधन को सफलता मिल सकती है। नाम कुछ भी हो, अहम चीज है जमीन पर काम कैसा रहता है और त्याग वाली बात उससे भी महत्वपूर्ण है। पहली नजर में इस गठबंधन को जो भी देख रहा होगा, वह समझ जायेगा कि यहाँ अवसरवाद अधिक और त्याग की भावना न के बराबर होगी। किसी समूह को उसका मुखिया चलाता है। इंडिया गठबंधन में मुखिया कांग्रेस है। यहाँ मुखिया ही शायद किसी के लिए त्याग न करे तो बाकी से उम्मीद ही क्या करें। संभावना यह है कि बाकी पार्टियाँ केंद्र के बजाय राज्य में अपनी स्थिति मजबूत करने पर ध्यान दें। यही उनके लिए अवसर है।

– नरेश वशिष्ठ, मेरठ

निवेश मंथन

वर्ष : 12, अंक : 9
अगस्त 2023

सलाहकार संपादक
राजेश रपरिया
संपादक
राजीव रंजन झा

संपादकीय कार्यालय
138-ई, पॉकेट-1, मयूर विहार
फेज-1, दिल्ली 110091
दूरभाष : 011-79633546
011-47529834
ईमेल : edit@sharemanthan.com

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक राजीव रंजन झा ने 138-ई, पॉकेट-1, मयूर विहार फेज 1, दिल्ली 110091 से प्रकाशित और ऑल टाइम ऑफसेट प्रिंटर्स, एफ 406, सेक्टर 63, नोएडा 201307 से मुद्रित किया।

स्पष्टीकरण

अस्वीकरण (डिस्क्लेमर) : निवेश मंथन पर दी जाने वाले कोई भी जानकारी लेख व विशेषज्ञों की बात केवल आपकी मदद के लिए है। इसे निवेश मंथन, सहयोगी प्रकाशनों या प्रकाशत की सलाह नहीं समझें। यह जरूरी नहीं है कि विश्लेषकों की सलाह से निवेश मंथन और इससे संबद्ध व्यक्ति/निकाय सहमत हों। संबंधित शेयरों में विशेषज्ञ या उनके ग्राहकों के हित जुड़े हो सकते हैं। निवेश संबंधी किसी भी फैसले से पहले अपनी खोजबीन जरूर करें और मान्यता प्राप्त पेशेवर व्यक्तियों से सलाह लें। इस पत्रिका में प्रकाशित सारी सामग्री शेयर मंथन वेबसाइट (www.sharemanthan.in) पर दिये गये विस्तृत स्पष्टीकरण के अधीन है।

संपादकीय

महँगाई का जिन्न खुला घूम रहा है

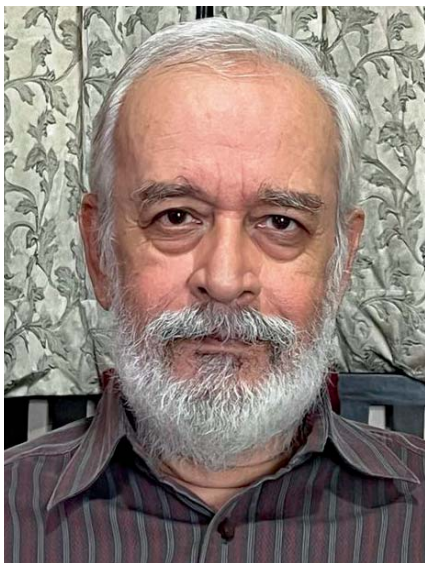

राजेश रपरिया
सलाहकार संपादकीय

चालू वित्त वर्ष 2023 की पहली तिमाही यानी अप्रैल जून 2023 में सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) की विकास दर 7.8% है, जो पिछली चार तिमाहियों में सबसे ज्यादा है। पिछले वित्त-वर्ष 2022-23 की समान अवधि में विकास दर 13.1% रही थी। अप्रैल-जून 2023 की तिमाही के लिए अधिकांश वित्तीय संस्थाओं का अनुमान 8% या उससे अधिक था। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने भी इस तिमाही के लिए विकास दर 8% रहने का अनुमान जताया था। इस तिमाही की विकास दर को सबसे ज्यादा मजबूती सेवा क्षेत्र से मिली है। सेवा क्षेत्र की मजबूती से भारत वैश्विक मंदी के असर को निष्प्रभावी करने में सफल रहा है। भारत की विकास दर अमेरिका, चीन, जापान और जर्मनी जैसी आर्थिक ताकतों से अधिक बनी हुई है।

राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (एनएसओ) के आँकड़ों के अनुसार चालू वित्त-वर्ष की पहली तिमाही अप्रैल-जून 2023 में कृषि क्षेत्र की वृद्धि दर 3.5% रही, जो पिछले वित्त-वर्ष की समान अवधि में 2.5% थी। पर पिछले वित्त-वर्ष की अंतिम तिमाही यानी जनवरी-मार्च 2023 में यह वृद्धि दर 5.5% दर्ज की गयी थी। बुनियादी क्षेत्र के आठ उद्योगों (कोर सेक्टर) की वृद्धि दर भी कमजोर हुई है। नवीनतम आँकड़ों के अनुसार अप्रैल-जुलाई 2023 की अवधि में इन आठ उद्योगों की वृद्धि दर 6.4% रही, जो पिछले वित्त-वर्ष की समान अवधि में 11.5% थी। भू-संपदा की गतिविधियाँ आलोच्य तिमाही में बढ़ी हैं, जो एक अच्छा संकेत है। पर विनिर्माण (मैन्युफैक्चरिंग) क्षेत्र अब भी अर्थव्यवस्था की दुखती रग बना हुआ है। अप्रैल-जून 2023 में विनिर्माण क्षेत्र की वृद्धि दर 4.7% रही, जो पिछले वित्त-वर्ष की समान अवधि में 6.1% थी। पूँजी निर्माण यानी निवेश और उपभोक्ता माँग की सूचक निजी उपभोक्ता खर्च की वृद्धि दर आलोच्य अवधि में क्रमशः 8% और 6% रही है, जो पिछले वित्त-वर्ष की समान अवधि में क्रमशः 20.4 और 19.8% थी।

देश के अनेक विशेषज्ञों को आशंका है कि खुदरा महँगाई की तेज रफ्तार से निजी उपभोग खर्च और सिकुड़ सकता है, जिससे विकास दर की संभावनाएँ धूसरित हो सकती है। पिछले चार महीनों में सकल रोजगार में वृद्धि सबसे धीमी रही है, जिसका निजी उपभोग खर्च पर प्रभाव पड़ना लाजमी है। ऐसी स्थिति में केवल सरकारी खर्च ही विकास दर को संबल दे सकता है।

महँगाई को लेकर भारत सरकार के मुख्य आर्थिक सलाहकार को कोई चिंता नहीं सता रही है। पर आदतन महँगाई से बेखबर रहनेवाली मोदी सरकार विधानसभा चुनावों को देखते हुए सतर्क हो गयी है। रसोई गैस पर छूट इस बात का ठोस संकेत है। जुलाई 2023 में खुदरा महँगाई पिछले 15 महीनों के सर्वोच्च शिखर पर पहुँच गयी। आरबीआई की सहन-सीमा के दायरे 2-6% को ध्वस्त करते हुए तमाम अनुमानों के विपरीत जुलाई महीने में खुदरा महँगाई 7.44% रही। आरबीआई ने वर्ष 2023-24 के लिए खुदरा महँगाई दर का आकलन 30 आधार अंक (बीपीएस) बढ़ाकर 5.4% कर दिया है।

सब्जियों की कीमत में अप्रत्याशित वृद्धि के कारण जुलाई माह में महँगाई दर अधिक रही है। खुदरा महँगाई में खाद्य पदार्थों में 11.51% अनाज में 13.9%, मांस-मछली में 2.25%, सब्जियों में 37.39%, दालों में 13.27%, फलों में 3.16%, कपड़ों और जूतों में 3.67% कीमत वृद्धि हुई। टमाटरों की कीमतों में तकरीबन 200% की वृद्धि हुई, लेकिन अब काफी नीचे आ गयी है। लेकिन प्याज की कीमतों ने सरकार के लिए नया सिरदर्द पैदा कर दिया है। अधिकांश जानकारों का कहना है कि खाद्य पदार्थों की आपूर्ति में व्यवधान के कारण अप्रत्याशित तेजी आती है, जिसकी देख-रेख की जिम्मेवारी केंद्र सरकार की होती है। गाँवों में महँगाई दर शहरों से ज्यादा है और आमदनी भी कम है। महँगाई के कारण ग्रामीण क्षेत्र की स्वैच्छिक क्रय शक्ति पर प्रतिकूल असर पड़ा है। इसलिए ग्रामीण माँग को लेकर संशय बना हुआ है। स्कूटर, ट्रैक्टर एवं तैयार खाद्य सामग्री की माँग पर इसका असर देखा जा सकता है।

खुदरा महँगाई, पिछले 46 महीनों से आरबीआई के मध्यवर्ती लक्षित दर 4% से अधिक बनी हुई है। खाद्य महँगाई में अप्रत्याशित तेजी के कारण कंपनियों का कहना है कि आने वाले त्योहारी मौसम की खरीदारी गड़बड़ा सकती है। त्योहारी मौसम में कुल बिक्री की 35-40% तक बिक्री हो जाती है। आरबीआई के आलेख में अंदेशा जताया गया है कि महँगाई का जिन्न अभी खुला घूम रहा है। लगता है कि जुलाई-सितंबर और अक्टूबर-दिसंबर की तिमाहियों में खुदरा महँगाई दर 6% या उससे अधिक रह सकती है। चुनावों को देखते हुए मोदी सरकार कुछ और राहतों की घोषणा कर सकती है।

वित्तीय स्वतंत्रता के लक्ष्य को कैसे पायें, इस राह पर कैसे आगे बढ़ें, इस बारे में हमने अपनी इस आमुख कथा में आगे के पन्नों पर निवेश की दुनिया के 12 दिग्गजों के विचार पेश किये हैं। ये 12 दिग्गज हैं आदित्य बिड़ला म्यूचुअल फंड के एमडी एवं सीईओ ए. बालासुब्रमण्यम, एनसीडीईएक्स के एमडी एवं सीईओ अरुण रास्ते, एसएमसी कैपिटल्स के सीएमडी डी. के. अग्रवाल, वैल्यू रिसर्च के सीईओ धीरेंद्र कुमार, एचडीएफसी म्यूचुअल फंड के एमडी एवं सीईओ नवनीत मुनोट, आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल म्यूचुअल फंड के एमडी एवं सीईओ निमेश शाह, जेरोधा के संस्थापक-सीईओ नितिन कामत, आईआईएफएल सिक्योरिटीज के चेयरमैन आर. वेंकटरमन, केनरा रोबेको म्यूचुअल फंड के सीईओ रजनीश नरूला, एसबीआई म्यूचुअल फंड के एमडी एवं सीईओ शमशेर सिंह, निप्पॉन इंडिया म्यूचुअल फंड के ईडी एवं सीईओ संदीप सिक्का और एचडीएफसी लाइफ की एमडी एवं सीईओ विभा पडलकर।

राजीव रंजन झा

कहते हैं कि खुशी पैसों से नहीं खरीदी जा सकती और पैसा कितना भी कमाया जाये, वह कम ही लगता है। फिर भी, पैसों की जरूरत तो जीवन के हर कदम पर होती है। कम-से-कम इतने पैसे तो होने चाहिए कि उनके अभाव में आपको अपनी कुछ इच्छों को लेकर मन मसोस कर रह जाने की नौबत न हो और आपकी कुछ महत्वपूर्ण आवश्यकताएँ पैसों की कमी के चलते न अटक जायें। यहीं पर बात आती है वित्तीय स्वतंत्रता की। पैसा इतना हो, कि आपकी इच्छाएँ और आवश्यकताएँ पैसों की कमी के बंधन में न फँसें।

वित्तीय स्वतंत्रता दरअसल खुशहाली और स्वतंत्रता की एक ऐसी स्थिति है, जहाँ एक व्यक्ति या परिवार के पास वित्तीय बाधाओं या दायित्वों से बँधे बिना अपनी शर्तों पर जीवन जीने के लिए संसाधन और लचीलापन होता है। वैसे तो अलग-अलग लोगों के लिए इसका बिल्कुल अलग-अलग मतलब हो सकता है, लेकिन वित्तीय स्वतंत्रता से जुड़े कुछ सामान्य तत्वों की पहचान आसानी से की जा सकती है। मोटे तौर पर, वित्तीय रूप से सुरक्षित और आश्वस्त महसूस करना कि आप बिना किसी महत्वपूर्ण तनाव के अप्रत्याशित खर्चों या आपात स्थितियों को संभाल सकते हैं, वित्तीय स्वतंत्रता पाने की एक प्रमुख पहचान है।

कैसे समझें वित्तीय स्वतंत्रता

ऋण-मुक्त होना : भारत की सनातन संस्कृति में ही ऋण-मुक्त होने पर विशेष बल दिया गया है। ऋणं कृत्वा घृतं पिबेत यानी कर्ज लेकर घी पीना यहाँ एक उपहास का विषय रहा है और अपने संसाधनों के भीतर जीवनयापन करना और यदि कभी ऋण लेना पड़े तो उससे यथासंभव मुक्त हो जाना ही धर्म माना जाता है। इसी बात को रीतिकाल के कवि वृंद ने अपनी सूक्ति "तेते पाँव पसारिये जैती लांबी सौर" में भी कहा है। उपभोक्ता ऋणों, जैसे क्रेडिट कार्ड का बकाया, व्यक्तिगत ऋण (पर्सनल लोन), कार लोन आदि से मुक्त होना वित्तीय स्वतंत्रता का एक मूलभूत पहलू है। इसका मतलब है कि लेनदारों का पैसा बकाया नहीं है और उच्च-ब्याज भुगतान का बोझ नहीं है। केवल आवास ऋण (होम लोन) ऐसा कर्ज माना जा सकता है, जिसका लंबे समय तक चलना भी बुरा नहीं है, क्योंकि इससे आपकी एक संपत्ति बन रही होती है। लेकिन आवास ऋण भी आपकी सेवानिवृत्ति की उम्र से काफी पहले ही सहज ढंग से निपट जाना चाहिए।

पर्याप्त बचत और निवेश : आपकी वर्तमान और भविष्य की वित्तीय जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त बचत और निवेश होना वित्तीय स्वतंत्रता के लिए महत्वपूर्ण है। इसमें आपातकालीन निधि, सेवानिवृत्ति बचत और निष्क्रिय आय उत्पन्न करने वाले निवेश शामिल हो सकते हैं। आपातकालीन निधि सबसे पहले जुटानी चाहिए, जिसका मतलब है कि आपके तीन से छह महीने तक का खर्च चल सकने लायक पैसा हाथ में रखना। यह पैसा हाथ में रखने का मतलब है कि या तो अच्छा ब्याज देने वाले बचत खाते (सेविंग्स एकाउंट) में रखा जाये, या एफडी में रखना अगर उसे जल्दी तोड़ने पर ज्यादा ब्याज न कटता हो। इसे आप लिक्विड फंड में भी रख सकते हैं, अगर जल्दी निकालने की सुविधा हो। ऑनलाइन या ऐप्प से पैसा निकालने की सुविधा रहने पर और भी अच्छा है। संक्षेप में, यह आपातकालीन निधि ऐसी जगह रखी जानी चाहिए जहाँ पैसा घटने या डूबने का

खतरा न हो, बहुत नहीं भी तो थोड़ा प्रतिफल मिलता रहे और जहाँ से आप जब चाहें तब पैसा निकाल सकें।

पसंद की स्वतंत्रता : वित्तीय स्वतंत्रता आपको वित्तीय आवश्यकता के बजाय अपनी प्राथमिकताओं के आधार पर विकल्प चुनने की अनुमति देती है। उदाहरण के लिए, इसमें ऐसा करियर चुनना शामिल हो सकता है जो आपको ज्यादा पसंद है। व्यक्तिगत कारणों से काम से समय निकाल सकने की स्वतंत्रता भी इसी से जुड़ी है। या आप किस जगह घूमने जायेंगे, यह आपकी पसंद तय करेगी या आपका बजट, इससे भी पता चलता है कि आपको कितनी वित्तीय स्वतंत्रता मिली हुई है। इसमें आप और भी बहुत-सी चीजें सोच सकते हैं, जैसे कि आपके पास छोटी कार हो या एसयूवी। बच्चों की पढ़ाई कहाँ होगी, यह उनकी क्षमता और इच्छा से तय हो या आपके पास जमा पूँजी से? बेशक, इच्छाओं की कोई सीमा नहीं है। पर एक व्यावहारिक धरातल पर रहते हुए आप अपनी या परिवार के लोगों की पसंद के अनुसार चल सकें, यही तो वित्तीय स्वतंत्रता है।

निष्क्रिय आय (पैसिव इन्कम) : जीवन के सक्रिय वर्षों में आप अपनी योग्यता, क्षमता और अवसरों के अनुरूप कमाते रहते हैं। इस कमाई से आपका जीवनयापन होता है। लेकिन यदि आपकी आय केवल आपके अपने काम-काज यानी नौकरी में वेतन या व्यवसाय तक सीमित न रहे, आपको एक और कमाई का साथ मिले तो क्या यह अच्छा नहीं होगा? और यहाँ बात आपके जीवनसाथी की नहीं हो रही। यदि आपके जीवनसाथी की भी अपनी आय है, तो वह आपके परिवार के लिए अच्छी बात है। पर एक व्यक्ति के रूप में आप अपनी सक्रियता से मिली आय के साथ-साथ अगर कुछ खास किये बिना अलग से कमा सकें, मतलब निष्क्रिय आय (पैसिव इन्कम) भी होती चले, तो जीवन में आपके तमाम वित्तीय लक्ष्य आसान हो जायेंगे।

यह निष्क्रिय आय तब होती है, जब आप अपनी सक्रिय आय से कुछ पैसे बचा कर उनका निवेश करते हैं और लगातार करते रहते हैं। आपका यह निवेश धीरे-धीरे आपको अच्छा-खासा प्रतिफल (रिटर्न) देने लगता है। जब आप अपने निवेश के प्रतिफल को निवेशित ही रहने देते हैं, जैसे कि आपने किसी शेयर या म्यूचुअल फंड में 1,00,000 रुपये लगाये और उसका मूल्य बढ़ कर 1,20,000 रुपये हो गया तो बढ़े हुए मूल्य को निकाल कर खर्च करने के बदले उसी शेयर या म्यूचुअल फंड में रहने दिया, तो फिर आपके निवेश का मूल्य चक्रवृद्धि दर (कंपाउंडिंग रेट) से बढ़ने लगता है।

इस तरह धीरे-धीरे आपके पास आय के ऐसे स्रोत बनते जाते हैं, जिनमें कमाई के लिए आपकी ओर से बहुत प्रयास की आवश्यकता नहीं होती है। ऐसी आय में अचल संपत्ति से किराये की आय या रचनात्मक कार्यों से रॉयल्टी आदि को भी गिना जा सकता है, और ये सब मिल कर उस उम्र में आपकी वित्तीय स्वतंत्रता सुनिश्चित कर सकते हैं, जब आप सेवानिवृत होकर आराम का जीवन बिताना चाहें।

कैसे बढ़ें इस रास्ते पर

वित्तीय स्वतंत्रता की राह पर बढ़ने के तरीकों के बारे में आपको आगे के पन्नों पर निवेश की दुनिया के 12 दिग्गज अपनी विशेषज्ञ टिप्पणियों के जरिये बता रहे हैं। पर तीन सबसे प्रमुख बातें यहाँ याद रख लें, जिनके बिना आप वित्तीय स्वतंत्रता की सही राह न पकड़ कर इधर-उधर भटक सकते हैं :

खर्चों पर नियंत्रण : अपने खर्चों को समझदारी से करना और अपने साधनों के भीतर रह कर जीवन चलाना वित्तीय स्वतंत्रता की सबसे पहली सीढ़ी है। इसका मतलब है जरूरतों और चाहतों के बीच अंतर करने में सक्षम होना और खर्च के बारे में सोच-समझकर निर्णय लेना। ऐसा करके ही आप अपनी आय की सीमा में रहते हुए खर्चों को निपटाने के बाद कुछ बचत भी कर सकेंगे। यदि बचत नहीं होगी तो आप निवेश नहीं कर सकेंगे, और यदि निवेश नहीं करेंगे तो जीवन में आगे आने वाले बड़े खर्चों के लिए पैसे नहीं जुटा सकेंगे।

वित्तीय लक्ष्य : अपने जीवन-मूल्यों और आकांक्षाओं के अनुरूप वित्तीय लक्ष्यों को निर्धारित करना और उन्हें प्राप्त करना वित्तीय स्वतंत्रता का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। इन लक्ष्यों में घर खरीदना, व्यवसाय शुरू करना या अपने बच्चों की शिक्षा के लिए पैसे जुटाना शामिल हो सकता है। यदि आप अपने लक्ष्य पहले से तय ही नहीं करेंगे, तो समय आने पर हो सकता है कि उस अवसर के लिए आपको पैसों की कमी हो जाये। यहाँ ऐसा भी नहीं है कि आपको अपने सारे वित्तीय लक्ष्य किसी एक दिन बैठ कर कागज पर लिख लेने हैं और उसके बाद जीवन भर आपके वही लक्ष्य रहेंगे। आप पहले कुछ मूलभूत लक्ष्यों के साथ शुरुआत तो करें, आगे जब आपकी आय बढ़ेगी, इच्छाएँ और आवश्यकताएँ बनती-बदलती रहेंगी, उनके अनुसार आप अपने लक्ष्यों को संशोधित भी कर सकते हैं। पर कुछ लक्ष्य तो ऐसे होते ही हैं, जो लगभग हर किसी के लिए होते हैं, जैसे सेवानिवृत्ति का लक्ष्य, यानी जब आप रिटायर हों तो आगे के जीवन के लिए आपके पास पर्याप्त जमा-पूँजी हो।

संपदा आवंटन के साथ निवेश : जब आपने बचत की आदत डाल ली और अपने वित्तीय लक्ष्य तय कर लिये, तो आपको किसी अच्छे निवेश सलाहकार के साथ मिल कर या स्वयं अच्छे से अध्ययन करके अपना संपदा आवंटन (एसेट एलोकेशन) तय करना चाहिए। मोटे तौर पर इसका मतलब यह है कि कितना-कितना पैसा इक्विटी, फिक्स्ड इन्कम और अन्य तरह की संपत्तियों में लगाना है।

इक्विटी में निवेश का मतलब है कि कितना पैसा शेयरों में लगाना है, उसमें से कितना सीधे शेयरों को खरीद कर निवेश करना है और कितना म्यूचुअल फंडों के जरिये। नियत आय (फिक्स्ड इन्कम) का मतलब है ऐसे निवेश जिसमें पहले से ब्याज तय होता है, जैसे बैंक एफडी, बॉन्ड वगैरह या फिर बॉन्ड आदि में निवेश करने वाले डेट म्यूचुअल फंड। अन्य संपत्तियों में सोना, भूसंपत्ति (रियल एस्टेट) आदि को रख सकते हैं। आपको यह संपदा आवंटन समय के साथ बदलना भी होगा, क्योंकि समय-समय पर आपको अपनी उम्र, आय, आवश्यकताओं और जोखिम लेने की क्षमता या इच्छा के अनुसार इसमें फेरबदल करते रहना होगा।

वित्तीय रूप से स्वतंत्र होने की भावना आपके मन में शांति लायेगी और वित्तीय मामलों को आप कम तनाव के साथ सँभाल सकेंगे। इससे आप जीवन के अन्य पहलुओं पर भी ध्यान दे पाते हैं, जैसे अपनी व्यक्तिगत क्षमताओं या कौशल का विकास, अपने मित्रों-परिजनों के साथ इच्छानुसार समय बिता सकना और अपनी रुचियों को पूरा कर पाना आदि। वित्तीय स्वतंत्रता का मतलब यह भी है कि जब आप अपने समुदाय को कुछ वापस देने की इच्छा रखें तो उसके लिए जरूरी साधन आपके पास हों। याद रखें, वित्तीय स्वतंत्रता का मतलब असीमित धन होना नहीं है, बल्कि यह अपनी आय, व्यय और वित्तीय लक्ष्यों के बीच संतुलन बना सकने की क्षमता है, जिससे आप एक पूर्ण और चिंतामुक्त जीवन जी सकें।

म्यूचुअल फंड के रास्ते कैसे पायें वित्तीय स्वतंत्रता

एक व्यक्ति को वित्तीय रूप से स्वतंत्र तब कहा जाता है, जब उसके जीवनयापन के खर्चों का प्रबंध नौ से पाँच बजे की नौकरी जैसे किसी आय के विशेष स्रोत पर निर्भर रहे बिना ही हो सके, मतलब जहाँ उसे खुद काम न करना पड़ रहा हो। यह और कुछ भी हो सकता है, जैसे निवेश हो या ब्याज से आमदनी हो या किराये से मिलने वाली आमदनी हो, जो उसकी वर्तमान जीवनशैली बनाये रखना सुनिश्चित कर सके।

यहाँ इस बात पर ध्यान देना जरूरी है कि वित्तीय स्वतंत्रता की परिभाषा हरेक व्यक्ति के लिए अलग-अलग हो सकती है। लेकिन, इसे पाने के लिए जिन बातों की जरूरत है, उनमें शामिल है सावधानीपूर्वक योजना बनाना, समझदारी के साथ निवेश करना और अपने वित्तीय उद्देश्यों को स्पष्ट रूप से समझना। वित्तीय स्वतंत्रता के कुछ प्रमुख पहलू इस प्रकार हैं :

ए. बालासुब्रमण्यम
एमडी एवं सीईओ, आदित्य बिड़ला म्यूचुअल फंड

पर्याप्त रूप से निष्क्रिय आय (पैसिव इन्कम) : लोगों को यह लक्ष्य रखना चाहिए कि वे ब्याज, किराया, लाभांश (डिविडेंड) आदि अलग-अलग स्रोतों से पर्याप्त निष्क्रिय आय (पैसिव इन्कम, यानी वैसी आय जिसके लिए आपको खुद काम न करना पड़ता हो) आती रहे।

पूरी तरह ऋणमुक्त होना : लोगों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि उन पर ऊँची ब्याज वाला कोई ऋण नहीं हो, ऐसे सभी ऋणों को शून्य पर ले आना चाहिए और उन पर किसी देनदारी का बोझ बाकी नहीं बचना चाहिए।

आकस्मिक स्थितियों के लिए सुरक्षित कोष : जरूरत के समय अप्रत्याशित यानी अचानक आ जाने वाले खर्चों के लिए कुछ राशि सुरक्षित रखनी चाहिए, इनके लिए अपने निवेशों पर निर्भर नहीं रहना चाहिए।

जल्दी सेवानिवृत (रिटायर) होना : वित्तीय स्वतंत्रता मिलने पर जल्दी सेवानिवृत (रिटायर) हो पाना संभव होता है, जिससे व्यक्ति अपनी रुचियों का अनुसरण कर सके।

संपदा सृजन (वेल्थ क्रिएशन) : अनुशासित ढंग से बचत और निवेश करके एक महत्वपूर्ण राशि की संपदा बनायी जा सकती है।

अब यह देखते हैं कि म्यूचुअल फंड के रास्ते से वित्तीय स्वतंत्रता के लिए क्या करना चाहिए :

म्यूचुअल फंडों को समझें : म्यूचुअल फंड कैसे काम करते हैं, इसे समझने के लिए शिक्षा या जानकारी पाना महत्वपूर्ण है। आपको यह जानना चाहिए कि म्यूचुअल फंड किस-किस तरह के होते हैं, जैसे इक्विटी, डेट, बैलेंस्ड एडवांटेज, मल्टी एसेट एलोकेशन और पैसिव श्रेणी के फंड आदि। जब आप म्यूचुअल फंड योजनाओं (स्कीम) में निवेश करते हैं, तो फंडों के पिछले प्रदर्शन और उनसे जुड़े जोखिमों को जानना-समझना भी आवश्यक होता है।

लक्ष्यों पर आधारित निवेश करना : यह आवश्यक है कि आप अपने जीवन के महत्वपूर्ण वित्तीय लक्ष्यों को पहले से परिभाषित करके रखें, जैसे कि सेवानिवृत्ति (रिटायरमेंट), जमीन-जायदाद खरीदना, बच्चों की पढ़ाई-लिखाई, छुट्टियाँ मनाने पर खर्च वगैरह। और इन लक्ष्यों के साथ आपको यह भी समझना होगा कि आप उन्हें किस समयावधि में पाना चाहते हैं, या पाने की जरूरत होगी।

जोखिम को समझने के साधन : अलग-अलग म्यूचुअल फंड योजनाओं के साथ अलग-अलग जोखिम रेटिंग जुड़ी होती है। यह जोखिम रेटिंग कम जोखिम से लेकर बहुत ऊँचा जोखिम तक की हो सकती है। जोखिम के प्रति सहनशीलता किसी व्यक्ति की इस क्षमता पर निर्भर करती है कि वह बाजार में आने वाले उतार-चढ़ावों को पार करने में कितना सक्षम है।

विविधीकरण (डाइवर्सिफिकेशन) : समझदारी की बात यही है कि आप अपने निवेशकों को कई अलग-अलग तरह के संपत्ति वर्गों (एसेट क्लास, जैसे कि इक्विटी, डेट, सोना-चाँदी, जमीन-जायदाद वगैरह), में विविधीकृत करके, यानी बाँट करके रखें, जिससे आपके निवेश पर जोखिम भी बँटा हुआ रहे।

व्यवस्थित निवेश योजना (एसआईपी) : चक्रवृद्धि की शक्ति (पावर ऑफ कंपाउंडिंग) को विश्व का चौथा आश्चर्य कहा गया है। इसके अनुसार, आप जितनी जल्दी निवेश करना आरंभ करेंगे, आपके निवेशों को बढ़ने के लिए उतना ही अधिक समय मिलेगा।

लंबी अवधि के लिए निवेश करें : म्यूचुअल फंड में निवेश लंबी अवधि के लिए ही करना चाहिए। यह निवेश अपने लक्ष्य और उसे पाने की योजना के अनुसार करना चाहिए।

अपने निवेशों की समीक्षा करें : एक म्यूचुअल फंड पोर्टफोलिओ की समय-समय पर समीक्षा करते रहना चाहिए, जिससे आप देख सकें कि यह अभी भी आपके लक्ष्यों और जोखिम सहने की क्षमता के अनुरूप है या नहीं। यदि ऐसा नहीं हो, तो इसमें दोबारा संतुलन बिठाने की जरूरत होगी।

विशेषज्ञ की सलाह : किसी योग्य वित्तीय सलाहकार की सलाह लेनी चाहिए, जो आपकी आवश्यकताओं के आधार पर आपके लिए एक योजना का खाका बनाये।

अद्यतन जानकारियाँ लेते रहें : वित्तीय बाजारों में निवेश करते समय यह महत्वपूर्ण है कि आप आर्थिक घटनाओं, बाजार के रुझानों आदि के बारे में नवीनतम समाचारों से परिचित रहें।

ये सब बातें समझने और करने के बाद भी यह याद रखें कि म्यूचुअल फंड योजनाओं से कितना प्रतिफल (रिटर्न) मिलेगा, इसकी कोई गारंटी नहीं होती है। हालाँकि, लंबी अवधि के लिए निवेश करते रहने पर वित्तीय स्वतंत्रता पाने की संभावनाएँ बढ़ जाती हैं।

विविधीकृत पोर्टफोलिओ में रखें कमोडिटी में निवेश

किसी भी व्यक्ति के लिए वित्तीय स्वतंत्रता का अर्थ कमाने, बचाने, निवेश करने, खर्च करने, दान और वसीयत करने की आजादी है। मतलब यह कि किसी शख्स के पास इतनी बचत, निवेश, नियमित या निष्क्रिय (पैसिव) आय, शून्य ऋण, खाली समय और हाथ में इतनी नकदी हो कि वह वैसा जीवनयापन कर सके, जिसका वह अभ्यस्त है या जो उसकी चाहत है। हालाँकि इसका मतलब यह नहीं है कि जो व्यक्ति वित्तीय रूप से स्वतंत्र है, वह समृद्ध भी होगा।

वित्तीय स्वतंत्रता का तात्पर्य अपनी जरूरतों और चाहतों का संतुलन अपनी आय एवं निवेश के साथ बिठाने से है। यह क्रमशः चलने वाली प्रक्रिया है। इसके लिए योजना बनाने, उस पर टिके रहने, प्रतिबद्धता, धैर्य और गंभीरता रखने की जरूरत होती है, ताकि हम वांछित स्थिरता और आराम के साथ तनावमुक्त जीवन जी सकें।

वित्तीय स्वतंत्रता ऐसे लोगों का लक्ष्य होती है, जो काम और आय की चिंता किये बिना बेफिक्र होकर जल्दी सेवानिवृत्त होना चाहते हैं या अपना कोई शौक पूरा करने के लिए समय निकालना चाहते हैं या पूरी दुनिया घूमना चाहते हैं। वहीं अपना उद्यम स्थापित करने के लिए बैंक से कर्ज लेने वाले किसी छोटे उद्यमी के लिए इसका अर्थ कर्ज की किस्तें देने से आजादी हो सकता है।

एक महानगर में अपनी जिंदगी का आधा सफर तय कर चुके किसी प्रवक्ता (लेक्चरर) के लिए वित्तीय स्वतंत्रता का मतलब यह सुनिश्चित करना हो सकता है कि उसके बच्चों का भविष्य सुरक्षित है, उसका अपना घर है, पर्याप्त बीमा है और पेंशन मिलने से पहले उनके सभी कर्ज चुकता हो चुके हैं। वहीं, एक किसान के लिए वित्तीय स्वतंत्रता का मतलब है फसल एवं कटाई के बाद ऋण के चक्र से बाहर निकलना और अपनी खेती से एक अच्छा लाभ कमा सकना।

एक मध्यमवर्गीय गृहिणी के लिए इसका मतलब है मासिक बजट को इस तरह से संतुलित करना कि उसके पास कुछ अतिरिक्त रकम बच जाये। एक महानगर में रहने वाले गरीब डिलीवरी बॉय या सब्जी बेचने वाले के लिए वित्तीय स्वतंत्रता की शुरुआत हो सकती है नियमित और सुनिश्चित आय का रास्ता मिलने से।

ज्यादातर भारतीय परिवार वित्तीय आजादी से इसलिए वंचित रहते हैं, क्योंकि वे सिर्फ पुरुष सदस्यों की आय पर निर्भर रहते हैं और महिलाएँ बाहर काम नहीं करती हैं। चीन और अमेरिका

अरुण रास्ते
एमडी एवं सीईओ, एनसीडीईएक्स

में 15 साल से अधिक उम्र की महिलाओं में से 60% के मुकाबले भारत में 25% महिलाएँ ही कामगार आबादी का हिस्सा हैं। जिन परिवारों में महिलाएँ भी कमाती हैं, वे वित्तीय लक्ष्यों के साथ वित्तीय स्वतंत्रता भी पाने में सक्षम होते हैं। इनमें महानगरों में रहने वाले ऐसे दंपत्ति भी शामिल हैं, जिनकी दोहरी आय है और बच्चे नहीं हैं और वे विलासितापूर्ण अपार्टमेंट खरीद सकते हैं, या फिर अमूल और नंदिनी जैसे विशालकाय डेयरी खड़े करने वाली ग्रामीण गौपालक महिलाएँ भी शामिल हैं, जिन्होंने नियमित आय अर्जित करने के साथ ही वित्तीय स्वतंत्रता भी हासिल की है।

ऐसे प्रत्येक मामले में वित्तीय स्वतंत्रता अपनी घरेलू वित्तीय स्थिति के प्रति एक व्यापक दृष्टिकोण का नतीजा है। नियमित आय, निवेश और बचत के अलावा बजट बनाना भी वित्तीय स्वतंत्रता का एक अहम हिस्सा है। इसका मतलब है हर तरह के खर्च के लिए पहले से उचित आवंटन करना, फिर चाहे वह पहले से सोचा हुआ खर्च हो या अचानक आया खर्च, छोटी अवधि का हो या लंबी अवधि का और अपने लिए हो या घर में सबके लिए हो। इसके लिए बीमा के माध्यम से व्यक्तिगत जोखिम का प्रबंधन करने की भी जरूरत होती है।

वित्तीय स्वतंत्रता का एक बड़ा पक्ष है निष्क्रिय आय अर्जित करने की क्षमता। तरलता (लिक्विडिटी), सुरक्षा, नियमित आय और निवेश मूल्य में वृद्धि जैसी विभिन्न जरूरतों को पूरा करने वाले विविध संपत्ति वर्गों (एसेट क्लास) में निवेश के जरिये यह क्षमता पायी जा सकती है। परंपरागत रूप से भारतीय अपनी बचत का निवेश नियत आय (फिक्स्ड इन्कम), सोना/चाँदी और जमीन-जायदाद में करते हैं। अब वे स्वर्ण बॉण्ड या सरकारी बॉण्ड जैसे दूसरे संपत्ति वर्गों में निवेश के बारे में भी सोचने लगे हैं।

कोरोना काल में खुदरा निवेशक शेयर बाजार की ओर भी उमड़े, क्योंकि बहुतों ने शेयरों में निवेश को मुश्किल समय में अपनी बचत को बढ़ाने या अतिरिक्त आय बनाने के रूप में देखा। कोरोना से पहले जहाँ चार करोड़ भारतीय डीमैट खाताधारक थे, वहीं लॉकडाउन के दौरान खाली समय और सस्ते मोबाइल ऐप्लिकेशन की उपलब्धता से अगस्त 2022 में यह संख्या बढ़ कर 10 करोड़ हो गयी।

रक्षात्मक संपत्ति के रूप में आभूषणों को छोड़ दें, तो कमोडिटी अब भी एक संपत्ति वर्ग के रूप में लोकप्रिय नहीं है। सोना, चाँदी, कच्चा तेल या कृषि उत्पादों जैसी कमोडिटी का शेयरों और बॉण्डों जैसी वित्तीय संपत्तियों से सह-संबंध कम होता है। इसके चलते, एक विविधीकृत पोर्टफोलिओ में कमोडिटी निवेश महँगाई से बचाव करने के साथ ही अच्छा प्रतिफल (रिटर्न) भी दे सकते हैं।

परंपरागत सोच यह है कि कमोडिटी से शेयरों जैसा प्रतिफल नहीं मिल सकता है, पर हाल के उदाहरण इसे चुनौती देते हैं। मुंबई में जीरे का भाव जुलाई 2022 में 250 रुपये प्रति किलो था। यह एक साल में 700 रुपये प्रति किलो के शिखर पर पहुँच गया, जो 280% प्रतिफल है।

कमोडिटी में काफी उतार-चढ़ाव हो सकते हैं। इनके भाव युद्ध जैसे भूराजनीतिक हालात, अल नीनो जैसी मौसमी स्थितियों, भंडारण, सरकार की आयात/निर्यात नीति और शुल्कों एवं करों में अचानक बदलाव आदि से प्रभावित हो सकते हैं। स्वर्ण आभूषण जैसी भौतिक कमोडिटी में तरलता (लिक्विडिटी) की कमी या अनुमान से कम प्रतिफल मिलने की आशंका हो सकती है। कमोडिटी में निवेश के लिए कौशल के साथ कमोडिटी फ्यूचर्स, ईटीएफ या कमोडिटी केंद्रित म्यूचुअल फंड जैसे उपकरणों के लाभ को जानना भी जरूरी है। वित्तीय स्वतंत्रता के लिए लालच से बच कर सतर्कता से जोखिम का आकलन जरूरी है। इक्विटी, बॉन्ड, रियल एस्टेट, सावधि जमा (एफडी) और नकद जैसे विभिन्न संपत्ति वर्गों में विविधता रखते हुए वित्तीय स्वतंत्रता को बेहतर तरीके से पाया जा सकता है।

संपदा सृजन से ही मिलेगी वित्तीय स्वतंत्रता

स्वतंत्रता का अर्थ है कि आप जो कुछ भी करना चाहते हैं, उसे करने में सक्षम होना। और, वित्तीय स्वतंत्रता का अर्थ है अपनी इच्छाओं को पूरा कर पाना। हमारी इच्छाओं की सूची तो कभी खत्म नहीं होती। कभी न ख़त्म होने वाली इच्छा-सूची की बातों को पूरा करने में सक्षम होने के लिए आपको संपदा सृजन करना होगा, ताकि आपको कभी भी पर्याप्त धन की कमी के बारे में चिंता न करनी पड़े। हमें आपकी मेहनत की कमाई का निवेश करके उसे आपके जीवन में कमाने वाला साझेदार बनाना है।

डी. के. अग्रवाल
सीएमडी, एसएमसी कैपिटल्स

हम केवल निवेश करके संपदा सृजन कर सकते हैं। अन्य कहीं हम जो कमाते हैं, वह हमारे समय की कीमत होती है। हमें अपनी मेहनत से कमाये हुए पैसे को नियमित निवेश के जरिये काम पर लगाना है। वित्तीय स्वतंत्रता पाने का मंत्र यह है कि जल्दी निवेश शुरू करें और लंबे समय तक करें। सबसे पहले स्वयं को भुगतान करें – पर्याप्त बचत करें जिससे आपकी निवेश यात्रा शुरू हो। अपने वित्तीय लक्ष्य तय करें, जिससे आपको पता हो कि आप क्या चाहते हैं और आप पर्याप्त बचत एवं निवेश करके उन लक्ष्यों तक पहुँच सकें। वित्तीय स्वतंत्रता पाने के लिए आपको अपने पैसों का मोल समझना होगा, अपने संसाधनों से थोड़े कम स्तर पर जीवन जीना होगा, जितना कमाते हैं उससे कम खर्च करना होगा। आपको बचत की मानसिकता विकसित करने की आवश्यकता है।

अब एक उदाहरण देखते हैं कि कैसे छोटी बचतें एक चमत्कार कर सकती हैं। अगर आप 20 साल के युवा हैं, कॉलेज में पढ़ते हैं, कुछ पॉकेट मनी मिलती है। क्या आप उसमें से हर दिन 20 रुपये बचा सकते हैं? जरूर, यह कोई बड़ी बात नहीं होगी। बचत के लिए कमाने की शुरुआत करना जरूरी नहीं है। बचत एक इरादा और अनुशासन है। आप कुछ दूरी के लिए रिक्शा लेने के बदले पैदल चल कर, या किसी दिन कोक की बोतल न लेकर भी 20 रुपये बचा सकते हैं। हर दिन 20 रुपये बचाने से आप एक महीने में 600 रुपये बचा सकेंगे और इससे आप एक व्यवस्थित निवेश योजना (एसआईपी) शुरू कर सकते हैं।

अब देखते हैं कि 600 रुपये महीने की एसआईपी अगर ऐसे फंड में है जिस पर आपको सालाना 15% लाभ (रिटर्न) मिले, तो यह आपके लिए क्या करेगा? यदि 15% सालाना रिटर्न पर आप 40 वर्षों तक (अभी आप 20 वर्ष के हैं, और 60 वर्ष में रिटायर होंगे) हर महीने 600 रुपये का एसआईपी निवेश करें, तो 40 वर्ष बाद आपके पास 1.86 करोड़ रुपये से कुछ अधिक की पूँजी इकट्ठा हो जायेगी। यह चमत्कार ही है, चक्रवृद्धि (कंपाउंडिंग) का चमत्कार!

हर दिन 20 रुपये बचा कर 600 रुपये महीने की एसआईपी शुरू करके आप इतनी बड़ी संपदा जुटा सकते हैं, जो आपके रिटायर होने के बाद की जरूरतों को पूरा करके आपकी वित्तीय चिंताएँ खत्म करने के लिए पर्याप्त होगी। आप युवावस्था में बिना पैसों के रह सकते हैं, पर बुढ़ापे में नहीं। अब हम देखते हैं कि 20 साल की उम्र से हर दिन 20 रुपये की बचत का निवेश करने से आपने 60 वर्ष की उम्र पूरी होने पर जो 1.86 करोड़ रुपये की पूँजी एकत्र की, वह कैसे आपके रिटायर होने के बाद के जीवन का ख्याल रख सकती है जब आप कमा नहीं रहे होंगे।

मान लें कि आप इस 1.86 करोड़ रुपये की पूँजी का एकमुश्त निवेश ऐसी किसी पेंशन योजना या (एन्युटी विदड्रॉअल प्लान) में करते हैं, जिस पर प्रतिफल (रिटर्न) की दर 15% वार्षिक हो। इस विदड्रॉअल प्लान या निकासी योजना की अवधि 20 साल रखते हैं, यानी आपकी उम्र 80 वर्ष हो जाने तक। यदि हम यह तय करें कि योजना के अंत में निवेश का भावी मूल्य (फ्यूचर वैल्यू) शून्य हो जायेगा, और आपको हर महीने की पहली तारीख को इस निवेश में से मासिक खर्च के पैसे (पेंशन) अपने हाथ में चाहिए, तो हर महीने कितनी राशि मिलेगी? सारी चीजें अगर ऊपर बताये अनुसार हों, तो आपको हर महीने 2,42,024 रुपये मिलेंगे। यानी वित्तीय स्वतंत्रता की आपकी इच्छा पूरी हुई।

अब आप यह पुरानी कहावत मानेंगे कि बूँद-बूँद से सागर भरता है। इसलिए अपनी 'बूँद' का योगदान करना आरंभ करें, जितनी संभव हो उतनी बचत करें और उससे नियमित निवेश शुरू करें, जिससे आप अपना सागर बनता देख सकें। बाजार में कोई विशेषज्ञ नहीं होता है, आप विशेषज्ञ तभी होते हैं जब बाजार आपको एक विशेषज्ञ होने देता है। बाजार में निवेश का सही समय चुन सकना (टाइमिंग) एक कोरी कल्पना है। इसलिए सबसे अच्छा तरीका यह है कि नियमित रूप से निवेश करते हुए हर समय बाजार में निवेशित रहें, जिससे औसत लागत (रूपी कॉस्ट एवरेजिंग) का लाभ मिले। और इसके लिए एसआईपी शुरू करने से बेहतर कोई तरीका नहीं है। चक्रवृद्धि (कंपाउंडिंग) की शक्ति को अपने पक्ष में काम करते हुए देखने के लिए कम उम्र से और लंबे समय तक फंड में एसआईपी निवेश करना शुरू करें।

याद रखें कि वित्तीय स्वतंत्रता पाने के लिए आपको संपदा सृजन करना होगा, संपदा सृजन के लिए आपको नियमित रूप से निवेश शुरू करना होगा, निवेश करने के लिए आपको पैसे का मोल समझना होगा, पैसे का मोल समझने पर आपको बचत करने के कई कारण मिलेंगे। वित्तीय स्वतंत्रता प्राप्त करने की दिशा में अपनी यात्रा अभी शुरू करें।

पर्याप्त बचत के अलावा कोई अन्य तरीका नहीं

हम सभी वित्तीय स्वतंत्रता चाहते हैं, पर हममें से कुछ ही लोग इसे पाने में सफल होते हैं। क्या इसे पाने का कोई गुप्त रहस्य है?

बहुत-से लोग कई तरह की वित्तीय सलाह माँगते हैं। कभी-कभी यह सलाह पैसा लगाने (इनपुट) के बारे में होती है। जैसे कि सलाह माँगने वाले के पास कुछ रुपये हैं तो वह पूछता है कि उसे उन पैसों का क्या करना चाहिए। कभी-कभी यह परिणाम (आउटपुट) के बारे में होता है। जैसे कि 5 साल में किसी को एक तय राशि की जरूरत होगी। उस समय इतना पैसा मिल जाये, इसके लिए क्या करना चाहिए? कभी-कभी ये दोनों स्थितियाँ एक साथ मिल जाती हैं। ये सब सवाल ठीक हैं और इनका समाधान चुनने के काफी सुस्थापित एवं समझदार तरीके उपलब्ध हैं।

हालाँकि एक सलाह ऐसी भी माँगी जाती है जिसका जवाब देना वास्तव में कठिन है, और वह है 'वित्तीय स्वतंत्रता'। यह एक अस्पष्ट शब्द लग सकता है, लेकिन वास्तव में अलग-अलग लोगों के लिए लगभग एक समान चीज का प्रतीक है, और वह चीज है पैसे के बारे में कभी भी चिंता नहीं होना।

यह सपना लगभग हर किसी का है। पैसे कमाने की रोजमर्रा की भाग-दौड़ हमारे जीवन पर हावी रहती है। इस स्थिति से स्थायी राहत ही वह आजादी है, जो हममें से ज्यादातर लोग चाहते हैं। निःसंदेह, वित्तीय स्वतंत्रता के कई स्तर हैं और उनमें से सबसे ऊपर का स्तर है कि आगे जीवन भर पैसा कमाने के लिए काम करने की जरूरत न रहे।

बेशक, ऐसे बहुत-से लोग हैं, जिन्हें काम नहीं करना पड़ता। कुछ ऐसे लोग हैं, जिन्हें विरासत में काफी कुछ मिला है। और, कुछ ऐसे भी हैं, जिनका बोझ उठाने के लिए हमारे जैसे करदाता जीवन भर प्रतिबद्ध हैं। लेकिन हममें से कभी कोई यदि उस स्तर तक पहुँचता भी है, तो वहाँ तक पहुँचने में ही अधिकतर लोगों का पूरा काम-काजी जीवन खप जाता है।

हालाँकि एक सरल तथ्य यह है कि अगर हम थोड़ी-सी योजना के साथ बचत और निवेश करते हैं, तो जीवन में इस चरम स्तर से थोड़ी कम वित्तीय स्वतंत्रता जल्दी ही पायी जा सकती है। वह भी लगभग उतनी ही अच्छी चीज होगी। वेतनभोगियों के लिए एक-दो दशक पहले के मुकाबले अब जीवन की शुरुआत में

धीरेंद्र कुमार
सीईओ, वैल्यू रिसर्च

ही थोड़ी-बहुत वित्तीय स्वतंत्रता प्राप्त कर लेना अधिक महत्वपूर्ण हो गया है। भारत स्पष्ट रूप से नौकरियों के संकट से गुजर रहा है। शहरी मध्यमवर्ग में ऐसे बहुत-से लोग हैं, जिनकी नौकरी अचानक चली गयी। वहीं युवाओं को अपनी पहली नौकरी ढूँढने में कठिनाई हो रही है या उन्हें निम्न-गुणवत्ता वाले रोजगार से संतोष करना पड़ रहा है। मध्य स्तर के कर्मचारियों को निकाला जा रहा है, क्योंकि नियोक्ता कंपनियाँ सोचती हैं कि उनके बदले कम वेतन वाले लोगों से काम चलाया जा सकता है।

व्यक्तिगत वित्त (पर्सनल फाइनेंस) के प्रति आत्मविश्वास को लेकर यह व्यापक संकट कुछ साल पहले की स्थितियों से अलग है। तब अधिकांश वेतनभोगी अपनी नौकरी के प्रति आश्वस्त थे और उन्हें अपनी वर्तमान नौकरी या नयी बेहतर नौकरी में समय-समय पर वेतन बढ़ोतरी का भरोसा था। हो सकता है कि उन्हें वास्तविक अर्थ में वित्तीय स्वतंत्रता न मिली हो, लेकिन प्रभावी रूप से उन्हें ऐसा महसूस होता था। हकीकत में कोई नहीं कह सकता कि अब रोजगार की स्थिति कब बेहतर होगी। हालाँकि हममें से जिन लोगों ने पैसे, बचत और व्यक्तिगत वित्त के प्रति अपना नजरिया बदल लिया, वे अधिक खुश होंगे और इस नयी और अनिश्चित दुनिया से अधिक आसानी से निपटने में सक्षम होंगे।

नौकरी से संबंधित कई समस्याओं के इस दौर में केवल वही लोग निश्चिंत और तनावमुक्त हैं, जिनके पास पर्याप्त बचत है। दुर्भाग्य से, 20 वर्ष से 30 वर्ष की उम्र के बीच के युवा वेतनभोगियों में बचत करने वालों का अनुपात काफी कम है। असल में युवा पीढ़ी में लगभग सारे लोग बचत करने के बजाय नकारात्मक बचत (यानी कमाई से अधिक खर्च) में जुटे हुए हैं। जैसे ही वे कमाना शुरू करते हैं, कुछ ईएमआई वे अपने सिर पर ले लेते हैं। वे नहीं समझते कि ऐसा करना भविष्य की बचत को आज ही खर्च कर देना है।

यह वही घिसी-पिटी सलाह लगती है, जो बुजुर्ग लोग हमेशा युवाओं को देते हैं। लेकिन यही सच है। चाहे रोजगार का माहौल बेहतर हो या नहीं हो, अगर कोई अपने करियर की शुरुआत में जितना संभव हो उतनी बचत करे तो भविष्य में वह काफी खुश रह सकता है। आज जिनके पास एक-दो साल के खर्च (ईएमआई सहित) के लायक भी बचत है, वे अपने करियर को काफी निश्चिंत महसूस करते हैं। इतना ही नहीं, मैंने देखा है कि जो लोग इस तरह आर्थिक रूप से सुरक्षित होते हैं, वे कोई जोखिम नहीं ले सकने वाले लोगों की तुलना में अपने रोजगार को लेकर मोल-भाव करने में भी अधिक सक्षम होते हैं।

यह स्थिति वित्तीय स्वतंत्रता के उतनी ही करीब है, जितनी हममें से अधिकतर लोग प्राप्त कर सकते हैं। यह बहुत जानी हुई बात लगती है, पर वास्तव में पर्याप्त बचत होने के लिए पहला कदम बचत करना ही है और दूसरा कदम पर्याप्त बचत करना है। दुर्भाग्य से, हममें से कई लोग कमाई शुरू करने के बाद भी कई वर्षों तक बचत की शुरुआत नहीं कर पाते। हम चारों ओर बहुत ललचाने वाली उपभोक्ता संस्कृति से घिरे रहते हैं, जिसके चलते बचत शुरू करना आसान नहीं है। मगर वित्तीय स्वतंत्रता हासिल करने का कोई अन्य तरीका है ही नहीं।

अभी सोचें रिटायर होने के बाद की बात

हमने हाल ही में अपना 77वाँ स्वाधीनता दिवस मनाया है। ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ लंबी लड़ाई के बाद मिली आजादी का मूल्य हम अच्छे से समझते हैं। इसके विपरीत, हम एक और तरह की आजादी के बारे में ज्यादा नहीं सोचते हैं – वह है वित्तीय स्वतंत्रता। अक्सर हमें इसकी अहमियत किसी वित्तीय संकट या किसी खास वित्तीय लक्ष्य को पाने में असमर्थ रहने पर ही समझ में आती है।

अपने वित्तीय हालात और जीवन पर नियंत्रण के भाव को वित्तीय स्वतंत्रता कह सकते हैं। ज्यादातर भारतीय परिवार जिन कारणों से अपने आर्थिक लक्ष्य को पूरा करने में चूकते हैं, उनमें से एक है उनका बचत और निवेश की अहमियत को न समझ पाना।

भविष्य की तैयारी जरूरी

दुनिया में सर्वाधिक आबादी वाले देशों की सूची में भारत ने हाल ही में चीन को पीछे छोड़ा है। हालाँकि भारत की आबादी अपेक्षाकृत युवा है (चीन की 38 वर्ष औसत उम्र के मुकाबले 28 वर्ष) और इसमें गिरावट भी वर्ष 2050 के बाद ही आनी शुरू होगी। पर आज सही दिशा में कदम उठा कर हम भविष्य में जीविका के साधनों के बिना बुजुर्ग होती बड़ी आबादी की संभावना से बच सकते हैं। हमारे देश में आयु प्रत्याशा 1950 में 35 वर्ष से दोगुनी होकर अब 70 वर्ष है, जो आगे और बढ़ने की उम्मीद है। सुनने में अजीब लग सकता है, पर इसके चलते अलग तरह की चुनौतियाँ सामने आ सकती हैं।

सेवानिवृत्ति के लिए वित्तीय योजना

पिछले कुछ वर्षों में भारत ने सामाजिक सुरक्षा के क्षेत्र में बेहतरीन काम किया है। पर सामाजिक सुरक्षा लाभों के अभाव के बीच अस्थायी श्रमिकों का प्रतिशत बढ़ने से वित्तीय नियोजन (फाइनेंशियल प्लानिंग) की जरूरत शिद्दत से महसूस होती है। फलस्वरूप अक्सर नजरअंदाज किये जाने वाले सेवानिवृत्ति (रिटायरमेंट) के वित्तीय लक्ष्य पर दारोमदार बढ़ जाता है। कई कारणों से सेवानिवृत्ति की योजना अब तक का सबसे अहम वित्तीय लक्ष्य है।

अधिकांश लोगों के लिए सेवानिवृत्ति निश्चित है। दूसरे, चिकित्सा में उन्नति और जीवन प्रत्याशा बढ़ने से कोई व्यक्ति सेवानिवृत्ति के बाद पहले

नवनीत मुनोट
एमडी एवं सीईओ, एचडीएफसी म्यूचुअल फंड

की तुलना में काफी अधिक वर्षों तक जीवित रह सकता है। हालाँकि रिटायरमेंट के बाद के ये वर्ष कितने होंगे, यह जाना नहीं जा सकता। इससे सेवानिवृत्ति के बाद का वित्तीय नियोजन महत्वपूर्ण, लेकिन चुनौती भरा हो जाता है। सेवानिवृत्ति को सुदूर भविष्य मान कर ज्यादातर लोग इसकी योजना बनानी तब शुरू करते हैं, जब बहुत देर हो चुकी होती है। जो इसकी योजना बनाते भी हैं, वे लंबी अवधि में मूल्य-वृद्धि और जीवनशैली में बदलाव, दोनों लिहाज से महँगाई के प्रभाव का सही आकलन नहीं कर पाते हैं।

यूरोपीय देशों में से यूके, फ्रांस आदि देश भी इस मोर्चे पर चुनौतियों का सामना कर रहे हैं। सेवानिवृत्ति की अपर्याप्त योजना की चुनौतियों से ऐसे विकसित देश भी नहीं बचे हैं, जिनका पूँजी बाजार में निवेश का लंबा इतिहास रहा है।

इक्विटी से दीर्घकालिक धन सृजन

भारत में विकसित देशों के जैसे सेवानिवृत्ति लाभ नहीं होने और सेवानिवृत्ति की उम्र सबसे कम होने को ध्यान में रखें, तो सेवानिवृत्ति के लिए पर्याप्त निधि या कोष जमा करने का सबसे उपयुक्त रास्ता इक्विटी जैसी जोखिम भरी संपत्तियों में निवेश ही है, बशर्ते यह काम लंबी अवधि के निवेश के रूप में किया जाये। लंबी अवधि में महँगाई को मात देने वाला प्रतिफल (रिटर्न) पाने के लिए इक्विटी को एक प्रमुख संपत्ति वर्ग (एसेट क्लास) माना जाता है। इक्विटी, खास कर इक्विटी म्यूचुअल फंड में पैसा लगाना निवेशकों के लिए ज्यादा नहीं भी तो 15-20 साल में सेवानिवृत्ति कोष बनाने का एक उपयुक्त तरीका हो सकता है।

घरेलू बचत में बदलाव की शुरुआत

हाल में हमने वित्तीय बचतों (फाइनेंशियल सेविंग्स) के मिश्रण में बड़ा बदलाव देखा है। बहुत-से निवेशक सावधि जमा (एफडी) जैसे बचत के पारंपरिक साधनों से आगे निकले हैं। डीमैट खातों और एसआईपी की संख्या में वृद्धि इसकी गवाही देते हैं। पर अधिकांश लोगों के लिए इक्विटी (शेयरों) में प्रत्यक्ष निवेश सबसे अच्छा विकल्प नहीं है। सेबी के एक अध्ययन से पता चला है कि इक्विटी की एफऐंडओ श्रेणी में 89% व्यक्तिगत ट्रेडरों को घाटा सहना पड़ा। वित्त-वर्ष 2022 के दौरान ऐसे हर ट्रेडर को औसतन 1.11 लाख रुपये का घाटा हुआ। इक्विटी में निवेश का अधिक समझदारी वाला रास्ता यह है कि म्यूचुअल फंडों के विस्तृत विकल्पों को दीर्घकालिक निवेश के नजरिये से चुना जाये।

बचत को निवेश की तरफ मोड़ना

बचत और निवेश के बीच अंतर को अक्सर नजरअंदाज किया जाता है। मतलब यह है कि भारतीय परिवारों की धन सृजन की यात्रा अभी तक अपनी वास्तविक क्षमताओं तक नहीं पहुँची है। इसे ध्यान में रख कर एचडीएफसी म्यूचुअल फंड ने अगस्त 2021 में भारत के 75वें स्वतंत्रता दिवस पर 'बर्नी से आजादी' विषय पर निवेशक शिक्षा अभियान की शुरुआत की थी। इस अभियान में यह बात की गयी थी कि भारतीय पारंपरिक रूप से किस तरह बर्नी, लॉकर वगैरह में अपनी बचत रखते आये हैं, और अब क्यों अपने पैसों को म्यूचुअल फंड जैसे माध्यमों से बढ़ने देना जरूरी है।

इसका मकसद यह था कि लोग अपनी बचत को निवेश के उत्पादक विकल्पों में लगा कर लंबी अवधि में धन सृजन कर सकने का महत्व समझें। जन-साधारण के बीच वित्तीय जागरूकता लाने के लिए अभी बहुत कुछ करना होगा। पूरी तरह सूचित (इन्फॉर्म्ड) निवेशक ही वित्तीय स्वतंत्रता के लिए लंबी, लेकिन फलदायी यात्रा में वित्तीय बाजारों के उतार-चढ़ावों के बीच भी अपने वित्तीय लक्ष्यों के प्रति अडिग रह सकता है।

सफलतापूर्वक धन सृजन के तीन स्तंभ

किसी भी पीढ़ी में चंद ही व्यक्ति पर्याप्त धन (वेल्थ) अर्जित कर पाते हैं। जरूरी नहीं कि ये व्यक्ति असाधारण रूप से प्रतिभाशाली हों। इसके इतर, इन लोगों को धनी बनाने वाली जो विशेषताएँ हैं, वे हैं व्यावहारिक बुद्धि, भावनात्मक बुद्धिमत्ता (इमोशनल कोशंट या ईक्यू) और निवेश की विवेकपूर्ण रणनीति, जिसमें शामिल है व्यवस्थित रूप से निवेश करना, संपत्ति आवंटन (एसेट एलोकेशन), आम राय से विपरीत सोच और अनुशासन। सफलतापूर्वक धन सृजन के तीन स्तंभ इस प्रकार हैं :

स्तंभ 1 : निरंतर निवेश

समझने में आसानी के लिए एक वेतनभोगी व्यक्ति को देखें। उसे हर महीने एक तय वेतन मिलता है। उसे बस अपने वेतन का एक निश्चित हिस्सा बचाना है और म्यूचुअल फंड में उसका निवेश करना है। निर्बाध रूप से ऐसा करने के लिए व्यवस्थित निवेश योजना (एसआईपी) की सुविधा उपलब्ध है। कोई व्यक्ति यदि हर कुछ महीनों पर घबराये बिना 10 साल या इससे अधिक समय तक ऐसा करे तो वह निश्चित रूप से धन सृजन देख सकता है। यह निवेश का प्रथम स्तंभ है, यानी व्यवस्थित रूप से निवेश करना।

इसलिए धन सृजन व्यक्ति की समझदारी यानी आईक्यू पर नहीं, उसकी व्यावहारिक बुद्धि और भावनात्मक समझ पर निर्भर करता है। इन दो बातों से उसे तर्कसंगत निर्णय लेने, अवसरों का लाभ उठाने और बाजार के उतार-चढ़ाव को सफलतापूर्वक पार करने में मदद मिलती है।

स्तंभ 2 : भावनात्मक समझ और संपत्ति आवंटन

भावनात्मक समझ (इमोशनल इंटेलिजेंस या ईआई) बाजार के उतार-चढ़ाव के बीच निवेशक को शांत और तर्कसंगत रहने में, डर या लालच के आवेग में फैसले न लेने में मदद करता है। बाजार में उतार-चढ़ाव तो होते ही रहेंगे, पर दीर्घकालिक निवेश छोटी अवधि में दिखने वाली अस्थिरता का सामना कर सकते हैं, इस बात को समझना ही सफल संपदा-निर्माण की आधारशिला है।

अब तक के इतिहास में शेयर बाजार ने तेजी-मंदी के कई चक्र देखे हैं। निवेशकों के लिए यह समझना जरूरी है कि बाजार अनिवार्य रूप से कभी विकास और कभी गिरावट की अवधि का

निमेश शाह
एमडी एवं सीईओ, आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल म्यूचुअल फंड

समय-समय पर अनुभव करेंगे। बाजार की इन चरम स्थितियों में निवेशकों का बर्ताव ही संपदा-निर्माण की क्षमता को तय करता है। समझदार निवेशक बाजार में गिरावट के समय का लाभ उठाते हैं, क्योंकि इतिहास गवाह है कि ऐसे दौर के बाद अर्थव्यवस्था में सुधार का समय शुरू होता है। इस तरह से ईआई दूसरे स्तंभ, यानी संपत्ति आवंटन का आधार बनाने में मदद करता है।

हर निवेशक अस्थिरता को नहीं सह पाता है। इसलिए बाजार की अस्थिरता से चिंतित निवेशकों को गतिशील संपत्ति आवंटन फंड (डीएएएफ) समाधान देता है। इसमें बाजार की परिस्थिति के अनुरूप निवेश को इक्विटी और डेट के बीच बदलते रहना शामिल है। जब बाजार ऊँचा हो तब इक्विटी में आवंटन कम करते हैं, वहीं जब बाजार का मूल्यांकन कम हो तब इक्विटी आवंटन बढ़ाया जाता है। यह दृष्टिकोण निवेशकों को बाजार में अवसरों का लाभ उठाने के साथ ही प्रभावी ढंग से जोखिम प्रबंधन का मौका देता है।

स्तंभ 3 : लक्ष्य पर नजर रखें

बहुत-से निवेशक अपने जीवन में कम जटिलता वाले वित्तीय फैसले लेना चाहेंगे। इसे देखते हुए आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल एएमसी ने 'फ्रीडम एसआईपी' का विकल्प पेश किया है। आसान भाषा में कहें, तो इस विकल्प में सिस्टेमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान (एसआईपी) और सिस्टेमैटिक विड्रॉअल प्लान (एसडब्लूपी) की खूबियों को एक साथ जोड़ा गया है। इसके तहत निवेशकों को आठ साल से लेकर 30 साल तक के दायरे में एक निश्चित अवधि के लिए स्रोत योजना (सोर्स स्कीम) में एसआईपी के माध्यम से नियमित निवेश करने का अवसर मिलता है।

जब एसआईपी का समय पूरा हो जाता है, तो उससे बनी निधि या पूँजी को लक्ष्य योजना में स्थानांतरित कर दिया जाता है। अब इस लक्ष्य योजना (टार्गेट स्कीम) से एक सिस्टेमैटिक विड्रॉअल प्लान शुरू किया जाता है, जिससे निरंतर एक निश्चित राशि प्राप्त होती रहे। यह दृष्टिकोण सेवानिवृत्ति के बाद वित्तीय स्वतंत्रता की चाह रखने वालों के लिए उचित है। इस तरह तीसरा स्तंभ बनता है - चरम अनुशासन का।

यहाँ एक निवेशक के पास एसआईपी की अवधि, स्रोत योजना एवं लक्ष्य योजना और एसडब्लूपी की राशि चुनने का पूरा विकल्प उपलब्ध होता है। अगर वे स्वयं एसडब्लूपी राशि का उल्लेख नहीं करते हैं, तो उन्हें एक डिफॉल्ट एसडब्लूपी राशि प्राप्त होगी, जो निवेशक की एसआईपी राशि और अवधि के आधार पर भिन्न हो सकती है। एसडब्लूपी को या तो दिसंबर 2099 तक या लक्ष्य योजना में यूनिटें उपलब्ध रहने में से जो भी पहले हो, उस समय तक चलाया जायेगा। इस व्यवस्था की सुंदरता यह है कि एसआईपी और एसडब्लूपी दोनों को एक अनुशासित और क्रमबद्ध तरीके से चलाया जाता है।

यह मानव प्रवृत्ति है कि लक्ष्य साफ होने पर ही वह अनुशासित रहता है। इसी चलते हम निवेशकों को सफल संपदा निर्माण के लिए लक्ष्य आधारित दृष्टिकोण अपनाने को प्रेरित करते हैं। निवेशकों को अपने वित्तीय लक्ष्यों की पहचान करनी चाहिए और उनके मुताबिक अपनी निवेश रणनीति बनानी चाहिए। प्रत्येक लक्ष्य के लिए अलग तरह के निवेश दृष्टिकोण, जोखिम सहिष्णुता और समयावधि की जरूरत हो सकती है।

आज तकनीक और डिजिटल मंच युवा पीढ़ी की प्राथमिकताओं को पूरा करते हुए निवेश को उनके लिए सुलभ और सुगम बनाते हैं। युवा निवेशकों को प्रोत्साहित करना और उन्हें जरूरी संसाधन एवं जानकारियाँ उपलब्ध कराना वित्तीय जागरूकता के लिहाज से जरूरी है। यह जरूरी है कि कंपाउंडिंग (चक्रवृद्धि) और जल्दी निवेश शुरू करने के दीर्घकालिक फायदे जानने पर जोर दिया जाये।

वित्तीय स्वतंत्रता पाने से रोकती हैं आपकी 3 गलतियाँ

अधिकतर जानकार आपको बतायेंगे कि व्यक्तिगत वित्त (पर्सनल फाइनेंस) काफी सरल है - आपको बस अच्छी कमाई करनी है, कम खर्च करना है और अधिक बचत करनी है। मौटे तौर पर यह इतना ही सरल है। अगर आप और विशिष्ट रूप से जानना भी चाहें, तो लगभग पाँच प्रमुख चीजें ही हैं, आपको आर्थिक रूप से सुदृढ़ होने के लिए आवश्यक हैं :

1. आपातकालीन कोष रखना
2. यदि परिवार में आप पर आश्रित सदस्य हैं तो एक सावधि जीवन बीमा (टर्म प्लान) लेना
3. पर्याप्त स्वास्थ्य बीमा कराना
4. सेवानिवृत्ति के लिए बचत करना
5. इन चीजों को व्यवहार में लाना

आप कहेंगे कि सैद्धांतिक रूप में तो सब कुछ आसान लगता है। यह बात सही है, लेकिन व्यक्तिगत वित्त के इन मूल सिद्धांतों पर अमल करना इतना जटिल भी नहीं है। अधिकतर लोग आगे बताये कुछ कारणों से अपने व्यक्तिगत वित्त का प्रबंधन करने में विफल रहते हैं :

1. बुनियादी वित्तीय साक्षरता की कमी

बुनियादी वित्तीय साक्षरता जीवन के लिए जरूरी है। चक्रवृद्धि (कंपाउंडिंग), विविधीकरण (डाइवर्सिफिकेशन) का महत्व और वित्तीय उत्पादों के बारे में आरंभिक जानकारी आदि बचत और निवेश के कुछ प्रमुख सिद्धांतों को समझ लेने से ही आप अपना वित्त-प्रबंधन आसानी से कर सकते हैं। पर अक्सर लोग दूसरों पर निर्भर हो जाते हैं या पैसा बनाने के छोटे रास्ते ढूँढ़ते हैं।

भले ही आप वित्तीय सलाह के लिए दूसरों पर भरोसा करें, मगर सलाह सही है या नहीं, इसे परखने के लिए आपको व्यक्तिगत वित्त की बुनियादी समझ होनी चाहिए। दूसरा फायदा यह है कि आपको कई तरह के स्पष्ट नुकसानों से बचने में मदद मिल सकती है, जैसे कि वित्तीय जालसाजियाँ, जो आजकल काफी हो रही हैं।

2. कमाई से पहले निवेश की सोचने की गलती

आप खुद से यह पूछें कि अपना वित्तीय हाल-चाल अच्छा रखने की कुंजी क्या है? यदि आपका जवाब है कई गुना पैसे बनाने वाले शेयर और सबसे अच्छे म्यूचुअल फंड चुनना, तो यह गलत जवाब है। अपने वित्त पर विचार करते समय शेयरों और बॉन्डों के बारे में सोचने से

पहले आपको यह समझना है कि आपकी सबसे बड़ी संपत्ति क्या है। आपकी सबसे बड़ी संपत्ति आपके पास मौजूद पैसा नहीं है, बल्कि वह है आपकी मानव पूँजी, यानी आप भविष्य में कितना कमाने की क्षमता रखते हैं। यदि आप पर्याप्त पैसा नहीं कमा पाते हैं, तो क्या आप उचित मात्रा में बचत और निवेश कर सकते हैं?

अच्छी कमाई कैसे की जा सकती है? इसका सीधा जवाब है कि एक अच्छी नौकरी पाकर या अपना व्यवसाय शुरू करके, जिसके लिए आपके पास अच्छे कौशल के साथ सही दृष्टिकोण होना चाहिए। यदि किसी में पैसा कमाने की क्षमता नहीं है तो दुनिया के सबसे अच्छे शेयर और फंड भी पैसा बनाने में उसकी मदद नहीं कर पायेंगे।

आपको अपनी कमाई और बचत की क्षमता के संबंध को समझना होगा। युवावस्था में आपकी मानव पूँजी अधिकतम होती है, आयु बढ़ने के साथ यह कम होने लगती है। इसलिए आपका लक्ष्य अपने कौशल में निखार लाकर और खुद को मूल्यवान बना कर अपनी मानव पूँजी को अधिक-से-अधिक करना होना चाहिए, जिससे आपको अच्छी कमाई में मदद मिलेगी।

3. खराब व्यवहार

आप भले ही पृथ्वी पर सबसे चतुर (स्मार्ट) हों और शानदार शेयरों को चुन सकते हों, लेकिन यदि आपका व्यवहार अच्छा नहीं है तो इन चीजों से कोई मदद नहीं मिलेगी। "सर्वोत्तम" निवेशों और उत्पादों को चुनना बहुत मुश्किल नहीं होता है। लेकिन ऐसा कर लेने के बाद भी अच्छे और बुरे समय में उनके साथ बने रहना कठिन होता है। यहाँ अच्छे व्यवहार का मतलब है दो सबसे शक्तिशाली मानवीय भावनाओं पर काबू पाना - भय और लालच। जब समय अच्छा चल रहा हो और अति-उत्साह दिखता हो, तो आपको याद रखना चाहिए कि अच्छा समय हमेशा नहीं रहता। वहीं निराशा के दौर में जब सब कुछ अंधकारमय दिखता है, तो खुद को यही याद दिलाना होगा कि बुरा समय भी हमेशा नहीं रहता।

आपके लिए क्या महत्वपूर्ण है और क्या नहीं है, इसके बीच संतुलन बनाना ही व्यक्तिगत वित्त (पर्सनल फाइनेंस) है। यह रॉकेट विज्ञान जैसा नहीं है, मगर बहुत आसान भी नहीं है। जीवन में स्वास्थ्य, धन (वेल्थ) और रिश्तों समेत ज्यादातर चीजों में अच्छा करने के लिए हमें एक ही बड़ी अस्वाभाविक चीज करनी होती है - वह है दीर्घकालिक सोचना। हम इंसान कल की सोचने में बड़े कमजोर हैं और इसीलिए आज में जीने को विवश होते हैं।

वित्तीय बाजारों के 400 वर्षों के इतिहास में बहुत चीजें बदली हैं, मगर इंसानों का व्यवहार वही है। लोग कुछ वही पुरानी गलतियाँ करते रहते हैं। पिछले प्रदर्शन और चमकीली चीजों के पीछे भागना, अवास्तविक उम्मीदें करना, लगातार सर्वोत्तम शेयर, फंड और रणनीतियाँ खोजना, पैसे को लेकर आवेग वाले व्यवहार पर नियंत्रण नहीं कर पाना, आज के खर्च और कल के लिए बचत के बीच संतुलन न बना पाना, "सबसे नयी" चीजें खरीदने के लिए कर्ज लेना, चीजों में लगातार छेड़छाड़ करते रहना और कुछ किये बिना नहीं रह पाना, दूसरे लोगों के विचारों और कामों से प्रभावित होना, और झुंड मानसिकता रखना और यह मान लेना कि बहुत सारे लोग जो कर रहे हैं वह सही ही होगा।

ये सभी ऐसी गलतियाँ हैं, जो लोग व्यक्तिगत वित्त के मामले में करते हैं। व्यक्तिगत वित्त दरअसल वित्त के बारे में कम और व्यक्तिगत के बारे में अधिक है। जो चीजें "व्यक्तिगत" के तहत आती हैं, उनमें से बुरा व्यवहार लोगों का सबसे बड़ा दुश्मन है।

यदि आप नहीं जानते कि कहाँ से शुरू किया जाये, तो जेरोधा वर्सिटी से बेहतर कोई जगह नहीं हो सकती। यह सबके लिए खुली एक शैक्षिक पहल है, जिसे हम पैसे के बारे में सीखने में लोगों की मदद करने के लिए चला रहे हैं।

अपनी शर्तों पर जीवन जीने की स्वतंत्रता

हम सभी का लक्ष्य वित्तीय स्वतंत्रता प्राप्त करना है, पर सबसे पहले हमें यह जानना होगा कि इसका क्या अर्थ है। वित्तीय स्वतंत्रता से आप अपनी शर्तों पर जीवन जी सकते हैं – इसमें यह शामिल है कि कोई कर्ज हो तो उसे निपटा लें और कई स्रोतों से आय मिलती रहे जिससे आप अपनी जीवनशैली को बनाये रख सकें।

जल्दी रिटायर होने का मतलब है कि आप कम उम्र में ही व्यवस्थित तरीके से बचत और निवेश करें। पिछले कुछ दशकों से भारत में सेवानिवृत्ति की पारंपरिक उम्र 60 वर्ष रही है। भारत में अधिकांश आबादी के लिए 60 वर्ष से पहले सेवानिवृत्त होना लगभग असंभव माना जाता है। इसके मुख्य कारणों में वित्तीय सलाह की कमी, महँगाई, जब तक स्वास्थ्य अनुमति दे तब तक अधिक कमाने की इच्छा और उच्च रखरखाव वाली जीवनशैली से समझौता न करना शामिल है। पर आगे बताये गये तरीके से अनुशासित दृष्टिकोण रख कर वित्तीय स्वतंत्रता प्राप्त करना संभव है।

1. वित्तीय लक्ष्य : आपातकालीन कोष अलग निकाल कर रखना, पहले से नियोजित खर्च, जैसे बच्चों की शिक्षा, मकान या कार खरीदना, लंबी छुट्टी आदि। साथ ही रिटायर होने के बाद आपके वार्षिक खर्च की राशि निष्क्रिय आय (पैसिव इन्कम) और निवेशों से आनी चाहिए, जिसमें आपको अपना समय न लगाना पड़े।

2. वित्तीय सलाहकार : व्यक्ति की वर्तमान आय और जोखिम उठाने की क्षमता के आधार पर चुने हुए उत्पादों में निवेश करके इन लक्ष्यों को पाने में मदद करके वित्तीय सलाहकार एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वित्तीय सलाहकार आपकी मदद इस तरह करते हैं कि आपका पैसा आपके लिए काम करे।

3. बीमा : स्वयं, जीवनसाथी, बच्चों और निर्भर माता-पिता के लिए किसी बड़ी स्वास्थ्य-संबंधी आपातस्थिति के लिए स्वास्थ्य बीमा जरूरी है। अप्रत्याशित परिस्थितियाँ वित्तीय स्थिरता पर बहुत असर डाल सकती हैं। कम उम्र में एक मध्यम बीमा सुरक्षा ले लेने से कम प्रीमियम सुनिश्चित होगा, जिसे बाद में आय बढ़ने और उच्च रखरखाव वाली जीवनशैली को सुरक्षित करने के लिए बढ़ाया जा सकता है।

4. जीवनशैली में संतुलन : अपनी जीवनशैली को संतुलित स्तर पर रखना चाहिए, जिससे निवेश कर सकने के लिए एक अच्छी राशि उपलब्ध रहे। अपने बजट के अंदर रहना सुनिश्चित करें। आज कम खर्चीला जीवन जीने से भविष्य के लिए संपदा और स्थिर आय प्रवाह बनाने में मदद मिल सकती है।

5. निवेश : पैसे बचाना महत्वपूर्ण है। लेकिन बचाये हुए पैसे आपके लिए काम करें, इसके लिए निवेश का कौशल जरूरी है। आज ही छोटी एसआईपी से निवेश करना शुरू करें।

जितनी जल्दी निवेश शुरू होगा, चक्रवृद्धि (कंपाउंडिंग) से आपके पैसे को तेजी से बढ़ने में मदद मिलेगी, क्योंकि इसके लिए काफी समय तक निवेश बनाये रखने की आवश्यकता होती है और दीर्घकालिक निवेश का अत्यधिक महत्व होता है। लक्ष्यों को प्राप्त करने और उसके साथ ही जोखिम को नियंत्रित रखने के लिए उचित ढंग से संपत्ति विविधीकरण (एसेट डाइवर्सिफिकेशन) की आवश्यकता है।

6. सेवानिवृत्ति की योजना : सेवानिवृत्ति के लिए जल्दी योजना बनाना शुरू करें। इसके दो भाग हैं - कोष का निर्माण और आय का नकद प्रवाह। निवेश से आपको कोष बनाने में मदद मिल सकती है। नकद प्रवाह इस बात पर निर्भर करेगा कि आप किस उम्र में सेवानिवृत्त होंगे और भविष्य को ध्यान में रखते हुए वर्तमान खर्चों को किस तरह सँभालेंगे।

हर कोई वित्तीय स्वतंत्रता को अपने-अपने लक्ष्यों के अनुसार अपने ढंग से परिभाषित करता है। मूल रूप से, इसका मतलब है कि निष्क्रिय आय (पैसिव इन्कम) देने के लिए आपके पास पर्याप्त बचत या निवेश का धन होना चाहिए, जो आपकी जीवनशैली बनाये रखने में मदद कर सके। मूल आवश्यकता यह है कि जितनी जल्दी हो सके निवेश शुरू किया जाये, ताकि चक्रवृद्धि (कंपाउंडिंग) का लाभ मिले।

हर कोई वित्तीय स्वतंत्रता को अपने-अपने लक्ष्यों के अनुसार अपने ढंग से परिभाषित करता है। मूल रूप से, इसका मतलब है कि निष्क्रिय आय (पैसिव इन्कम) देने के लिए आपके पास पर्याप्त बचत या निवेश का धन होना चाहिए, जो आपकी जीवनशैली बनाये रखने में मदद कर सके।

आर. वेंकटरमन
चेयरमैन, आईआईएफएल सिक्योरिटीज

वित्तीय स्वतंत्रता एक यात्रा भी, गंतव्य भी

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि।।

भगवद गीता के इस उद्धरण का अनुवाद है, "आपको अपने निर्धारित कर्तव्यों को पूरा करने का अधिकार है, अपने कार्यों के फल का नहीं। कभी भी स्वयं को अपनी गतिविधियों के परिणामों का कारण न समझें और न ही निष्क्रिय हो जायें।" यह परिच्छेद परिणामों से बँधे बिना अपने कर्तव्य पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता पर जोर देता है। जीवन की यात्रा के संदर्भ में यह इस बात पर जोर देता है कि किसी निश्चित गंतव्य पर पहुँचने से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है स्वयं यह यात्रा, हम कैसे यात्रा करते हैं, और रास्ते में क्या सीखते हैं।

वित्तीय दृष्टि से, यह श्लोक परिणाम या धन संचय की अनावश्यक चिंता के बिना प्रयास करके उद्देश्यपूर्ण ढंग से काम करने की आवश्यकता पर जोर देता है। यह अपने प्रयासों के परिणामों से विरक्त रहने को बढ़ावा देता है, जिससे वित्तीय प्रयासों से जुड़े तनाव और चिंता को कम करने में सहायता मिलती है। इन अवधारणाओं की समानता को देखते हुए, हम विश्वास के साथ कह सकते हैं कि वित्तीय स्वतंत्रता प्राप्त करना एक यात्रा भी है और एक गंतव्य भी।

हालाँकि जीवन बदलने वाले इस साहसिक कार्य को शुरू करने से पहले यह स्पष्ट समझ लेना चाहिए कि वित्तीय स्वतंत्रता का तात्पर्य क्या है। कल्पना कीजिए कि अर्जुन नाम का आपका एक दोस्त है, जो 9 से 5 बजे की पारंपरिक नौकरी करता है और हर महीने पैसे कमाता है। उसे यात्राएँ करना, स्वादिष्ट भोजन का आनंद लेना और आधुनिक तकनीक में निवेश करना (यानी नयी-नयी चीजें खरीदना) पसंद है।

हालाँकि वह कभी-कभी तनाव में रहता है, क्योंकि उसके पास वह सब करने के लिए पर्याप्त पैसे नहीं हैं, जो वह करना चाहता है। वह हर महीने एक खास दिन अपनी आय के एक हिस्से का निवेश शुरू करने का निर्णय लेता है। वह उन्हें म्यूचुअल फंडों में रखता है, जो निवेश का एक जाना-माना साधन है। वह अपना कुछ पैसा गैजेट और भोग-विलास की चीजें खरीदने में इस्तेमाल करने के बजाय म्यूचुअल फंडों में लगाता है।

जैसे-जैसे महीने बीतते गये, अर्जुन ने देखा कि उसके म्यूचुअल फंड निवेशों का मूल्य बढ़ रहा है। अपने पैसे को निवेशित रखने के बदले

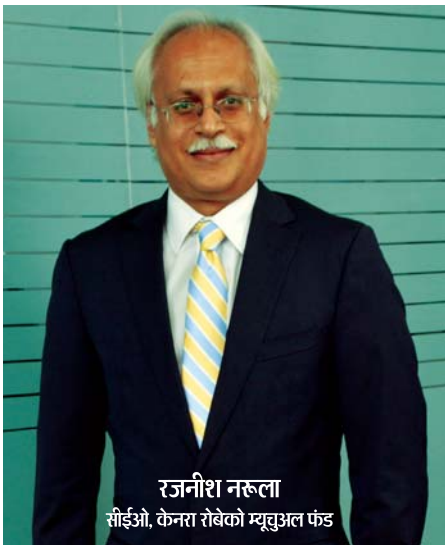

रजनीश नरूला
सीईओ, केनरा रोबेको म्यूचुअल फंड

में यह साधन (म्यूचुअल फंड) उसे प्रतिफल (रिटर्न) के माध्यम से अधिक धनराशि दे रहा है। इन अतिरिक्त पैसों की बचत से अर्जुन और अधिक कर पाने में सक्षम बन कर रोमांचित है।

अर्जुन के कुछ दोस्त एक बार गर्मियों में एक अच्छी छुट्टी की व्यवस्था करते हैं। अर्जुन इसके लिए बहुत उत्सुक है, लेकिन अपनी वित्तीय स्थिति के बारे में अनिश्चित है। फिर उसे म्यूचुअल फंडों में अपने निवेश की याद आती है। उस निवेश की स्थिति देखने के बाद उसने पाया कि पैसे खत्म होने की चिंता किये बिना इस यात्रा के लिए उसके पास पर्याप्त धन है। वह बहुत खुश और मुक्त महसूस कर रहा है। यह है वित्तीय स्वतंत्रता! इसका मतलब है खर्च की चिंता किये बिना अपने जुनून पर आगे बढ़ने के लिए पर्याप्त धन होना।

किसी व्यक्ति के वित्तीय रूप से स्वतंत्र होने का मतलब है कि वह अपने पैसों का प्रबंधन कर सकता है और धन की कमी से बँधे बिना अपने उद्देश्यों और विश्वासों पर चल सकता है। यह अवधारणा केवल अमीर होने से कहीं आगे जाती है। इसमें अपनी वित्तीय स्थिति पर नियंत्रण, अपने हितों और आकांक्षाओं का पालन करने की स्वतंत्रता और अप्रत्याशित कठिनाइयों का सामना करने के लिए खुद को आश्वस्त रखना भी शामिल है। वित्तीय स्वतंत्रता को अनुशासन, शिक्षा और दृढ़ता से ही पाया जा सकता है।

वित्तीय रूप से स्वतंत्र होने की यह यात्रा हर किसी के लिए अलग तरह की है, और ऐसे व्यक्तिपरक मुद्दे पर व्यापक दृष्टिकोण रख कर इसके साथ न्याय करना संभव नहीं है। हालाँकि निम्नलिखित तत्वों पर विचार करके हम इस यात्रा की व्यवस्था के लिए यह मूलभूत सूची बना सकते हैं :

1. **वित्तीय योजना तैयार करना** : वित्तीय नियोजन और वित्तीय स्वतंत्रता दृढ़ता से जुड़े हुए हैं। यह वित्त का उचित प्रबंधन करके जीवन की वित्तीय आवश्यकताओं को सफलतापूर्वक पूरा करने की प्रक्रिया है। वित्तीय नियोजन एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसका उद्देश्य किसी व्यक्ति के वित्तीय लक्ष्यों को पूरा करने के लिए सही समय पर सही मात्रा में धन की उपलब्धता सुनिश्चित करना है।
2. **कम खर्च में जीवनयापन** : तय बजट के भीतर रहना अपनी जीवनशैली का एक विकल्प है, न कि खुद को मौज-मस्ती या आवश्यकताओं से वंचित करने का तरीका। दरअसल, यह अपने खर्च करने के तरीके के बारे में जागरूक होना और यह पता लगाना है कि तय बजट पर कैसे टिके रहना है। फिजूलखर्ची को कम करके वित्तीय स्वतंत्रता की राह को तेज किया जा सकता है, ताकि लोगों के पास बचत और निवेश के लिए अधिक पैसा हो।
3. **आय के अनेक स्रोत बनाना** : आय के एक ही स्रोत पर पूरी तरह निर्भर रहने से व्यक्तियों को आर्थिक जोखिमों का सामना करना पड़ सकता है। आय के एक से अधिक स्रोत स्थिरता प्रदान करते हैं और कुल वित्तीय क्षमता को बढ़ाते हैं, जिससे अधिक ठोस वित्तीय आधार मिलता है।
4. **जल्दी निवेश व नियमित विविधीकरण** : धन संचय करने और वित्तीय स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए निवेश एक प्रभावी औजार है। विभिन्न परिसंपत्तियाँ बाजार के उतार-चढ़ाव पर अलग-अलग तरह से प्रतिक्रिया करती हैं। लिहाजा जोखिम कम करने के लिए विविधीकरण (डाइवर्सिफिकेशन) आवश्यक है। यदि निवेश जल्दी शुरू किया जाये तो दीर्घकालिक वित्तीय लक्ष्य प्राप्त होने की संभावना अधिक होती है, क्योंकि निवेश के विकसित होने और कई गुना बढ़ने के लिए अधिक समय होता है।
5. **निरंतर सीखना** : वित्तीय बाजारों और आर्थिक स्थितियों में बदलाव आते रहते हैं। इन बदलावों से सफलतापूर्वक गुजरने और शिक्षित रूप से वित्तीय निर्णय लेने के लिए व्यक्तियों को निरंतर सीखते रहना चाहिए।

नये निवेशक कैसे पायें वित्तीय स्वतंत्रता का मार्ग

भारत इस दुनिया में सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में से एक है और संभावनाओं के प्रतीक के रूप में खड़ा है। ये संभावनाएँ न केवल शेयर बाजारों में हाल की उछाल में, बल्कि अनगिनत नये निवेशकों की आकांक्षाओं में भी परिलक्षित होती हैं, जो इस विकास गाथा में भाग लेने के लिए उत्सुक हैं।

ये निवेशक शेयर बाजार की तेजी से मिल रहे अवसरों का लाभ उठाने के लिए रिकॉर्ड गति से नये म्यूचुअल फंड निवेश के लिए एसआईपी खाते खोल रहे हैं। नये एसआईपी खातों की संख्या जुलाई 2023 के महीने में 33 लाख के रिकॉर्ड उच्च स्तर पर पहुँच गयी। इनमें से बड़ी संख्या में खाते नये निवेशकों ने खोले हैं, और इनमें से प्रत्येक के पास संपदा सृजन (वेल्थ क्रिएशन) का सपना है।

वित्तीय स्वतंत्रता की ओर यात्रा

कई लोगों के लिए, वित्तीय स्वतंत्रता वर्षों की कड़ी मेहनत, सावधानी से तैयार योजना और रणनीतिक निर्णय लेने का परिणाम होता है। कुछ लोग तो जल्द ही वित्तीय स्वतंत्रता प्राप्त कर सकते हैं, पर अधिकांश आम निवेशकों के लिए अपना घर खरीदने, बच्चों की शिक्षा के पैसे का इंतजाम करने या आरामदायक सेवानिवृत्ति (रिटायरमेंट) हासिल करने जैसे मील के पत्थरों तक पहुँचने के लिए बहुत कड़ी मेहनत, समय और प्रतिबद्धता की आवश्यकता होती है। यह यात्रा पहले बचत करने और बाद में खर्च करने की सरल लेकिन शक्तिशाली मानसिकता को अपनाने से शुरू होती है। इसे अक्सर विलंबित संतुष्टि कहा जाता है। यह मूलभूत सिद्धांत एक सुरक्षित वित्तीय भविष्य के लिए मंच तैयार करता है।

सरल लेकिन स्मार्ट वित्तीय आदतें

छोटी शुरुआत करना और लगातार बचत करना इस रास्ते पर बढ़ने का पहला कदम है। अपनी आय का एक हिस्सा नियमित रूप से अलग रख दें। यह अभ्यास एक ठोस वित्तीय आधार बनाता है, जो भविष्य में बड़े लक्ष्यों को पाने में सक्षम बनाता है। बचत को अपने वित्तीय व्यवहार का एक ऐसा हिस्सा बनायें, जिसे बिल्कुल टालना नहीं है। यह सरल लेकिन असरदार आदत वित्तीय अनुशासन पैदा करती है।

याद रखें कि आज बचाया हुआ प्रत्येक रुपया कल की आकांक्षाओं को पूरा करने की दिशा में एक सीढ़ी बन जाता है। लगातार किये जाने वाले छोटे-छोटे योगदान से समय बीतने के साथ बड़ी राशि जमा हो सकती है। वित्तीय मामलों में यह बीज बोने के जैसा है, जिसे खाद-पानी देते रहें और धैर्य रखें तो फल देने वाले पेड़ बन जाते हैं।

शमशेर सिंह
एमडी एवं सीईओ, एसबीआई म्यूचुअल फंड

जल्दी शुरू करें, योग्य सलाह लें और केंद्रित रहें

लाखों नये निवेशक वित्तीय स्वतंत्रता की दिशा में अपनी यात्रा शुरू कर रहे हैं। यह यात्रा केवल कुछ संख्याओं को पाने की नहीं है, यह आकांक्षाओं को पूरा करने, सपने साकार करने और स्वयं एवं अपने प्रियजनों के लिए स्थिरता हासिल करने के लिए है। एक निवेशक के रूप में सर्वोत्तम परिणाम पाने के लिए अपना निवेश यथाशीघ्र शुरू करने का प्रयास करें। इसके अलावा, निवेश-संबंधी निर्णयों में योग्य वित्तीय सलाहकारों की मदद लेना हमेशा एक अच्छा विचार है।

यहाँ मैं आपको एक विचार के साथ छोड़ता हूँ, जिस पर आप मनन कर सकते हैं। पहली स्थिति है कि आप 30 वर्ष की आयु होने पर 10,000 रुपये की मासिक एसआईपी शुरू करें और 50 वर्ष की आयु तक हर साल एसआईपी राशि को 10% बढ़ाते जायें। दूसरी स्थिति में जब तक आप 50 वर्ष के नहीं हो जाते, तब तक एसआईपी राशि 10,000 रुपये ही बनाये रखें। यहाँ आप पहली स्थिति में अपने जीवन के विभिन्न वित्तीय लक्ष्यों के लिए अधिक बचत कर पाने की संभावना रखते हैं। आपकी बचत और निवेश की राशि आपकी बढ़ती आय और जीवनशैली बदलने के अनुसार ही बढ़ते रहनी चाहिए। हममें से अधिकांश लोग रोजमर्रा के जीवन में उलझ कर अपने निवेश का तालमेल अपनी आकांक्षाओं और जीवनशैली से करना भूल जाते हैं।

अगला कदम? बचत का निवेश करें!

बचत शुरू कर देने के बाद तार्किक सवाल यह होता है कि आगे क्या करें? मात्र बचत कर लेने से लंबे समय के वित्तीय लक्ष्यों को पाने के लिए आवश्यक वृद्धि की संभावना नहीं रहती है। आपकी मेहनत की कमाई को समझदारी से निवेश करने की जरूरत है। लेकिन कहाँ निवेश करें? निवेश करना चुनौतीपूर्ण हो सकता है, क्योंकि इसके लिए गहन अध्ययन और बाजार एवं अर्थव्यवस्था को प्रभावित करने वाले कई आपस में जुड़े कारकों को समझने की आवश्यकता होती है। ऐसी स्थिति में, म्यूचुअल फंड जैसे समाधान एक अच्छा विकल्प हो सकते हैं, क्योंकि इन्हें विशेषज्ञ चलाते हैं और वे पेशेवर एवं पारदर्शी तरीके से इनका प्रबंधन करते हैं। निवेशकों के लिए विश्वास बढ़ाने वाली एक और बात यह है कि म्यूचुअल फंडों का नियमन भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (सेबी) करता है।

विविधीकरण और जोखिम प्रबंधन

जो लोग वित्तीय बाजारों की जटिलताओं से घबराये बिना निवेश करना चाहते हैं, उनके लिए म्यूचुअल फंड एक व्यावहारिक समाधान हैं। विविधीकरण इनके प्रमुख लाभों में से एक है। जब आप म्यूचुअल फंड में निवेश करते हैं, तो आपका पैसा अन्य निवेशकों के पैसों के साथ मिल कर इकट्ठा हो जाता है। इस एकत्रित पैसे का निवेश संपत्तियों के विविधीकृत (डाइवर्सिफाइड) पोर्टफोलिओ में किया जाता है, जैसे कि शेयर, बॉन्ड या दोनों का मिश्रण। यह विविधीकरण फंड के पोर्टफोलिओ में एक या अधिक निवेशों के खराब प्रदर्शन के प्रभाव को हल्का करता है और इस तरह जोखिम को घटाता है।

फंड का प्रबंधन अनुभवी पेशेवरों द्वारा किया जाता है, जो बाजार का सावधानी से विश्लेषण करते हैं और निवेश के संबंध में जानकार निर्णय लेते हैं। यह विशेषज्ञता वित्तीय दुनिया की पेचीदगियों से जूझने में मदद कर सकती है और लंबी अवधि में अच्छा प्रतिफल (रिटर्न) पाने की संभावना को बेहतर बनाती है।

अनुशासन और व्यावहारिक समझ से पायें वित्तीय स्वतंत्रता

हम जिन स्वतंत्रताओं की इच्छा रखते हैं, उनमें सबसे अधिक इच्छा वित्तीय स्वतंत्रता की होती है। हमारे पास इतना पर्याप्त पैसा हो जो हमारी छोटी अवधि और लंबी अवधि, दोनों तरह की जरूरतों को पूरा कर सके – अधिकांश लोग इस लक्ष्य की ओर बढ़ने का प्रयास करते हैं। बहुत से 80-90 के दशक में जन्मे लोगों (मिलेनियल या वाई पीढ़ी) और 90 के दशक के अंतिम वर्षों या नयी सदी के शुरुआती वर्षों में जन्मे (जेड पीढ़ी) के लोगों के लिए वास्तव में आर्थिक रूप से स्वतंत्र होना एक सपना है।

सोशल मीडिया में इस भावना को दर्शाता एक आकर्षक वाक्यांश गढ़ा गया है – फाइनेंशियल इंडिपेंडेंस रिटायर अर्ली (फायर)। इसे लोग एक मत की तरह मानने लगे हैं। लेकिन अधिकांश लोगों की कठिनाई यह है कि उनके पास वित्तीय स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए आवश्यक व्यावहारिक समझ और कौशल का अभाव है।

कैसे आगे बढ़ें

वित्तीय स्वतंत्रता का अर्थ है अपने वित्तीय लक्ष्यों के लिए पर्याप्त धनराशि होना। यदि आप अपने सभी वित्तीय लक्ष्यों – जैसे छुट्टियों में घूमना, कार खरीदना, घर खरीदना, जीवनयापन का खर्च, सेवानिवृत्ति योजना, स्वास्थ्य – आदि के लिए भुगतान कर सकते हैं तो आपको वित्तीय रूप से स्वतंत्र माना जा सकता है। वित्तीय स्वतंत्रता का अर्थ मितव्ययिता, उच्च बचत और निवेश भी है। आधुनिक पर्सनल फाइनेंस की भाषा में कहें तो वित्तीय स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए लक्ष्य-आधारित वित्तीय योजना बनानी चाहिए।

वित्तीय योजना बनाते समय आपको कुछ बातें ध्यान में रखनी होंगी। प्रत्येक वित्तीय लक्ष्य को लिखें। इसमें कुछ मूलभूत प्रश्नों के उत्तर होने चाहिए : आपका उद्देश्य क्या है, आज पैसे का मूल्य क्या है, आप उस लक्ष्य को कब पाना चाहते हैं, और उस समय महँगाई का समायोजन करने के बाद आपके लक्ष्य का मूल्य क्या होगा? अगर आपके पास इन प्रश्नों के उत्तर हैं तो आप एक वित्तीय लक्ष्य पाने की योजना तैयार कर सकते हैं - अल्पकालिक भी और दीर्घकालिक भी।

यदि आपको संपदा सृजन की प्रक्रिया और अनुशासन के बारे में मूलभूत समझ है तो वित्तीय लक्ष्य पाये जा सकते हैं। पूरे विश्व में यह अच्छी तरह स्थापित है कि व्यवसायों का स्वामित्व, यानी इक्विटी में निवेश अधिकांश अन्य संपत्ति वर्गों (एसेट क्लास) से बेहतर प्रदर्शन करता है। इक्विटी में निवेश से आपको बेहतरीन व्यवसायों का स्वामित्व पाने में मदद मिल सकती है।

संदीप सिक्का
ईडी एवं सीईओ, निप्पॉन इंडिया म्यूचुअल फंड

पर इसका मतलब यह भी है कि आपको अपने निवेश में अल्पावधि में अस्थिरता से निपटना होगा, पर लंबी अवधि में यह एक लाभदायक अनुभव है। आगे के वर्षों में आपको इक्विटी के साथ अन्य संपत्ति वर्गों, जैसे बॉन्ड और कीमती धातुओं को भी जोड़ना होगा। इस तरह कई संपत्तियों के साथ अच्छे ढंग से तैयार किये गये पोर्टफोलिओ आपको अच्छा लाभ दे सकते हैं।

एक महत्वपूर्ण बात ध्यान में रखनी चाहिए कि इक्विटी से आपको केवल लंबी अवधि में ही अच्छा लाभ मिलता है। यदि आपके वित्तीय लक्ष्य के लिए लंबी समय-सीमा है, तो आप इक्विटी में अधिक धन आवंटित कर सकते हैं और बॉन्ड जैसे संरक्षात्मक (कंजर्वेटिव) निवेश में कम। जैसे-जैसे आप अपने वित्तीय लक्ष्य के करीब पहुँचते हैं, पैसा शेयरों से बॉन्डों में स्थानांतरित किया जा सकता है। यह पारंपरिक ज्ञान है।

और सबसे अनुभवी एवं बुद्धिमान निवेशक इसका पूरा पालन करते हैं। पर जो निवेशक अपने निवेश के बस अल्पकालिक मूल्य को देखने में फँस जाते हैं, वे इक्विटी में निवेश के दीर्घकालिक पुरस्कारों की सच्चाई को नहीं पहचान पाते। कई लोगों को इसे लागू करना कठिन लगता है। जब वे यह पता लगाने की कोशिश करते हैं कि उन्हें हर महीने कितना पैसे का निवेश करना है तो उनका वित्तीय लक्ष्य पहुँच से बाहर लगता है। लेकिन एक बार जब आप बचत शुरू कर देते हैं, तो वित्तीय लक्ष्य धीरे-धीरे प्राप्त होने लगते हैं। यह उन यात्राओं के समान है जो शुरुआत में कठिन लगती हैं, लेकिन जब आप दृढ़ संकल्प के साथ चलना शुरू करते हैं तो वे आसान हो जाती हैं।

चक्रवृद्धि (कंपाउंडिंग) का असर

यह सुनिश्चित करने के लिए कि वित्तीय स्वतंत्रता की ओर आपकी यात्रा सुखद हो, आपको कुछ पहलुओं को ध्यान में रखना होगा। बहुत-से लोग संख्याओं को लेकर सहज नहीं हैं। लेकिन दुनिया का आठवाँ अजूबा – चक्रवृद्धि (कंपाउंडिंग) को बिना गणित के नहीं समझा जा सकता।

$A=p*(1+i)^n$

इस समीकरण में, A = राशि, p = मूलधन, i = प्रतिफल दर और n = समय अवधि।

यह चक्रवृद्धि ब्याज निकालने का सूत्र है, और यही संपदा सृजन का भी सूत्र है।

इस फॉर्मूले में एक बड़ी सीख है, जिसका लाभ उठा कर लोग अपने वित्तीय लक्ष्यों की ओर तेजी से बढ़ सकते हैं। बड़ी सीख यह है कि i (रिटर्न की दर) पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय अन्य दो इनपुट - p (प्रिंसिपल) और n (अवधि या वर्षों की संख्या) पर ध्यान केंद्रित करें। शायद ही कभी हम अपने पोर्टफोलिओ के रिटर्न की दर को नियंत्रित कर सकते हैं।

लेकिन हम यह निर्णय ले सकते हैं कि जितना संभव हो उतना निवेश करेंगे, और इसमें लंबी अवधि के लिए चक्रवृद्धि होते रहने दे सकते हैं। कई संपत्तियों वाला (मल्टी-एसेट) पोर्टफोलिओ बनाने में यह सक्रिय दृष्टिकोण लंबी अवधि में आपके अनुमानों से कहीं अधिक धन सृजन कर सकता है। आपको बड़ी संपदा एकत्र करने के व्यावहारिक महत्व को समझना चाहिए। यह एकत्र संपदा आपके वित्तीय लक्ष्यों को प्राप्त करने और बेहतर भविष्य में रहने में आपकी सहायता करेगी। आप अपने प्रियजनों के लिए एक विरासत भी छोड़ सकते हैं।

जीवन बीमा के बिना वित्तीय स्वतंत्रता नहीं

जीवन बीमा ऐसा उत्पाद है, जो हर उस व्यक्ति के लिए आवश्यक है, जिस पर कुछ परिजन निर्भर हैं। हमारे लिए यह जरूरी है कि हम अपने प्रियजनों को जीवन की अनिश्चितताओं से बचायें। महामारी के दौरान यह जरूरत बहुत बढ़-चढ़ कर दिखी। हालाँकि, जब इस अनूठे उत्पाद को खरीदने की बात आती है तो लोग अभी भी टालमटोल करते हैं।

जोखिम प्रबंधन पूरी तरह से अनिश्चितताओं के प्रबंधन के बारे में है। एक समाधान के रूप में जीवन बीमा जोखिम से बचाव के तीन मूलभूत सिद्धांतों को संबोधित करता है जिसमें मृत्यु दर, रुग्णता और दीर्घायु शामिल हैं।

सावधि बीमा (टर्म इंश्योरेंस) उत्पाद यह सुनिश्चित करते हैं कि परिवार में कमाने वाले मुख्य व्यक्ति को कुछ भी होने की स्थिति में हमारे परिवार आर्थिक रूप से सुरक्षित रहें। जीवन बीमा कंपनियों द्वारा पेश किये गये गंभीर बीमारी (क्रिटिकल इलनेस) से संबंधित उत्पाद यह सुनिश्चित करते हैं कि यदि कैंसर और हृदय रोगों जैसी बड़ी बीमारियों के इलाज की प्रक्रिया में हमें भारी मात्रा में पैसा खर्च करना पड़े या हम कमा सकने की स्थिति में न रह जायें, तो भी हमारे परिवार आर्थिक रूप से सुरक्षित रहें।

जीवन बीमा कंपनियों द्वारा पेश किये गये बचत और निवेश उत्पाद हमारे महत्वपूर्ण वित्तीय लक्ष्यों, जैसे कि घर खरीदना, बच्चों की उच्च शिक्षा, हमारी सेवानिवृत्ति की योजना बनाना आदि से चूक जाने के जोखिम को कम करते हैं। इन लक्ष्यों पर वित्तीय सुरक्षा के अतिरिक्त जाल का मतलब है कि कमाने वाले मुख्य व्यक्ति की दुर्भाग्यपूर्ण मृत्यु की स्थिति में भी परिवार ऐसे लक्ष्यों को पूरा कर सकता है।

लाइफ फ्रीडम इंडेक्स (एलएफआई)

एचडीएफसी लाइफ ने एक जीवन स्वतंत्रता सूचकांक या लाइफ फ्रीडम इंडेक्स (एलएफआई) विकसित किया है, जो विभिन्न श्रेणियों में व्यक्तियों की वित्तीय तैयारियों को मापता है। एलएफआई शहरी भारतीय उपभोक्ताओं की वित्तीय स्वतंत्रता की स्थिति, उपलब्ध उत्पादों के बारे में उनकी जागरूकता, वित्तीय योजना की पर्याप्त एवं यथेष्ट होने और सबसे ऊपर, उनकी वित्तीय स्वतंत्रता की वर्तमान स्थिति का आकलन करता है।

हमारे पिछले सर्वेक्षणों ने कई बिंदुओं को सामने रखा है, जो इस प्रकार हैं :

- महामारी के बाद अपनी वित्तीय तैयारियों के बारे में उपभोक्ताओं का आत्मविश्वास कम है
- महानगरों और एकल परिवारों पर महामारी के समय अधिक प्रभाव पड़ा, जबकि छोटे शहरों और संयुक्त परिवारों में अधिक स्थिरता रही
- वित्तीय स्वास्थ्य को अधिक प्राथमिकता दी जाने लगी है - लोग आर्थिक वृद्धि, अपने रोजगार और आय घटने/छिनने से सिर पर चढ़ते कर्ज को लेकर चिंतित दिखते हैं

ऊपर रखे गये निष्कर्ष लंबे समय से चली आ रही कुछ आदतों के शुद्ध असर को सामने लाते हैं – बीमा के बारे में जागरूकता की कमी, पर्याप्त बीमा नहीं कराना, जीवन चले जाने जैसी किसी घटना के लिए तैयारी नहीं करना, आदि।

जीवन बीमा से कैसे मिलेगी वित्तीय स्वतंत्रता

एक सेवानिवृत्त व्यक्ति के लिए वित्तीय स्वतंत्रता का बहुत अधिक महत्व है। अपने बच्चों पर निर्भर होना शायद हर किसी के लिए अपने स्वर्णिम वर्षों में जीवन बिताने का मनचाहा तरीका नहीं हो। जीवन बीमा के क्षेत्र में ऐसी कई योजनाएँ उपलब्ध हैं, जो व्यक्तियों को अपने रिटायर होने के बाद की योजना तैयार करने में सक्षम बनाती हैं।

इसके अलावा, वे अपनी संचित निधि से पेंशन या वार्षिक भत्ता (एन्युटी) पा सकते हैं, जिसके लिए जीवन बीमा कंपनियों के पास कई विकल्पों के साथ एन्युटी प्लान उपलब्ध हैं। इस तरह वे पैसे खत्म हो जाने के डर के बिना जीवन भर अपने लिए एक स्थिर धन प्रवाह जारी रख सकते हैं। परिवार के लिए अकेले ही रोटी कमाने वाला एक कामकाजी व्यक्ति सावधि बीमा (टर्म इंश्योरेंस) से यह सुनिश्चित कर सकता है कि उसकी अनुपस्थिति में भी उसका परिवार अपनी वर्तमान जीवनशैली को जारी रख पायेगा।

आसान है जीवन बीमा खरीदना

अब जीवन बीमा खरीदना बहुत सरल और आसान है। असल में, यह कुछ मिनटों में ही किया जा सकता है। अपने क्षेत्र-संबंधी (डोमेन) विशेषज्ञता के साथ प्रौद्योगिकी के लाभ ने कंपनियों के लिए प्रतिस्पर्धी कीमतों पर उत्पादों की एक विस्तृत श्रृंखला पेश करना संभव बना दिया है। कोई व्यक्ति चाहे इंटरनेट का जानकार हो या नहीं - अब कोई समस्या नहीं है! ऐसे मंच (प्लेटफ़ॉर्म) हैं, जिन्हें इस खरीद प्रक्रिया को सुविधाजनक बना रहे हैं। इनमें आवश्यकताओं के विश्लेषण के साथ वास्तविक समय में केवाईसी पूरा करना और फॉर्म भरना संभव हो जाता है। इस काम को आप स्वयं भी कर सकते हैं, और जरूरत हो तो सहायता भी ले सकते हैं।

एक पॉलिसी खरीदते समय आप ऑनलाइन तुलना भी कर सकते हैं। सबसे कम प्रीमियम वाली पॉलिसी हमेशा सबसे अच्छी हो, यह आवश्यक नहीं है। अपनी विशिष्ट जरूरतों को समझना और उन जरूरतों के हिसाब से सही उत्पाद को चुनना एक महत्वपूर्ण पहला कदम है। आप एक जानकार (इन्फॉर्म्ड) निर्णय ले सकें, इसके लिए काफी सूचनाएँ ऑनलाइन उपलब्ध हैं। इसमें यदि किसी मदद की जरूरत हो, तो बीमा विशेषज्ञों का एक व्यापक तंत्र भी आपकी सहायता के लिए तत्पर है।

निष्कर्ष : वित्तीय स्वतंत्रता तब होती है, जब आप किसी बाहरी सहायता के बिना अपने दम पर चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार होते हैं। जीवन बीमा उत्पाद आपको आत्मविश्वास के साथ जीवन का सामना करने और अपने दीर्घकालिक वित्तीय लक्ष्यों को पूरा करने की दिशा में काम करने के लिए सक्षम बनाते हैं।

विभा पडलकर
एमडी एवं सीईओ, एचडीएफसी लाइफ

आगे ब्याज दरें घटेंगी तो डेट में बढ़ेगा रिटर्न

ट्रस्ट म्यूचुअल फंड तुलनात्मक रूप से एक नया फंड घराना है और इसकी खासियत है कि इसने अब तक केवल अपने डेट फंड ही बाजार में उतारे हैं। आम निवेशकों को अपने पोर्टफोलिओ में डेट फंडों को कितनी जगह देनी चाहिए और कैसे चुनाव करना चाहिए? अभी आरबीआई की नीतियों और दूसरे तमाम कारकों के चलते ऋण (डेट) बाजार में किस तरह हलचल रहेगी और उनको ध्यान में रख कर डेट पोर्टफोलिओ में अभी क्या रणनीति रखनी चाहिए? देखें ट्रस्ट म्यूचुअल फंड के सीईओ संदीप बागला के साथ यह बातचीत।

हाल ही में हमने देखा कि आरबीआई ने ब्याज दरों में कोई बदलाव नहीं किया लेकिन तरलता को चलन से कम करने के उपाय किये। इस कदम से बैंकिंग सिस्टम में या ऋण बाजार के समूचे परिदृश्य में किस तरह का बदलाव देखने को मिल सकता है?

हाल के वर्षों में ब्याज दरों में काफी उतार-चढ़ाव देखने को मिला है। कोविड-19 से पहले महँगाई दर ऊँची होने से ब्याज दरें भी अधिक थीं। कोविड के दौरान अर्थव्यवस्था में अनिश्चितता आ गयी थी, इसलिए ब्याज दरें काफी तेजी से नीचे आयीं। यह चलन भारत ही नहीं, वैश्विक स्तर पर भी देखा गया था। इसके बाद जब हालात सामान्य होने लगे, चीजों की माँग बढ़ने लगी और अर्थव्यवस्था ने रफ्तार पकड़ी तो मुद्रास्फीति या महँगाई दर भी बढ़ी। इससे केंद्रीय बैंक को मानना पड़ा कि ऊँची महँगाई दर अभी बनी रहेगी।

भारत ही नहीं अमेरिका में भी ब्याज दरों में इजाफा हुआ। मौजूदा हालात में हम पुख्ता तौर पर नहीं कह सकते हैं कि ब्याज दरों की बढ़ोतरी से अर्थव्यवस्था के विकास पर कैसा असर होगा, महँगाई कम होगी या रिजर्व बैंक को ब्याज दरें और बढ़ानी पड़ेंगी। रिजर्व बैंक की सहूलियत महँगाई दर को 2-4% के बीच रखने में है। रिजर्व बैंक जानता है कि महँगाई से सबसे ज्यादा निम्न आय वर्ग प्रभावित होता है, क्योंकि उनका ज्यादा खर्च खाद्य उत्पादों पर होता है। इसलिए केंद्रीय बैंक महँगाई को 5.25% से 5.50% के बीच रखने के लिए एक बार और ब्याज दरें बढ़ा सकता है।

एक चीज और है कि अगर तरलता (लिक्विडिटी) चलन में ज्यादा है तो उससे भी महँगाई बढ़ सकती है। आरबीआई नहीं चाहती है कि सिस्टम में ज्यादा नकद रहे इसलिए उसने नकद आरक्षित अनुपात (सीआरआर) को 1% बढ़ा दिया। इससे बैंकों को अपनी जमाओं में वृद्धि (इनक्रीमेंटल डिपॉजिट) पर सीआरआर बरकरार रखना पड़ेगा। अनुमान है कि उससे एक-डेढ़ लाख करोड़ रुपये बैंकिंग प्रणाली से निकल जायेंगे। अभी आरबीआई ने एक महीने के लिए ही यह कदम उठाया है।

अगर आरबीआई का अनुमान है कि निकट समय में महँगाई दर के आँकड़े बढ़ कर आएँगे तो ऐसे में आरबीआई ने ब्याज दरों में सिर्फ विराम क्यों दिया, ब्याज दर को एक बार और बढ़ाया क्यों नहीं?

अर्थशास्त्र सटीक विज्ञान नहीं है कि आपने कुछ बदलाव किये और तुरंत नतीजा आ गया। अर्थशास्त्र में आज जो उपाय किये गये हैं, उनका नतीजा कैसा आयेगा यह समझने में छह से नौ महीने का समय लगता है। जैसे डॉक्टर लक्षण देखकर मरीज को दवा देता है, उसमें बदलाव करता है। इसी तरह केंद्रीय रिजर्व बैंक ने जो उपाय किये हैं, उससे उसका अनुमान है कि नौ महीने से एक साल की अवधि में महँगाई दर 4.25% से 5.25-5.50% के आस-पास रहेगी। इसलिए अभी ब्याज दरें 6.50% पर चल रही हैं, एक साल बाद 5.50% महँगाई दर के अनुमान से निवेशकों को 100 आधार अंक (बीपीएस) की वास्तविक ब्याज दरें मिल रही हैं।

हम अभी खुदरा मूल्य सूचकांक (सीपीआई) पर आधारित महँगाई दर की हम बात कर रहे हैं। लेकिन थोक मूल्य सूचकांक (होलसेल प्राइस इंडेक्स या डब्लूपीआई) पर आधारित महँगाई तीन महीने से नकारात्मक चल रही है। मतलब थोक मूल्य तो घट रहे हैं, लेकिन खुदरा महँगाई बढ़ी हुई है और अभी और ज्यादा बढ़ने की आशंका भी है। यह विरोधाभास क्यों है?

भारत में थोक मूल्य सूचकांक का काफी समय तक अनुसरण किया गया, लेकिन यह कुछ अधूरा लगा था। इसलिए महँगाई दर को मापने के लिए डब्लूपीआई के बजाय सीपीआई को आधार बनाया गया। केंद्रीय बैंक भी मौद्रिक नीति बनाते समय खुदरा मूल्य सूचकांक (सीपीआई) को ही केंद्र में रखते हैं। आम आदमी के उपभोग को (कंजंप्शन बास्केट) मापने के लिए सीपीआई बेहतर संकेतक है। इसलिए डब्लूपीआई के आधार पर फैसले की अहमियत कम हो गयी है।

लेकिन यह बात सही है कि डब्लूपीआई के आँकड़े भी अर्थव्यवस्था के एक हिस्से के व्यवहार के बारे में कुछ दर्शाते हैं। हाल में खाद्य वस्तुओं के दाम में काफी तेजी देखने को मिली है। अब सवाल यह है कि ब्याज दरें बढ़ाने से क्या इनके दाम कम होंगे या हुए। शायद नहीं। लेकिन ब्याज दरें बढ़ानी इसलिए जरूरी है कि मुद्रास्फीति के बारे में साधरण लोगों को यह नहीं लगना चाहिए हर साल महँगाई बढ़ेगी और उसी अनुपात में ब्याज दरें भी ऊपर जाती रहेंगी। इसलिए रिजर्व बैंक महँगाई को एक दायरे में रखना चाहता है।

आरबीआई ने अपना आगे का रुख बता दिया है, तो इसके चलते ऋण बाजार (डेट मार्केट) पर और खास कर डेट फंडों पर किस तरह का असर आने वाला है? इनका आगे का परिदृश्य (आउटलुक) कैसा है?

डेट फंड से आपको दो तरह से प्रतिफल मिलता है। एक उसका पोर्टफोलिओ यील्ड है, यानी निवेशक को उस पर जो ब्याज मिलता है। आजकल 3-4 साल की परिपक्वता वाले डेट फंड में करीब 7.40% से 7.50% पोर्टफोलिओ यील्ड आती है। इसमें से व्यय (एक्सपेंस) काटने के बाद 7% से 7.25% का प्रतिफल मिलने का अनुमान रहता है।

बॉण्ड के भाव अगर ऊपर हुए तो रिटर्न बढ़ जाता है, वहीं अगर नीचे हुए तो रिटर्न कम हो जाता है। प्रतिफल में यह उतार-चढ़ाव महँगाई दर पर निर्भर करता है। अभी जैसे ब्याज दरें 6.5% पर हैं तो डेट फंड के निवेशकों को 7% से 7.25% प्रतिफल मिल सकता है। इसमें अगर आप साल भर बने रहे और इस बीच अगर मुद्रास्फीति नीचे आ गयी तो ब्याज दरें भी कम होंगी, इससे बॉण्ड का मूल्य बढ़ जायेगा। ऐसा होने पर निवेशकों को 8% से 9% तक का रिटर्न भी मिल सकता है।

अगर आपने ऊँची मुद्रास्फीति और ऊँची ब्याज दरों के दौर में निवेश किया है तो ब्याज दरें एवं महँगाई नीचे आने पर आपके रिटर्न में इजाफा होगा, जबकि विपरीत परिस्थिति में रिटर्न भी उल्टे हो सकते हैं। दरें अभी थोड़ा बढ़ी हुई हैं, 7.25% से 7.50% फीसदी के आस-पास हैं। कॉर्पोरेट बॉण्ड में 7.50% है, सरकारी बॉण्ड में 7.25% है। निवेशकों को उच्च मुद्रास्फीति और ब्याज दरों के इस दौर का फायदा उठाना चाहिए। थोड़े-थोड़े पैसे इसमें डालते जाएँ और 1-2 साल बाद आपको कम महँगाई और ब्याज दर में कटौती होने पर शानदार रिटर्न मिलने की उम्मीद बन सकती है।

अभी आपके सभी छह फंड डेट श्रेणी में हैं। अभी तक इनका प्रदर्शन कैसा है और आगे के लिए निवेशक क्या उम्मीद कर सकते हैं?

पिछले 6-8 महीने में निवेशकों को 6.50% से 7% तक प्रतिफल मिला है। यह अपेक्षित मुद्रास्फीति से भी 2% ज्यादा है। इस तरह निवेशकों मिल रहा रिटर्न महँगाई को मात देने के लिए काफी है। इसके अलावा, डेट फंड में यह फायदा भी है कि अगर आगे चल कर हमें लगता है कि महँगाई ऊपर जायेगी, लेकिन वो नीचे आती है तो ब्याज दरें भी नीचे आ जायेंगी। इससे आपके आज के निवेश पर रिटर्न और अच्छा हो सकता है। अगर आप आप थोड़ी लंबी अवधि के नजरिये के साथ डेट फंड में निवेश करते हैं तो आपको उतार-चढ़ाव कम मिलेगा और आपका रिटर्न भी अच्छा रहेगा। निवेशकों को मेरी सलाह है कि उन्हें छोटी अवधि के लिए निवेश करना है तो लिक्विड फंड में पैसे लगायें, जहाँ ब्याज दरों में बदलाव का असर प्रतिफल पर नहीं आयेगा। अगर आपके पास थोड़ी लंबी अवधि का समय है तो फिर इन्कम फंड, शॉर्ट टर्म फंड या बैंकिंग पीएसयू फंड में पूँजी लगायें, जहाँ ऋण जोखिम (क्रेडिट रिस्क) कम हो और जहाँ ब्याज दरों की दृश्यता बहुत ज्यादा नहीं है।

एक खुदरा निवेशक अगर अपने निवेश पोर्टफोलिओ को स्थिरता देना चाहता है और डेट वाले हिस्से में 6-8% प्रतिफल (रिटर्न) की आशा रखता है, तो उसे डेट में कहाँ पैसा लगाना चाहिए और कहाँ से निकल जाना चाहिए?

महँगाई से आम इंसान की क्रय शक्ति कम हो जाती है। अगर आप चाहते हैं कि चीजों के मूल्य ऊपर जाने पर भी आपके उपभोग का स्तर बना रहे, तो निवेश को भी उसी अनुपात में बढ़ाना चाहिए और उसमें वास्तविक बढ़ोतरी भी उसी तरह होनी चाहिए। यानी अगर मुद्रास्फीति 5% पर है तो निवेश से रिटर्न 7% तक आना चाहिए। डेट फंड में अगर आप लंबे समय तक बने रहते हैं तो महँगाई दर से 2% ज्यादा रिटर्न की उम्मीद रख सकते हैं। अपना निवेश पोर्टफोलिओ बनाते समय आपको कितनी स्थिरता चाहिए और आप कितना जोखिम ले सकते हैं, यह देखना चाहिए।

शेयर बाजार पिछले काफी समय से अच्छा चल रहा है और वहाँ रिटर्न भी ज्यादा आये हैं। इसका मतलब यह नहीं कि आप पूरा पैसा इक्विटी में ही लगा दें। आप 60% से 70% डेट में निवेश करने के बाद बची हुई पूँजी इक्विटी फंड में लगा सकते हैं। आपको अपेक्षित प्रतिफल को महँगाई से संबद्ध रखना चाहिए। मुद्रास्फीति अगर 8% है तो आपको निवेश से 10% तक के रिटर्न की उम्मीद रखनी चाहिए। वहीं, अगर महँगाई घट कर 4% या 5% पर है तो आपको 7% से 8% रिटर्न पर भी संतुष्ट रहना चाहिए क्योंकि आपका पैसा सुरक्षित है, रिटर्न भी अच्छा मिल रहा है, आप महँगाई को मात दे पा रहे हैं और जब चाहें पैसा निकालने में कोई पाबंदी नहीं है।

तो कम उतार-चढ़ाव और लगभग 6-8% के प्रतिफल (रिटर्न) की आशा के साथ इस समय खुदरा निवेशकों के लिए कहाँ बेहतर अवसर हैं?

निवेशकों को 3-6 महीने में उपयोग करने वाली पूँजी को लिक्विड फंड में रखना चाहिए। हो सकता है कि वहाँ रिटर्न कुछ कम आये, लेकिन उतार-चढ़ाव कम होगा और आप कभी भी निकाल सकते हैं। इसके बाद जो पूँजी निवेशकों को 2-3 साल बाद चाहिए, उसे कॉर्पोरेट बॉण्ड फंड, बैंकिंग ऐंड पीएसयू फंड या शॉर्ट टर्म फंड जैसी किसी भी योजना में डाल सकते हैं। ये सभी 3-5 साल की अवधि वाली प्रतिभूतियों में निवेश करते हैं। कॉर्पोरेट बॉण्ड फंड का निवेश कॉर्पोरेट बॉण्ड में अधिक और सरकारी बॉण्ड में कम होता है। बैंकिंग और पीएसयू फंड में सरकारी स्वामित्व वाले संस्थान के बॉण्ड में निवेश होता है और इन्हें ज्यादा सुरक्षित माना जाता है। इनकी भी परिपक्वता अवधि 2-3 साल के आस-पास होती है। शॉर्ट टर्म फंड में सरकारी प्रतिभूतियों और कॉर्पोरेट बॉण्ड दोनों में निवेश किया जाता है। इन तीनों फंड में उच्च गुणवत्ता वाली ट्रिपल ए रेटिंग वाली कंपनियों के बॉण्ड में पैसा लगाया जाता है।

आपने जनवरी 2021 में अपना पहला फंड शुरू किया था। एक नये फंड हाउस की नींव रखने से लेकर अभी तक की अपनी यात्रा को आप कैसे देखते हैं?

रिटेल में हमारी मौजूदगी कम थी, हमारा ज्यादातर कारोबार बड़ी कंपनियों के साथ था। अब हम म्यूचुअल फंड के जरिये रिटेल निवेशकों के पास जा रहे हैं, उनके सामने अपने उत्पाद रख रहे हैं और रिटेल निवेशकों का उत्साह हमें मिल रहा है। अभी पिछले 2-3 साल में निवेशकों का रुझान इक्विटी फंडों में रहा है, क्योंकि इन्होंने अच्छा प्रतिफल दिया है। लेकिन हमारे पास अभी इस श्रेणी में कोई पेशकश नहीं है। हम अगले छह महीने में इस श्रेणी के फंड शुरू करने वाले हैं। अगर 20-30 साल के हिसाब से देखा जाये तो दो साल का समय कुछ नहीं होता है। हमारी यात्रा अभी शुरू हुई है और काफी अच्छी चल रही है। हम लोग अभी बड़े शहरों में लोगों से, वितरकों से मिल रहे हैं। म्यूचुअल फंड उद्योग भी काफी विकसित हुआ है। यह उद्योग जहाँ 10-12 साल पहले 10 लाख करोड़ रुपये तक की प्रबंधन अधीन संपदा (एयूएम) को सँभालता था, वहीं आज 40-45 लाख करोड़ रुपये के एयूएम पहुँच गया है।

क्या आपने पहले से सोच कर यह रणनीति बनायी थी कि शुरुआत में केवल डेट फंडों में ही रहना है?

शुरू में हमने योजना बनायी थी कि हम इक्विटी और फिक्स्ड इन्कम दोनों शुरू करेंगे। फिर हमने पहले फिक्स्ड इन्कम की योजना ही लाने का इरादा किया। हम लंबी रेस के घोड़े रहे हैं, हमें तेज नहीं भागना है, हमें दूर तक जाना है। लोगों को साथ में लेकर चलना होता है तो हम लोगों को साथ में लेकर चल रहे हैं और इस दौरान हमें बहुत मजा आ रहा है।

म्यूचुअल फंडों ने क्या खरीदा, क्या बेचा : जुलाई 2023

म्यूचुअल फंडों की सबसे ज्यादा खरीदारी वाले लार्जकैप शेयर	बाजार मूल्य (क.रु.) जुलाई 2023	बाजार मूल्य (क.रु.) जून 2023	शेयर (लाख में) जुलाई 2023	शेयर (लाख में) जून 2023
यूपीएल	2812	2632	450	383
अदाणी एंटरप्राइजेज	3746	3169	150	133
जेएसडब्ल्यू स्टील	4748	4124	581	525
टाटा पावर कंपनी	2566	2185	1084	985
अदाणी पोर्ट्स और स्पेशल इकोनॉमिक जोन	4992	4334	642	586
डीएलएफ	4801	4191	925	854
कोल इंडिया	15125	14116	6598	6111
एचडीएफसी लाइफ इंश्योरेंस कंपनी	6186	5772	956	886
गोदरेज कंज्यूमर प्रोडक्ट्स	4811	4662	464	431
बजाज ऑटो	5617	4970	114	106

म्यूचुअल फंडों की सबसे ज्यादा बिकवाली वाले लार्जकैप शेयर	बाजार मूल्य (क.रु.) जुलाई 2023	बाजार मूल्य (क.रु.) जून 2023	शेयर (लाख में) जुलाई 2023	शेयर (लाख में) जून 2023
आइशर मोटर्स	4881	5809	145	162
हिंदुस्तान जिंक	45	47	14	15
हैवेल्स इंडिया	2688	2811	201	219
मैनकाइंड फार्मा	2529	2679	145	157
वरुण बेवरेजेस	2280	2457	283	306
बजाज फिनसर्व	9478	9694	593	634
टोरेंट फार्मास्युटिकल्स	3618	3595	181	189
एबीबी इंडिया	5069	5142	111	116
ओएनजीसी	18708	17533	10567	10938
डॉ. रेड्डीज लेबोरेटरीज	8459	7972	150	155

म्यूचुअल फंडों की सबसे ज्यादा खरीदारी वाले मिडकैप शेयर	बाजार मूल्य (क.रु.) जुलाई 2023	बाजार मूल्य (क.रु.) जून 2023	शेयर (लाख में) जुलाई 2023	शेयर (लाख में) जून 2023
आईआईएफएल फाइनेंस	782	391	133	77
स्टार हेल्थ ऐंड एलाइड इंश्योरेंस कंपनी	1089	586	171	100
वोडाफोन आइडिया	371	218	4466	2930
जेएसडब्ल्यू एनर्जी	62	44	22	16
प्रेस्टीज एस्टेट्स प्रोजेक्ट्स	2784	2144	473	373
इंडस टावर्स	1404	1082	816	659
स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया	1398	1041	1477	1218
बैंक ऑफ महाराष्ट्र	112	80	333	276
अरबिंदो फार्मा	4774	3578	581	492
पेट्रोनेट एलएनजी	1423	1153	609	518

म्यूचुअल फंडों की सबसे ज्यादा बिकवाली वाले मिडकैप शेयर	बाजार मूल्य (क.रु.) जुलाई 2023	बाजार मूल्य (क.रु.) जून 2023	शेयर (लाख में) जुलाई 2023	शेयर (लाख में) जून 2023
पॉलीकैब इंडिया	4285	3744	89	105
गोदरेज प्रॉपर्टीज	1023	1086	59	69
गुजरात गैस	2486	2689	515	578
सन टीवी नेटवर्क	561	495	104	113
मैक्स हेल्थकेयर इंस्टीट्यूट	5995	6549	1008	1093
पावर फाइनेंस कॉर्पोरेशन	7854	6987	3005	3236
दीपक नाइट्राइट	2251	2595	112	119
टाटा केमिकल्स	2172	2182	205	218
मदरसन सुमी वायरिंग इंडिया	3492	3649	5965	6323
पिरामल एंटरप्राइजेज	1323	1291	131	137

म्यूचुअल फंडों की सबसे ज्यादा खरीदारी वाले स्मॉलकैप शेयर	बाजार मूल्य (क.रु.) जुलाई 2023	बाजार मूल्य (क.रु.) जून 2023	शेयर (लाख में) जुलाई 2023	शेयर (लाख में) जून 2023
बोरोसिल	58		13	
बीएसई	94	16	12	3
तानला प्लेटफॉर्म्स	151	49	13	5
कर्नाटक बैंक	238	96	114	51
मंगलोर रिफाइनरी ऐंड पेट्रोकेमिकल्स	144	67	174	87
अमारा राजा बैटरीज	495	286	78	42
रेलटेल कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया	97	44	59	34
उज्जीवन फाइनेंशियल सर्विसेज	259	130	52	34
पिरामल फार्मा	180	106	173	115
ग्लेनमार्क लाइफ साइंसेज	64	36	10	6

म्यूचुअल फंडों की सबसे ज्यादा बिकवाली वाले स्मॉलकैप शेयर	बाजार मूल्य (क.रु.) जुलाई 2023	बाजार मूल्य (क.रु.) जून 2023	शेयर (लाख में) जुलाई 2023	शेयर (लाख में) जून 2023
ऐक्शन कंस्ट्रक्शन इक्विपमेंट	33	55	5	11
हिंदुस्तान कंस्ट्रक्शन कंपनी	60	125	308	621
इलेक्ट्रोस्टील कास्टिंग्स	30	55	51	92
स्टायलम इंडस्ट्रीज	91	140	6	9
ड्रीमफोक्स सर्विसेज	182	216	23	33
इंटेलेक्ट डिजाइन अरीना	287	377	43	60
ग्रैन्यूल्स इंडिया	317	366	98	123
हैपिएस्ट माइंड्स टेक्नोलॉजीज	84	112	9	11
आरबीएल बैंक	1307	1304	573	717
आईडीएफसी	2565	2754	2160	2681

स्मॉलकैप में है जोरदार तेजी, क्या खरीदने का है सही समय?

स्मॉलकैप की तेजी और इस श्रेणी के फंडों के लिए निवेशकों के उमड़ा प्रेम से अधिकतर निवेशकों के मन में एक सीधा प्रश्न खड़ा होता है – क्या अब खरीद ले स्मॉलकैप?

बाजार में इस समय स्मॉलकैप को लेकर एक जबरदस्त उफान का माहौल दिख रहा है। स्मॉलकैप शेयरों में जबरदस्त तेजी है और उसी अनुरूप स्मॉलकैप फंडों के प्रति भी निवेशकों का आकर्षण काफी बढ़ा हुआ है। एम्फी के आँकड़ों से पता चलता है कि अभी जुलाई 2023 के महीने में सभी इक्विटी फंड श्रेणियों में सबसे ज्यादा 4,171 करोड़ रुपये का शुद्ध निवेश प्रवाह (नेट इन्फ्लो) स्मॉलकैप फंडों में आया है। इससे पहले जून में भी स्मॉलकैप फंड श्रेणी में 5,472 करोड़ रुपये का शुद्ध निवेश प्रवाह आया था, जबकि बाकी कई बड़ी इक्विटी फंड श्रेणियों में से उस दौरान निवेशकों ने पैसे निकाले।

स्मॉलकैप शेयरों और इस श्रेणी के फंडों का हाल का प्रदर्शन देख कर निवेशकों का यह उत्साह समझ में आता है। जुलाई 2023 के अंत में स्मॉलकैप श्रेणी का एक वर्ष औसत प्रतिफल (रिटर्न) 26% रहा है। इस दौरान निफ्टी स्मॉलकैप 100 टीआरआई ने 28.50% और बीएसई स्मॉलकैप टीआरआई ने 30.47% की तेजी दिखायी है। वहीं इस दौरान लार्जकैप श्रेणी के फंडों का औसत प्रतिफल 16.10% और मिडकैप श्रेणी का औसत 21.85% रहा है।

यहाँ इस बात को भी समझ लें कि स्मॉलकैप का मतलब क्या है? भारत के शेयर बाजार में जितने शेयर सूचीबद्ध हैं, उनमें बाजार पूँजी (मार्केट कैप) के अनुसार सबसे बड़े 100 शेयरों को लार्जकैप कहा जाता है, इसके बाद वाले 150 शेयरों को मिडकैप कहा जाता है और इन 250 शेयरों से नीचे जितने भी शेयर हैं, उन सभी को स्मॉलकैप कहा जाता है।

आम धारणा है कि स्मॉलकैप जब चलते हैं, तो बाजार से बहुत ज्यादा तेजी दिखाते हैं। इसके चलते इक्विटी म्यूचुअल फंडों में स्मॉलकैप फंड एक लोकप्रिय श्रेणी है। अपनी श्रेणी के सभी फंडों की कुल प्रबंधन अधीन संपदा (एयूएम) के आधार पर इक्विटी फंडों में स्मॉलकैप छठी सबसे बड़ी श्रेणी है। फोलिओ संख्या के आधार पर सबसे बड़ी श्रेणी फ्लेक्सीकैप (1.28 करोड़) के बाद स्मॉलकैप 1.23 करोड़ फोलिओ के साथ दूसरी सबसे बड़ी श्रेणी है।

तो खरीद लें स्मॉलकैप?

स्मॉलकैप की तेजी और इस श्रेणी के फंडों के लिए निवेशकों के उमड़ा प्रेम से अधिकतर निवेशकों के मन में एक सीधा प्रश्न खड़ा होता है – क्या अब खरीद ले स्मॉलकैप? यह प्रश्न सीधे स्मॉलकैप शेयर खरीदने को लेकर भी हो सकता है, और स्मॉलकैप फंड की यूनिटें खरीदने को लेकर भी। तो पहली बात यह याद रखें कि जब भी मोटे तौर पर शेयर बाजार या इसके किसी हिस्से में बहुत तेज चाल आ चुकी हो, तो उस समय वहाँ एकमुश्त बड़ी राशि का निवेश करने में समझदारी नहीं होती है। लेकिन व्यवस्थित निवेश योजना (एसआईपी) यदि पहले से चल रही हो तो उसे बिना रोके लगातार चलाते रहना सही है। और एसआईपी शुरू करने का भी सही समय हमेशा एक ही होता है – आज ही।

दूसरी बात यह कि स्मॉलकैप एक बहुत बड़ा समूह है। एक व्यक्तिगत निवेशक के रूप में आप इसमें सही शेयर चुन कर उसमें सही मात्रा में निवेश कर सकेंगे, इसकी संभावना आम तौर पर कम रहती है। इसलिए यदि स्मॉलकैप शेयरों की तेजी का लाभ उठाना है, तो अधिकांश निवेशकों के लिए म्यूचुअल फंड ही इसका सही रास्ता है, जहाँ विशेषज्ञ फंड मैनेजर स्मॉलकैप शेयरों का गहराई से अध्ययन करके नपा-तुला जोखिम लेते हैं। आप पैसिव फंड यानी किसी स्मॉलकैप सूचकांक (इंडेक्स) पर आधारित इंडेक्स फंड या ईटीएफ भी चुन सकते हैं।

इसके बाद, यह भी ध्यान रखना चाहिए कि आपके पूरे इक्विटी पोर्टफोलिओ में अभी स्मॉलकैप कितने प्रतिशत है और नये निवेश के बाद वह कितनी हो जायेगी। इस बारे में मूलमंत्र यह है कि पूरे पोर्टफोलिओ में इक्विटी का हिस्सा, और इक्विटी में से स्मॉलकैप का हिस्सा आपकी जोखिम सहने की क्षमता पर निर्भर करता है। निवेश सलाहकारों का मानना है कि सामान्य रूप से आपके इक्विटी पोर्टफोलिओ में स्मॉलकैप का हिस्सा 10-15% से अधिक नहीं होना चाहिए। यदि आप अधिक जोखिम लेना ही चाहते हैं, तो भी किसी सूरत में 20-25% से ऊपर स्मॉलकैप का हिस्सा रखने को समझदारी नहीं कहा जायेगा।

निवेशक शिक्षा और जागरूकता के लिए एक पहल

अस्वीकरण (डिस्क्लेमर) : निवेशकों को केवल पंजीकृत यूचुअल फंडों के साथ लेन-देन करना चाहिए, जिनके विवरणों की पुष्टि सेबी की वेबसाइट (https://www.sebi.gov.in) पर Intermediaries/Market Infrastructure Institutions वाले भाग में की जा सकती है। कृपया एक बार केवाईसी (नो योर कस्टमर) प्रक्रिया पूरी करने और पते, फोन नंबर, बैंक विवरण आदि में बदलाव के लिए यूचुअल फंडों की वेबसाइट देखें। निवेशक पंजीकृत इंटरमीडियरी के विरुद्ध शिकायतें https://www.scores.gov.in पर दर्ज करा सकते हैं, यदि वे उनके उत्तरों से असंतुष्ट हों। स्कोर्स आपको सेबी में ऑनलाइन शिकायत दर्ज कराने और बाद में उसकी स्थिति देखने की सुविधा उपलब्ध कराता है। **यूचुअल फंड निवेश बाजार जोखिमों के अधीन हैं, कृपया योजना से संबंधित सभी दस्तावेज सावधानी से पढ़ें।**

म्यूचुअल फंड योजनाओं का प्रदर्शन

	एयूएम (करोड़ रु)*	एनएवी (रु.) (31.7.2023)	1 माह (%)	6 माह (%)	1 साल (%)	3 साल (%)	5 साल (%)	10 साल (%)
फ्लेक्सीकैप								
जेएम फ्लेक्सी कैप फंड	397.41	65.92	5.40	21.49	26.96	28.93	15.24	18.53
एचडीएफसी फ्लेक्सी कैप फंड	36345.36	1309.88	4.41	15.31	25.04	32.85	15.64	17.85
क्वांट फ्लेक्सी कैप फंड	1611.61	70.21	6.12	14.89	24.42	37.66	21.30	23.90
पराग पारिख फ्लेक्सी कैप फंड	37699.02	57.06	3.36	17.78	22.39	25.00	17.99	19.06
फ्रैंकलिन इंडिया फ्लेक्सी कैप फंड	11136.95	1137.18	5.40	15.86	21.66	28.83	13.87	17.06
बैंक ऑफ इंडिया फ्लेक्सी कैप फंड	369.35	22.56	6.11	16.89	20.45	28.96		
महिंद्रा मैनुलाइफ फ्लेक्सी कैप फंड	995.18	12.02	4.04	18.46	19.84			
नावी फ्लेक्सी कैप फंड	222.58	18.54	4.98	16.34	19.82	23.26	12.40	
एचएसबीसी फ्लेक्सी कैप फंड	3416.38	149.35	4.73	16.82	19.30	23.34	10.64	15.85
इन्वेस्को इंडिया फ्लेक्सी कैप फंड	1029.69	11.93	3.11	16.39	18.71			
मल्टीकैप इक्विटी								
निप्पॉन इंडिया मल्टीकैप फंड	17440.71	202.51	6.57	24.17	31.33	39.13	17.11	18.18
आईटीआई मल्टी कैप फंड	595.28	16.32	4.82	19.03	23.82	19.47		
आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल मल्टीकैप फंड	7972.04	542.94	4.79	18.36	22.95	28.21	13.40	17.06
महिंद्रा मनुलाइफ मल्टी कैप फंड	1844.92	24.16	5.23	20.01	22.85	29.76	17.05	
इन्वेस्को इंडिया मल्टीकैप फंड	2586.64	90.44	5.36	15.96	21.20	26.43	12.77	19.21
बड़ौदा बीएनपी पारिबा मल्टी कैप फंड	1804.71	196.60	3.89	15.30	20.31	27.81	14.37	15.48
क्वांट ऐक्टिव फंड	4787.09	494.03	6.27	14.09	20.24	34.00	22.07	22.98
आदित्य बिड़ला सन लाइफ मल्टी कैप फंड	4110.62	14.17	4.04	17.01	17.99			
सुंदरम मल्टी कैप फंड	1985.70	267.85	4.36	15.17	15.70	26.49	13.12	17.93
एसबीआई मल्टीकैप फंड	12518.66	11.77	3.56	12.14	12.94			
लार्जकैप इक्विटी								
निप्पॉन इंडिया लार्ज कैप फंड	14769.25	64.57	4.75	18.88	25.24	30.06	14.10	17.51
एचडीएफसी टॉप 100 फंड	24819.04	855.24	4.15	15.10	21.87	26.22	12.98	15.59
आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल ब्लूचिप फंड	38734.11	77.38	4.60	13.43	20.59	23.61	13.36	15.55
इडेलवाइज लार्ज कैप फंड	500.74	63.77	3.42	15.17	20.00	21.70	11.97	14.82
डीएसपी टॉप 100 इक्विटी फंड	2900.93	334.52	4.33	15.00	18.83	19.41	9.63	12.39
एसबीआई ब्लू चिप फंड	38338.04	71.62	2.60	14.17	18.57	23.86	12.77	16.29
जेएम लार्ज कैप फंड	46.94	113.92	3.91	12.18	18.38	18.19	11.50	12.87
टाटा लार्ज कैप फंड	1557.13	379.62	3.50	13.89	17.08	23.11	11.88	13.61
सुदरम लार्जकैप फंड	3061.90	16.94	4.02	13.41	17.07			
बड़ौदा बीएनपी पारिबा लार्ज कैप फंड	1458.28	160.97	4.21	13.33	16.96	20.24	13.11	15.17
लार्ज ऐंड मिडकैप इक्विटी								
मोतीलाल ओसवाल लार्ज ऐंड मिडकैप फंड	1829.16	19.99	3.08	18.89	27.71	28.59		
एचडीएफसी लार्ज ऐंड मिड कैप फंड	9843.55	235.96	5.88	19.87	25.31	32.61	15.93	14.04
बंधन कोर इक्विटी फंड	2672.92	84.98	5.33	16.58	24.73	27.82	12.96	15.04
टाटा लार्ज ऐंड मिड कैप फंड	4638.99	406.51	4.11	16.45	24.17	25.84	15.87	16.83
यूटीआई कोर इक्विटी फंड	1793.49	119.90	5.38	17.86	23.50	29.05	13.56	14.75
आईसीआईसीआई प्रू. लार्ज ऐंड मिड कैप फंड	8582.19	667.63	5.40	15.32	22.75	31.81	15.96	16.53
एसबीआई लार्ज ऐंड मिडकैप फंड	12609.11	448.20	3.89	15.62	22.61	29.64	15.89	18.55
कोटक इक्विटी अपॉर्चुनिटीज फंड	13765.53	239.91	5.05	17.76	21.99	25.76	15.23	17.54
क्वांट लार्ज ऐंड मिड कैप फंड	901.61	82.05	6.66	13.76	21.13	27.03	17.16	21.34
निप्पॉन इंडिया विज़न फंड	3366.40	967.42	4.29	17.65	20.49	26.55	12.82	15.54
मिडकैप								
एचडीएफसी मिड कैप अपॉर्चुनिटीज फंड	42731.64	125.66	5.60	23.44	35.07	36.35	16.98	22.50
टॉरस डिस्कवरी (मिड कैप) फंड	88.41	92.34	6.04	21.56	28.77	28.07	15.03	20.60
निप्पॉन इंडिया ग्रोथ फंड	16353.16	2584.09	4.83	21.39	27.26	34.35	18.49	20.28
क्वांट मिड कैप फंड	2188.28	155.96	8.96	17.50	26.36	38.67	21.76	17.37
मोतीलाल ओसवाल मिड कैप फंड	4959.72	59.20	1.66	18.15	26.10	37.59	17.44	
महिंद्रा मनुलाइफ मिड कैप फंड	1295.06	21.30	5.83	22.22	25.73	31.77	16.90	
टाटा मिड कैप ग्रोथ फंड	2143.02	296.64	6.70	23.31	24.42	30.73	17.43	21.52
फ्रैंकलिन इंडिया प्राइमा फंड	8363.12	1775.66	4.22	18.71	23.31	27.89	12.84	19.40
इन्वेस्को इंडिया मिड कैप फंड	3150.25	103.55	3.58	18.22	23.30	27.88	16.19	21.41
सुंदरम मिड कैप फंड	7975.51	866.41	5.19	19.73	22.62	29.85	11.97	19.41

म्यूचुअल फंड योजनाओं का प्रदर्शन

	एयूएम (करोड़ रु)*	एनएवी (रु.) (31.7.2023)	1 माह (%)	6 माह (%)	1 साल (%)	3 साल (%)	5 साल (%)	10 साल (%)
स्मॉलकैप								
एचडीएफसी स्मॉल कैप फंड	18999.05	100.64	7.33	27.13	41.82	43.89	17.64	21.06
क्वांट स्मॉल कैप फंड	5565.26	173.97	8.29	21.79	39.90	51.01	27.64	17.30
फ्रैंकलिन इंडिया स्मॉलर कंपनीज फंड	8576.90	119.25	5.98	26.34	36.00	42.05	15.71	22.62
निप्पॉन इंडिया स्मॉल कैप फंड	31945.15	115.69	6.16	26.32	35.82	47.29	22.29	29.30
टाटा स्मॉल कैप फंड	5233.48	28.27	4.61	20.17	35.31	41.73		
एचएसबीसी स्मॉल कैप फंड	10129.41	57.95	5.75	22.95	30.22	44.83	16.80	
आईटीआई स्मॉल कैप फंड	1294.70	17.40	5.10	23.82	29.67	27.29		
डीएसपी स्मॉल कैप फंड	10763.85	140.26	7.70	25.18	28.15	39.70	19.20	25.85
सुंदरम स्मॉल कैप फंड	2342.50	179.79	4.70	20.92	27.97	38.63	14.80	21.52
इन्वेस्को इंडिया स्मॉल कैप फंड	2106.02	26.00	5.48	20.76	27.64	36.65		
ईएलएसएस								
एसबीआई लॉन्ग टर्म इक्विटी फंड	14429.84	283.92	5.83	21.07	28.66	27.27	14.95	16.35
बंधन टैक्स एडवांटेज (ईएलएसएस) फंड	4776.49	117.50	5.13	17.78	23.64	32.91	15.43	18.69
मोतीलाल ओसवाल लॉन्ग टर्म इक्विटी फंड	2457.18	31.42	2.49	17.64	23.52	24.94	11.55	
एचडीएफसी टैक्स सेवर फंड	10930.27	929.99	3.98	15.36	23.23	27.56	12.36	15.79
बैंक ऑफ इंडिया टैक्स एडवांटेज फंड	791.83	114.97	5.75	17.14	22.23	27.22	15.44	17.77
फ्रैंकलिन इंडिया टैक्सशील्ड फंड	5028.51	1024.87	5.38	15.89	21.96	28.04	12.72	16.22
जेएम टैक्स गेन फंड	84.33	33.39	2.76	19.12	21.75	26.43	14.20	17.99
टॉरस टैक्सशील्ड	64.19	133.04	2.59	13.55	21.34	20.22	10.51	14.49
कोटक टैक्स सेवर फंड	3855.26	85.76	4.46	15.42	20.41	25.83	14.98	17.52
आईटीआई लॉन्ग टर्म इक्विटी फंड	188.45	16.08	3.19	15.39	20.15	19.36		
वैल्यू ऐंड कॉन्ट्रा								
जेएम वैल्यू फंड	187.76	66.94	7.57	23.60	36.23	30.97	15.54	19.20
एसबीआई कॉन्ट्रा फंड	11865.28	268.42	6.11	19.93	29.11	39.80	19.48	17.42
एचएसबीसी वैल्यू फंड	8555.34	71.26	6.48	17.55	27.72	29.10	14.06	20.21
आईटीआई वैल्यू फंड	134.28	12.04	5.37	18.87	27.46			
आदित्य बिड़ला सन लाइफ प्योर वैल्यू फंड	4303.67	88.22	7.28	21.22	26.63	29.35	9.01	18.71
टेम्पलटन इंडिया वैल्यू फंड	1135.98	514.34	5.45	17.09	26.63	35.49	14.24	16.36
आईसीआईसीआई प्रू. वैल्यू डिस्कवरी फंड	30705.23	316.40	5.82	14.33	26.33	30.17	16.65	20.18
बंधन स्टर्लिंग वैल्यू फंड	6122.31	109.69	5.70	19.39	25.63	40.45	14.94	19.26
टाटा इक्विटी पीई फंड	5776.86	244.41	4.83	18.56	25.59	23.82	11.45	19.19
केनरा रोबेको वैल्यू फंड	880.06	13.20	3.77	17.23	24.18			
फोकस्ड फंड								
एचडीएफसी फोकस्ड 30 फंड	5308.30	150.96	3.82	14.73	25.09	31.85	14.21	17.00
जेएम फोकस्ड फंड	48.15	14.10	4.01	18.02	23.84	22.13	8.79	15.90
आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल फोकस्ड इक्विटी फंड	4543.85	60.34	6.05	16.85	22.59	25.73	14.72	15.55
360 वन फोकस्ड इक्विटी फंड	4085.48	34.95	2.72	15.68	22.45	26.12	18.53	
क्वांट फोकस्ड फंड	313.27	65.30	6.46	16.60	22.38	27.22	14.91	19.75
महिंद्रा मनुलाइफ फोकस्ड फंड	773.68	18.26	6.19	14.94	21.68			
सुंदरम फोकस्ड फंड	876.23	124.53	4.30	17.25	20.09	23.74	14.29	16.14
फ्रैंकलिन इंडिया फोकस्ड इक्विटी फंड	9070.26	79.23	3.68	13.36	20.01	30.02	15.03	19.19
टाटा फोकस्ड इक्विटी फंड	1329.93	17.30	4.58	14.18	18.19	24.51		
एचएसबीसी फोकस्ड फंड	1408.82	18.27	5.04	17.11	17.48	22.43		
इंटरनेशनल इक्विटी								
इन्वेस्को इंडिया - इन्वेस्को पैन यूरोपियन इक्विटी फंड ऑफ फंड	34.98	15.87	4.62	8.93	32.02	16.92	6.31	
मोतीलाल ओसवाल नैस्डैक 100 ईटीएफ	6424.00	126.42	5.42	31.79	28.48	17.48	20.52	21.46
निप्पॉन इंडिया इक्विटी फंड	585.95	9.00	3.79	25.50	27.34			
एचएसबीसी ब्राजील फंड	37.97	7.60	6.36	13.79	25.53	2.57	0.39	-1.17
सुंदरम ग्लोबल ब्रांड फंड	127.09	27.54	4.06	16.26	23.99	13.21	10.03	6.97
इन्वेस्को इंडिया - इन्वेस्को ग्लोबल इक्विटी इन्कम फंड ऑफ फंड	17.22	21.29	5.20	11.92	23.98	18.04	10.08	
डीएसपी वर्ल्ड एनर्जी फंड	184.55	16.44	5.46	-9.21	23.29	16.06	14.05	7.17
आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल यूएस ब्लूचिप इक्विटी फंड	2770.17	54.53	5.60	14.44	22.93	17.55	16.12	14.83
इडेलवाइज यूरोप डायनामिक इक्विटी ऑफशोर फंड	85.31	16.67	2.17	4.45	22.80	12.01	7.22	
मिरेइ एसेट ग्रेट कंज्यूमर फंड	2463.55	68.81	2.58	19.73	21.87	27.01	14.89	18.24

म्यूचुअल फंड योजनाओं का प्रदर्शन

	एयूएम (करोड़ रु)*	एनएवी (रु.) (31.7.2023)	1 माह (%)	6 माह (%)	1 साल (%)	3 साल (%)	5 साल (%)	10 साल (%)
मल्टी एसेट एलोकेशन								
आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल मल्टी एसेट फंड	19973.74	534.82	4.66	12.25	22.96	27.04	16.12	17.00
क्वांट मल्टी एसेट फंड	842.53	95.14	4.99	9.36	20.17	29.66	22.31	14.12
यूटीआई मल्टी एसेट फंड	921.53	51.68	2.58	13.89	19.11	13.07	8.87	9.17
निप्पॉन इंडिया मल्टी एसेट फंड	1303.00	15.17	4.32	11.21	16.82			
एसबीआई मल्टी एसेट एलोकेशन फंड	936.61	43.53	3.32	11.96	16.67	12.87	10.97	10.62
टाटा मल्टी एसेट अपॉर्चुनिटीज फंड	1666.13	17.81	3.43	10.78	16.07	18.35		
एचडीएफसी मल्टी एसेट फंड	1840.19	54.45	2.59	9.63	14.08	16.09	11.29	11.17
मोतीलाल ओसवाल मल्टी एसेट फंड	113.00	11.82	3.20	8.45	10.45			
ऐक्सिस मल्टी एसेट एलोकेशन फंड	1453.77	31.21	2.18	9.42	7.15	13.88	10.00	9.96
आदित्य बिड़ला सन लाइफ मल्टी एसेट एलोकेशन फंड	2175.15	11.11	2.65	11.13				
डायनामिक एसेट एलोकेशन								
एचडीएफसी बैलेंस्ड एडवांटेज फंड	57778.88	368.03	4.58	13.84	23.42	27.81	14.46	16.87
एसबीआई बैलेंस्ड एडवांटेज फंड	22654.44	11.97	3.03	11.43	16.74			
बड़ौदा बीएनपी पारिबा बैलेंस्ड एडवांटेज फंड	3220.05	18.58	2.03	11.54	16.09	15.78		
मोतीलाल ओसवाल बैलेंस एडवांटेज फंड	632.70	17.47	5.36	16.61	15.83	9.31	7.37	
आदित्य बिड़ला सन लाइफ बैलेंस्ड एडवांटेज फंड	6641.14	82.45	2.26	9.70	13.38	14.69	10.07	11.96
टाटा बैलेंस्ड एडवांटेज फंड	7108.97	16.69	2.62	9.93	13.21	14.66		
इडेलवाइज बैलेंस्ड एडवांटेज फंड	9247.25	40.07	2.59	10.72	13.19	15.60	11.06	11.95
बैंक ऑफ इंडिया बैलेंस्ड एडवांटेज फंड	100.24	20.46	2.94	10.02	13.15	12.10	6.15	
महिंद्रा मनुलाइफ बैलेंस्ड एडवांटेज फंड	590.26	11.11	2.97	10.79	12.83			
पीजीआईएम इंडिया बैलेंस्ड एडवांटेज फंड	1412.58	12.70	1.93	10.63	12.49			
इंडेक्स फंड एवं ईटीएफ								
निप्पॉन इंडिया ईटीएफ निफ्टी पीएसयू बैंक बीज	1204.55	51.37	12.27	15.75	66.16	49.13	7.76	7.24
कोटक निफ्टी पीएसयू बैंक ईटीएफ	977.33	460.29	12.27	15.74	66.12	49.01	7.62	7.17
मिरेइ एसेट एनवाईएसई फैंग+ ईटीएफ	1583.07	65.46	4.79	50.28	51.83			
भारत 22 ईटीएफ	11621.76	71.37	6.90	24.72	41.59	40.63	14.88	
सीपीएसई ईटीएफ	21819.14	47.75	7.82	24.96	40.53	40.08	11.99	
कोटक निफ्टी मिडकैप 50 ईटीएफ	10.63	109.20	7.01	25.53	32.67			
ऐक्सिस निफ्टी मिड कैप 50 इंडेक्स फंड	56.93	13.00	6.76	24.92	31.22			
मोतीलाल ओसवाल नैसडैक 100 ईटीएफ	6424.00	126.42	5.42	31.79	28.48	17.48	20.52	21.46
मोतीलाल ओसवाल निफ्टी स्मॉलकैप 250 इंडेक्स फंड	351.48	24.61	7.70	22.24	28.46	36.72		
निप्पॉन इंडिया निफ्टी स्मॉलकैप 250 इंडेक्स फंड	501.73	22.16	7.64	22.18	28.40			
गोल्ड ईटीएफ								
एचडीएफसी गोल्ड एक्सचेंज ट्रेडेड फंड	3658.73	52.19	2.01	4.70	14.63	2.86	13.84	6.69
इन्वेस्को इंडिया गोल्ड एक्सचेंज ट्रेडेड फंड	94.55	5290.29	2.48	3.15	14.59	2.92	14.14	6.71
यूटीआई गोल्ड एक्सचेंज ट्रेडेड फंड	779.56	50.81	2.51	3.19	14.59	2.48	13.76	6.60
कोटक गोल्ड ईटीएफ	2625.37	50.76	2.10	2.03	14.51	3.55	13.89	6.99
ऐक्सिस गोल्ड ईटीएफ फंड	797.13	50.80	2.47	4.93	14.47	2.97	14.04	6.42
एसबीआई गोल्ड ईटीएफ	2994.02	52.20	2.47	3.09	14.45	2.83	14.01	6.66
आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल गोल्ड ईटीएफ	2877.43	52.04	2.46	4.17	14.44	2.84	13.90	6.53
क्वांटम गोल्ड फंड	162.09	50.45	2.47	3.06	14.43	2.69	13.85	6.58
आदित्य बिड़ला सन लाइफ गोल्ड ईटीएफ	611.07	53.52	2.37	3.08	14.40	2.98	14.07	6.69
निप्पॉन इंडिया ईटीएफ गोल्ड बीज	7613.38	50.63	2.45	4.05	14.15	2.48	13.75	6.62
रिटायरमेंट फंड								
एचडीएफसी रिटायरमेंट सेविंग्स फंड - इक्विटी प्लान	3336.99	37.35	5.09	19.91	28.02	32.49	17.27	
आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल रिटायरमेंट फंड - प्योर इक्विटी	297.86	20.55	7.20	19.20	22.69	29.24		
एचडीएफसी रिटायरमेंट सेविंग्स फंड - हाइब्रिड-इक्विटी	1077.45	30.24	3.96	16.10	21.49	22.55	13.41	
निप्पॉन इंडिया रिटायरमेंट फंड - वेल्थ क्रिएशन	2484.48	20.72	5.62	18.57	21.47	23.86	8.60	
एसबीआई रिटायरमेंट बेनिफिट फंड - एग्रेसिव प्लान	1569.34	15.83	2.86	15.65	20.07			
आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल रिटायरमेंट फंड - हाइब्रिड एग्रेसिव	191.85	17.46	6.20	16.56	19.84	19.94		
एसबीआई रिटायरमेंट बेनिफिट फंड - एग्रेसिव हाइब्रिड प्लान	1040.82	14.95	2.48	13.31	17.45			
टाटा रिटायरमेंट सेविंग्स फंड - रेगुलर प्रोग्रेसिव	1426.62	47.60	4.51	16.83	16.65	17.19	9.50	15.47
टाटा रिटायरमेंट सेविंग्स फंड - रेगुलर मॉडरेट	1684.21	48.08	4.07	15.30	16.05	16.08	9.36	15.42
आदित्य बिड़ला सन लाइफ रिटायरमेंट फंड - द थर्टीज प्लान	294.23	14.98	6.05	15.95	15.58	15.91		

संपदा-सृजन की राह : निवेशक शिक्षा के लिए आदित्य बिड़ला सन लाइफ म्यूचुअल फंड की पहल

तिरंगे में भी हैं वित्तीय स्वतंत्रता के सूत्र!

अपने राष्ट्रीय झंडे को हम जरा ध्यान से देखें तो हमें अपनी वित्तीय स्वतंत्रता के भी कई सूत्र मिल सकते हैं। एक नागरिक के रूप में हमें अपने संविधान से जो स्वतंत्रताएँ मिली है, उनका जीवन के हर चरण में अच्छी तरह आनंद उठा सकने के लिए हमारा वित्तीय रूप से स्वतंत्र होना भी बहुत आवश्यक है।

हमारे राष्ट्रीय झंडे के तीन रंग विविधता के बीच एकता का संकेत देते हैं। क्या यही बात हमारे निवेशों पर लागू नहीं होती? हम अक्सर पढ़ते-सुनते हैं कि निवेश में विविधीकरण (डाइवर्सिफिकेशन) रखने से ही हमारा निवेश जोखिमों से सुरक्षित रह कर हमें अपने वित्तीय लक्ष्यों की ओर ले जा सकता है। जैसे अगर कहें कि झंडे के तीन रंगों की तरह आपके निवेश में तीन तरह की संपत्तियाँ होनी चाहिए – इक्विटी, डेट और अन्य जैसे भूसंपत्ति, सोना-चाँदी वगैरह। जब आपके इन सब तरह के निवेशों के बीच एक अच्छा सामंजस्य होगा, तो आपकी आर्थिक स्थिति पटरी पर रहेगी और आप अपनी इच्छा के अनुसार जीवन जीने के लिए स्वतंत्र रहेंगे। अपने निवेशों में विविधता रख कर आप किसी भी संकट का आसानी से सामना कर सकेंगे।

केसरिया बल भरने वाला : हमारे झंडे में केसरिया रंग साहस, बलिदान और त्याग की भावना का प्रतिनिधित्व करता है। वित्तीय स्वतंत्रता के संदर्भ में केसरिया सोच-समझ कर जोखिम लेने और दीर्घकालिक निवेश करने के लिए आवश्यक साहस का प्रतीक है। निवेशकों को बाजार के उतार-चढ़ाव का सामना करने और अपने वित्तीय लक्ष्यों के प्रति प्रतिबद्ध रहने का साहस रखना चाहिए। वित्तीय स्वतंत्रता प्राप्त करने में अक्सर भविष्य की सुरक्षा और समृद्धि के लिए तात्कालिक संतुष्टि का त्याग भी करना होता है।

सादा है सच्चाई : झंडे में सफेद पट्टी पवित्रता, शांति और सच्चाई का प्रतीक है। इस श्वेत रंग की शुद्धता और सच्चाई वित्तीय योजना एवं निवेश में ईमानदारी एवं पारदर्शिता की ओर ले जाती है। वित्तीय स्वतंत्रता प्राप्त करना नैतिक और वैध तरीकों पर आधारित होना चाहिए। यह सच्चे वित्तीय व्यवहारों के महत्व और धोखाधड़ी या अनैतिक योजनाओं से बचने पर जोर देता है।

हरी हमारी धरती की अंगड़ाई : हरा रंग विकास, उर्वरता और शुभता को दिखाता है। यह रंग समृद्धि का प्रतिनिधित्व करता है, जो वित्तीय स्वतंत्रता का मुख्य लक्ष्य है। निवेशकों का लक्ष्य समझदारी वाले निवेश, संपत्ति आवंटन (एसेट एलोकेशन) और वित्तीय योजना (फाइनेंशियल प्लानिंग) के माध्यम से समय के साथ अपनी संपत्ति बढ़ाना है। यह रंग याद दिलाता है कि आप बुद्धिमानी से अपने निवेश का प्रबंधन करें तो आप धन-धान्य से संपन्न रहेंगे।

प्रगति का चक्र : अशोक चक्र में दिखती पवित्रता और निरंतर प्रगति को आप वित्तीय स्वतंत्रता के नैतिक और जिम्मेदार दृष्टिकोण से जोड़ सकते हैं। तिरंगे का अशोक चक्र हमें लगातार प्रगति करने और अपनी वित्तीय रणनीतियों को अपनाने के महत्व को भी बताता है।

इस चक्र की चौबीस तीलियाँ हमें यह भी समझाती हैं कि आप वित्तीय रूप से स्वतंत्र तब होते हैं, जब आप काम करें या न करें, पर आपका पैसा लगातार चौबीसों घंटे काम करता रहे। यह तभी संभव है, जब आपके पास एक पर्याप्त कोष इकट्ठा हो और आप अच्छे संपदा आवंटन के साथ उनका सही निवेश करें।

म्यूचुअल फंड बन रहा जरिया

म्यूचुअल फंडों के माध्यम से आप जो निवेश करते हैं, वे भी तिरंगे के अलग-अलग पक्षों की तरह आपको वित्तीय स्वतंत्रता की ओर ले जाते हैं। तिरंगे के तीन रंग विविधीकरण को दिखा रहे हैं, और म्यूचुअल फंड भी इक्विटी, डेट, हाइब्रिड एवं अन्य श्रेणियों के हैं, जिनके जरिये काफी अच्छी तरह विविधीकरण करके अपने जोखिमों को बाँट सकते हैं।

साहस भरने वाला केसरिया रंग आपसे कहता है कि आप हर तरह की स्थितियों में बिना डरे अपने एसआईपी के जरिये लगातार निवेश करते रहें। श्वेत रंग पारदर्शिता का प्रतीक है, जिसमें म्यूचुअल फंड बहुत सारे अन्य संपत्ति वर्गों से काफी आगे दिखता है, क्योंकि यहाँ आपका पैसा कहाँ लगा है से लेकर हर दिन उसके वर्तमान मूल्य (एनएवी) तक सब कुछ आपके सामने होता है। और फिर चक्र तो बताता ही है कि म्यूचुअल फंडों में निरंतर निवेशित रहने से आपके धन में चक्रवृद्धि (कंपाउंडिंग) होती है, क्योंकि यहाँ आपका पैसा चौबीसों घंटे काम करता है। इस तरह आप म्यूचुअल फंडों के रास्ते से बड़ी सहजता से हरियाली यानी समृद्धि की ओर बढ़ सकते हैं और अपने लिए लंबी अवधि में धन सृजन कर सकते हैं।

An Investor education and Awareness initiative of Aditya Birla Sun Life Mutual Fund.
All investors have to go through a one-time KYC (Know Your Customer) process. Investors to invest only with SEBI registered Mutual Funds. For further information on KYC, list of SEBI registered Mutual Funds and redressal of complaints including details about SEBI SCORES portal, visit link : https://mutualfund.adityabirlacapital.com/Investor-Education/education/kyc-and-redressal for further details.
Mutual Fund investments are subject to market risks, read all scheme related documents carefully.

विलासिता आवास खंड में खूब बढ़े दाम सस्ते आवासों की कीमतें 15% बढ़ीं

पहले कमजोर चल रहे विलासिता आवास (लक्जरी होम) खंड के लिए कोरोना महामारी किसी वरदान से कम नहीं रही है। कोरोना आने के बाद इस आवासीय खंड की बिक्री और नयी आपूर्ति कई गुना बढ़ गयी है। ऐसे में कीमतों को भी माँग के अनुरूप बढ़ना ही था।

अचल संपत्ति सेवा कंपनी एनारॉक रिसर्च की एक रिपोर्ट के अनुसार शीर्ष 7 शहरों में विभिन्न बजट खंडों में औसत मूल्य रुझानों का विश्लेषण करने पर पता चलता है कि विलासिता आवासों के औसत मूल्य में पिछले पाँच वर्षों में 24% की वृद्धि दर्ज की गयी है, जो अन्य सभी बजट खंडों से ज्यादा है। 2018 में शीर्ष 7 शहरों में विलासिता आवासों की कीमतें औसतन लगभग 12,400 रुपये प्रति वर्ग फुट थीं, जो कि 2023 में बढ़ कर लगभग 15,350 रुपये प्रति वर्ग फुट हो गयी हैं।

शीर्ष 7 शहरों में से हैदराबाद में बीते पाँच सालों में विलासिता आवासों की औसत कीमतों में 42% की उच्चतम वृद्धि दर्ज की गयी। हैदराबाद में विलासिता आवासों की कीमत 2018 में लगभग 7,450 रुपये प्रति वर्ग फुट से 2023 की पहली छमाही में बढ़ कर लगभग 10,580 रुपये प्रति वर्ग फुट तक पहुँच गयी। इस दौरान बेंगलूरु और मुंबई महानगर क्षेत्र (एमएमआर) में इस आवासीय खंड में 27% की दूसरी सबसे अधिक औसत मूल्य वृद्धि दर्ज की गयी। बेंगलुरु में 2018 में विलासिता घरों की औसत कीमत 10,210 रुपये प्रति वर्ग फुट थी, जो इस समय बढ़ कर 12,970 रुपये प्रति वर्ग फुट हो गयी है। उधर एमएमआर में 2018 में 1.5 करोड़ रुपये की श्रेणी वालों आवासों की औसत कीमत 23,119 रुपये प्रति वर्ग फुट थी, जबकि वर्तमान में यह उछल कर 29,260 रुपये प्रति वर्ग फुट हो गयी है।

इसके उलट 40 लाख रुपये से कम कीमत वाले सस्ते आवासों (एफोर्डेबल हाउस) की कीमतों में इसी अवधि में 15% की हल्की वृद्धि दर्ज की गयी। शीर्ष 7 शहरों में इस श्रेणी की औसत कीमत 2018 में 3,750 रुपये प्रति वर्ग फुट थी, जबकि वर्तमान में यह औसत कीमत 4,310 रुपये प्रति वर्ग फुट है।

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (एनसीआर) में इस श्रेणी में उच्चतम 19% की औसत मूल्य वृद्धि दर्ज की गयी। यहाँ 2018 में सस्ते आवासों की कीमत 3,120 रुपये प्रति वर्ग फुट थी, जो 2023 की पहली छमाही में बढ़ कर 3,700 रुपये प्रति वर्ग फुट हो गयी। वहीं इन किफायती घरों की कीमतों में वृद्धि के मामले में दूसरा नंबर हैदराबाद का रहा, जहाँ कीमतों में 16% की वृद्धि दर्ज की गयी। हैदराबाद में 2018 में सस्ते घरों की कीमत 3,460 रुपये प्रति वर्ग फुट से बढ़ कर 2023 की पहली छमाही में 4,000 रुपये वर्ग फुट हो गयी।

शीर्ष 7 शहरों में औसत मूल्य वृद्धि (रु./वर्ग फुट) : 2018 बनाम 2023

आवासीय खंड	2018	2023	% वृद्धि
सस्ते आवास (40 लाख रु. से कम)	3,750	4,310	14.9%
मध्य एवं प्रीमियम (40 लाख से 1.5 करोड़ रु.)	6,050	7,120	17.7%
विलासिता आवास (1.5 करोड़ रु. से अधिक)	12,400	15,350	23.8%

सभी बजट श्रेणियों में औसत मूल्य वृद्धि (%) : 2018 बनाम 2023

शहर	सस्ते आवास	मध्य एवं प्रीमियम	विलासिता
एनसीआर	19%	17%	22%
कोलकाता	14%	17%	12%
एमएमआर	15%	17%	27%
पुणे	12%	15%	19%
हैदराबाद	16%	23%	42%
चेन्नई	15%	16%	15%
बेंगलूरु	13%	20%	27%
शीर्ष 7 शहरों का औसत	15%	18%	24%

एनारॉक समूह के अध्यक्ष अनुज पुरी के अनुसार, विलासिता आवासों की बेहद मजबूत बिक्री रही और उसके अनुरूप अच्छी आपूर्ति भी रही है। इसके चलते विलासिता श्रेणी के आवासों कीमतों में सबसे अधिक वृद्धि देखी गयी है। इससे पहले के वर्षों में इस खंड में आवासीय कीमतों में काफी स्थिरता रही थी। ध्यान देने की बात है कि पिछले पाँच सालों में कीमतों में कुल 24% की वृद्धि हुई है। महामारी से पहले 2019 में इस खंड की बिक्री एकदम ठहरी हुई थी और तब कीमतों में बहुत मामूली वृद्धि हो रही थी। इसके उलट सस्ते आवासों के खंड में कोविड-19 से पहले सबसे बेहतर स्थिति थी, उसमें अब बिक्री धीमी हुई है, जो इसकी औसत मूल्य वृद्धि से भी नजर आ रहा है।

इस समय शीर्ष 7 शहरों में सभी आवास श्रेणियों में औसत कीमत एमएमआर में सबसे अधिक है। एमएमआर में इस समय 1.5 करोड़ रुपये से अधिक कीमत वाले घरों की औसत कीमत लगभग 29,260 रुपये प्रति वर्ग फुट है। वहीं किफायती खंड में कीमत लगभग 5,630 रुपये प्रति वर्ग फुट और मध्य एवं प्रीमियम खंड में 12,022 रुपये प्रति वर्ग फुट है। दिलचस्प बात यह है कि आवासों की ऊँची कीमतों के मामले में चेन्नई दूसरे नंबर पर है। चेन्नई में विलासिता आवासों की कीमत इस समय लगभग 15,250 रुपये प्रति वर्ग फुट, मध्य कीमत वाले घरों की कीमत 6,450 रुपये प्रति वर्ग फुट और किफायती घरों की कीमत 4,400 रुपये प्रति वर्ग फुट है।

वहीं एनसीआर में विलासिता श्रेणी में घरों की औसत कीमत 14,500 रुपये प्रति वर्ग फुट है, जबकि मध्य श्रेणी में 6,424 रुपये प्रति वर्ग फुट और सस्ते आवासों की कीमत 3,700 रुपये प्रति वर्ग फुट है। बेंगलूरु में 2023 में विलासिता आवासों की औसत कीमत 12,970 रुपये प्रति वर्ग फुट, मध्य खंड में 6,035 रुपये प्रति वर्ग फुट और किफायती श्रेणी में 4,250 रुपये प्रति वर्ग फुट है।

पुणे में विलासिता आवासों की औसत कीमत 12,470 रुपये प्रति वर्ग फुट, मध्य खंड में 7,578 रुपये प्रति वर्ग फुट और सस्ते आवासों में 4,846 रुपये प्रति वर्ग फुट है। शीर्ष 7 शहरों में मध्य खंड आवास श्रेणी में एमएमआर के बाद पुणे में आवासों की औसत सबसे अधिक है। कोलकाता में विलासिता आवासों की औसत कीमत 12,420 रुपये प्रति वर्ग फुट, मध्य खंड में 5,580 रुपये प्रति वर्ग फुट और किफायती श्रेणी में 3,347 रुपये प्रति वर्ग फुट है। मध्य और किफायती खंड में कोलकाता में घरों की कीमत सबसे कम है।

बढ़ती ब्याज दरों से घटी सस्ते आवास की माँग

बी. के. झा

भारत के आवासीय अचल संपत्ति बाजार में सस्ते आवास (एफोर्डेबल हाउसिंग) पर कोविड-19 महामारी का सबसे अधिक नकारात्मक प्रभाव पड़ा। अन्य क्षेत्रों के उलट पिछले दो वर्षों में यह क्षेत्र इससे अब तक नहीं उबर पाया है। इस क्षेत्र में खरीदारी का फैसला करने वालों की संख्या तेजी से घट रही है। इसके नतीजे में सस्ते आवास की बिक्री कम हो रही है और इसके मद्देनजर डेवलपरों ने भी आपूर्ति भी कम कर दी है।

प्रमुख अचल संपत्ति सेवा कंपनी एनारॉक की एक रिपोर्ट में बताया गया है कि जनवरी से जून 2023 की छमाही में कुल बिक्री (सेल्स) में सस्ते आवास की हिस्सेदारी घट कर 20% रह गयी, जो 2022 की समान अवधि की तुलना में 11% की गिरावट है। इसी तरह शीर्ष 7 शहरों में 2023 की पहली छमाही में आवासों की कुल आपूर्ति (सप्लाई) में इस खंड की हिस्सेदारी गिर कर 18% रह गयी, जबकि 2022 की पहली छमाही में यह 23% थी।

सस्ते आवासों की बिक्री और आपूर्ति को एक और चीज ने प्रभावित किया, और वह है बढ़ती ब्याज दरें। दरअसल पिछले दो वर्षों में सस्ते आवास के खरीदारों की ईएमआई में लगभग 20% का इजाफा देखने को मिला है। दरअसल 30 लाख रुपये तक के आवास ऋण (होम लोन) के लिए फ्लोटिंग ब्याज दरें 2021 के मध्य में 6.7% के आस-पास थीं, जो बढ़ कर इस समय लगभग 9.15% हो गयी हैं। ब्याज दरों में वृद्धि भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) द्वारा रेपो दर में लगभग 250 आधार अंकों (2.50% अंक) की बढ़ोतरी के कारण हुई है, जो बीते दो सालों में 4% से बढ़ कर 6.50% पर पहुँच गयी है। यह स्थिति रेपो दर और फ्लोटिंग होम लोन दरों के बीच सीधे संबंध को दर्शाती है।

एनारॉक ग्रुप के क्षेत्रीय निदेशक और प्रमुख (रिसर्च) प्रशांत ठाकुर के अनुसार जो आवास ऋण ग्राहक जुलाई 2021 में लगभग 22,700 रुपये की ईएमआई का भुगतान कर रहे थे, उन्हें इस समय लगभग 27,300 रुपये की ईएमआई का भुगतान करना पड़ रहा है। यह ईएमआई में लगभग 4,600 रुपये प्रति माह की वृद्धि है। ईएमआई में इस 20% की वृद्धि के चलते उनके

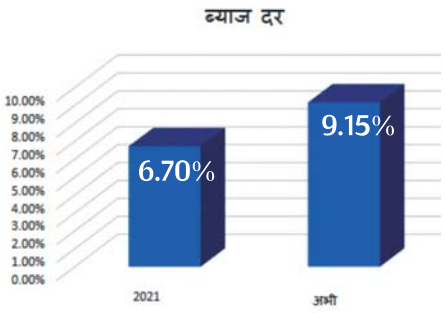

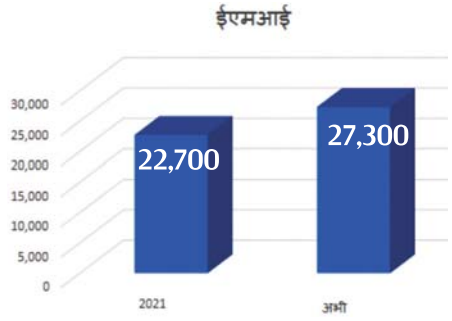

एनारॉक की एक रिपोर्ट में बताया गया है कि जनवरी से जून 2023 की छमाही में कुल बिक्री (सेल्स) में सस्ते आवास की हिस्सेदारी घट कर 20% रह गयी, जो 2022 की समान अवधि की तुलना में 11% की गिरावट है।

ऋण के कुल ब्याज वाले हिस्से में लगभग 11 लाख रुपये की बढ़ोतरी हुई है। यानी 2021 की ब्याज दरों के आधार पर कर्जदारों को जहाँ 24.5 लाख रुपये का ब्याज देना होता, मगर अब लगभग 35.5 लाख रुपये का ब्याज देना होगा। ऐसे में 20 साल की अवधि में कुल देय ब्याज मूल राशि से भी अधिक हो जायेगा।

मान लें कोई खरीदार 40 लाख रुपये से कम की संपत्ति खरीदना चाहता है, और लोन-टू-वैल्यू (एलटीवी) अनुपात को ध्यान में रखते हुए 20 वर्षों की अवधि के लिए उसकी कुल उधार ली गयी राशि 30 लाख रुपये है। इस मामले में, खरीदार ने वर्ष 2021 में 22,700 रुपये की ईएमआई का भुगतान किया होगा, जब ब्याज दरें लगभग 6.7% थीं।

ठाकुर के अनुसार इस दर पर, बैंक को कुल पुनर्भुगतान (रीपेमेंट) लगभग 54.5 लाख रुपये रहा होगा, जिसमें ब्याज लगभग 24.5 लाख रुपये रहा होगा, जो कि कुल मूल राशि से कम है। आज, जब होम लोन की ब्याज दरें लगभग 9.15% हैं, तो ईएमआई लगभग 27,300 रुपये होगी। इस दर पर बैंक को कुल पुनर्भुगतान लगभग 65.5 लाख रुपये का होगा, जिसमें ब्याज वाला हिस्सा लगभग 35.5 लाख रुपये होगा, जो कि कुल मूल राशि से अधिक है।

आवास ऋण की संरचना ऐसी होती है कि शुरुआती वर्षों में ज्यादातर भुगतान ब्याज का होता है। जब अधिक भुगतान मूलधन के बजाय ब्याज के रूप में जा रहा हो, तो आवास के खरीदार को उसके अधिक हिस्से का मालिक बनने में अधिक समय लगेगा। इसका मतलब यह भी है कि अगर वे संपत्ति बेचते हैं तो उनके पास कीमत में बढ़ोतरी का लाभ पाने का अवसर कम हो जाता है, क्योंकि उन्होंने कम मूलधन का ही भुगतान किया होगा।

यदि आवास ऋण पर ब्याज मूलधन से अधिक है तो यह व्यक्तिगत कर्जदारों के अलावा आवासीय बाजार के लिए भी अच्छा संकेत नहीं है। इस मामले को अगले केंद्रीय बजट में या उससे भी पहले एक केंद्रित नीतिगत हस्तक्षेप के जरिये सुधारने की आवश्यकता होगी, ताकि सस्ते आवास की श्रेणी और अधिक पटरी से न उतरे।

शीर्ष 7 शहरों में महामारी के बाद से बिक्री लगातार गिर रही है, पर इसमें सुधार हो सकता है। ताजा एनारॉक रिसर्च के अनुसार, कुल आवासीय बिक्री में सस्ते आवास की हिस्सेदारी 2023 की पहली छमाही में घट कर लगभग 20% रह गयी है, जो 2022 की इसी अवधि में 31% थी। वर्ष 2023 की पहली छमाही में शीर्ष 7 शहरों में बेची गयी कुल लगभग 2.29 लाख इकाइयों में से केवल 20% या लगभग 46,650 इकाइयाँ सस्ते आवास की थीं। इसके मुकाबले 2022 की पहली छमाही में बेची गयी लगभग 1.84 लाख इकाइयों में से 31% से अधिक या लगभग 57,060 इकाइयाँ सस्ते आवास की श्रेणी की थीं।

ओएनजीसी (कंसोलिडेटेड)

(करोड़ रु.)	अप्रैल-जून 2023	अप्रैल-जून 2022	वृद्धि
आमदनी	163,824	182,894	-10%
शुद्ध लाभ	16,857	7,546	123%

ऑयल इंडिया (कंसो.)

(करोड़ रु.)	अप्रैल-जून 2023	अप्रैल-जून 2022	वृद्धि
आमदनी	6,208	9,038	-31%
शुद्ध लाभ	1,304	3,141	-58%

हिंदुस्तान पेट्रोलियम (कंसो.)

(करोड़ रु.)	अप्रैल-जून 2023	अप्रैल-जून 2022	वृद्धि
आमदनी	119,162	114,502	4%
शुद्ध लाभ	6,066	-10,235	159%

कोल इंडिया (कंसो.)

(करोड़ रु.)	अप्रैल-जून 2023	अप्रैल-जून 2022	वृद्धि
आमदनी	35,983	35,092	2%
शुद्ध लाभ	7,964	8,858	-10%

हिंडाल्को (कंसो.)

(करोड़ रु.)	अप्रैल-जून 2023	अप्रैल-जून 2022	वृद्धि
आमदनी	52,991	58,018	-8%
शुद्ध लाभ	2,452	4,116	-40%

एनएमडीसी (कंसो.)

(करोड़ रु.)	अप्रैल-जून 2023	अप्रैल-जून 2022	वृद्धि
आमदनी	5,395	4,767	13%
शुद्ध लाभ	1,661	1,468	13%

सेल (कंसो.)

(करोड़ रु.)	अप्रैल-जून 2023	अप्रैल-जून 2022	वृद्धि
आमदनी	24,359	24,029	1%
शुद्ध लाभ	149	661	-77%

जिंदल स्टील (कंसो.)

(करोड़ रु.)	अप्रैल-जून 2023	अप्रैल-जून 2022	वृद्धि
आमदनी	12,588	13,045	-3%
शुद्ध लाभ	1,692	2,771	-38%

ग्रासिम (कंसो.)

(करोड़ रु.)	अप्रैल-जून 2023	अप्रैल-जून 2022	वृद्धि
आमदनी	31,065	28,042	10%
शुद्ध लाभ	2,576	2,705	-4%

टाटा पावर (कंसो.)

(करोड़ रु.)	अप्रैल-जून 2023	अप्रैल-जून 2022	वृद्धि
आमदनी	15,213	14,495	4%
शुद्ध लाभ	790	81	875%

टोरंट पावर (कंसो.)

(करोड़ रु.)	अप्रैल-जून 2023	अप्रैल-जून 2022	वृद्धि
आमदनी	7,328	6,510	12%
शुद्ध लाभ	532	502	5%

एनएचपीसी (कंसो.)

(करोड़ रु.)	अप्रैल-जून 2023	अप्रैल-जून 2022	वृद्धि
आमदनी	2,757	2,785	-1%
शुद्ध लाभ	1,095	1,053	3%

अदाणी पावर (कंसो.)

(करोड़ रु.)	अप्रैल-जून 2023	अप्रैल-जून 2022	वृद्धि
आमदनी	11,006	13,723	-19%
शुद्ध लाभ	8,759	4,780	83%

अदाणी एंटरप्राइजेज (कंसो.)

(करोड़ रु.)	अप्रैल-जून 2023	अप्रैल-जून 2022	वृद्धि
आमदनी	25,438	40,844	-37%
शुद्ध लाभ	718	411	74%

अदाणी पोर्ट्स (कंसो.)

(करोड़ रु.)	अप्रैल-जून 2023	अप्रैल-जून 2022	वृद्धि
आमदनी	6,248	4,638	34%
शुद्ध लाभ	2,195	986	122%

अदाणी विल्मर (स्टैंड.)

(करोड़ रु.)	अप्रैल-जून 2023	अप्रैल-जून 2022	वृद्धि
आमदनी	12,379	14,024	-11%
शुद्ध लाभ	-38	170	-122%

आईटीसी (कंसो.)

(करोड़ रु.)	अप्रैल-जून 2023	अप्रैल-जून 2022	वृद्धि
आमदनी	17,164	18,489	-7%
शुद्ध लाभ	5,180	4,462	16%

डाबर इंडिया (कंसो.)

(करोड़ रु.)	अप्रैल-जून 2023	अप्रैल-जून 2022	वृद्धि
आमदनी	3,130	2,822	10%
शुद्ध लाभ	457	441	3%

कान्साई नेरोलैक (कंसो.)

(करोड़ रु.)	अप्रैल-जून 2023	अप्रैल-जून 2022	वृद्धि
आमदनी	2,157	2,051	5%
शुद्ध लाभ	734	152	382%

पीआई इंडस्ट्रीज (कंसो.)

(करोड़ रु.)	अप्रैल-जून 2023	अप्रैल-जून 2022	वृद्धि
आमदनी	1,910	1,543	23%
शुद्ध लाभ	378	259	45%

पिडिलाइट इंड. (कंसो.)

(करोड़ रु.)	अप्रैल-जून 2023	अप्रैल-जून 2022	वृद्धि
आमदनी	3,275	3,101	5%
शुद्ध लाभ	475	354	34%

पेज इंडस्ट्रीज (स्टैंड.)

(करोड़ रु.)	अप्रैल-जून 2023	अप्रैल-जून 2022	वृद्धि
आमदनी	1,240	1,341	-7%
शुद्ध लाभ	158	207	-23%

ट्रेंट (कंसो.)

(करोड़ रु.)	अप्रैल-जून 2023	अप्रैल-जून 2022	वृद्धि
आमदनी	2,628	1,803	45%
शुद्ध लाभ	140	81	72%

गोदरेज कंज्यूमर (कंसो.)

(करोड़ रु.)	अप्रैल-जून 2023	अप्रैल-जून 2022	वृद्धि
आमदनी	3,449	3,125	10%
शुद्ध लाभ	319	345	-7%

आईआरसीटीसी (स्टैंड.)

(करोड़ रु.)	अप्रैल-जून 2023	अप्रैल-जून 2022	वृद्धि
आमदनी	1,002	853	17%
शुद्ध लाभ	232	246	-5%

इन्फो एज (कंसो.)

(करोड़ रु.)	अप्रैल-जून 2023	अप्रैल-जून 2022	वृद्धि
आमदनी	626	547	14%
शुद्ध लाभ	169	356	-52%

जोमैटो (स्टैंड.)

(करोड़ रु.)	अप्रैल-जून 2023	अप्रैल-जून 2022	वृद्धि
आमदनी	1,420	1,132	25%
शुद्ध लाभ	276	-138	300%

एसबीआई (कंसो.)

(करोड़ रु.)	अप्रैल-जून 2023	अप्रैल-जून 2022	वृद्धि
आमदनी	101,460	76,781	32%
शुद्ध लाभ	18,736	7,528	148%

बैंक ऑफ बड़ौदा (कंसो.)

(करोड़ रु.)	अप्रैल-जून 2023	अप्रैल-जून 2022	वृद्धि
आमदनी	28,003	19,984	40%
शुद्ध लाभ	4,302	2,139	101%

इंडियन ओवरसीज बैंक (कंसो.)

(करोड़ रु.)	अप्रैल-जून 2023	अप्रैल-जून 2022	वृद्धि
आमदनी	5,427	4,436	22%
शुद्ध लाभ	504	393	28%

एलआईसी इंडिया (स्टैंड.)

(करोड़ रु.)	अप्रैल-जून 2023	अप्रैल-जून 2022	वृद्धि
आमदनी	189,300	168,071	12%
शुद्ध लाभ	9,544	683	1297%

एलआईसी हाउसिंग (कंसो.)

(करोड़ रु.)	अप्रैल-जून 2023	अप्रैल-जून 2022	वृद्धि
आमदनी	6,759	5,296	27%
शुद्ध लाभ	1,319	927	42%

जीआईसी (कंसो.)

(करोड़ रु.)	अप्रैल-जून 2023	अप्रैल-जून 2022	वृद्धि
आमदनी	11,166	12,646	-11%
शुद्ध लाभ	950	709	33%

पावर फाइनेंस (कंसो.)

(करोड़ रु.)	अप्रैल-जून 2023	अप्रैल-जून 2022	वृद्धि
आमदनी	20,992	18,532	13%
शुद्ध लाभ	5,982	4,580	30%

मुथूट फाइनेंस (कंसो.)

(करोड़ रु.)	अप्रैल-जून 2023	अप्रैल-जून 2022	वृद्धि
आमदनी	3,472	2,788	24%
शुद्ध लाभ	1,045	825	26%

आईआरएफसी (स्टैंड.)

(करोड़ रु.)	अप्रैल-जून 2023	अप्रैल-जून 2022	वृद्धि
आमदनी	6,679	5,627	18%
शुद्ध लाभ	1,557	1,662	-6%

भारती एयरटेल (कंसो.)

(करोड़ रु.)	अप्रैल-जून 2023	अप्रैल-जून 2022	वृद्धि
आमदनी	37,440	32,805	14%
शुद्ध लाभ	930	2,306	-59%

टाइटन कंपनी (कंसो.)

(करोड़ रु.)	अप्रैल-जून 2023	अप्रैल-जून 2022	वृद्धि
आमदनी	11,897	9,443	25%
शुद्ध लाभ	756	790	-4%

जी एंटरटेनमेंट (कंसो.)

(करोड़ रु.)	अप्रैल-जून 2023	अप्रैल-जून 2022	वृद्धि
आमदनी	1,984	1,846	7%
शुद्ध लाभ	-54	107	-150%

सन फार्मा (कंसो.)

(करोड़ रु.)	अप्रैल-जून 2023	अप्रैल-जून 2022	वृद्धि
आमदनी	11,941	10,762	10%
शुद्ध लाभ	2,013	2,096	-3%

ल्युपिन (कंसो.)

(करोड़ रु.)	अप्रैल-जून 2023	अप्रैल-जून 2022	वृद्धि
आमदनी	4,814	3,744	28%
शुद्ध लाभ	453	-87	620%

डिविस लैब्स (कंसो.)

(करोड़ रु.)	अप्रैल-जून 2023	अप्रैल-जून 2022	वृद्धि
आमदनी	1,778	2,255	-21%
शुद्ध लाभ	356	702	-49%

अपोलो हॉस्पिटल (कंसो.)

(करोड़ रु.)	अप्रैल-जून 2023	अप्रैल-जून 2022	वृद्धि
आमदनी	4,418	3,796	16%
शुद्ध लाभ	168	336	-50%

वोल्टास (कंसो.)

(करोड़ रु.)	अप्रैल-जून 2023	अप्रैल-जून 2022	वृद्धि
आमदनी	3,360	2,768	21%
शुद्ध लाभ	160	140	14%

सीजी कंज्यूमर (कंसो.)

(करोड़ रु.)	अप्रैल-जून 2023	अप्रैल-जून 2022	वृद्धि
आमदनी	1,877	1,863	0.75%
शुद्ध लाभ	122	126	-3%

भारत फोर्ज (कंसो.)

(करोड़ रु.)	अप्रैल-जून 2023	अप्रैल-जून 2022	वृद्धि
आमदनी	3,877	2,851	35%
शुद्ध लाभ	211	163	29%

ट्यूब इन्वेस्टमेंट (कंसो.)

(करोड़ रु.)	अप्रैल-जून 2023	अप्रैल-जून 2022	वृद्धि
आमदनी	3,898	3,799	2%
शुद्ध लाभ	284	256	10%

एचएएल (कंसो.)

(करोड़ रु.)	अप्रैल-जून 2023	अप्रैल-जून 2022	वृद्धि
आमदनी	3,915	3,622	8%
शुद्ध लाभ	810	607	33%

हीरो मोटोकॉर्प (कंसो.)

(करोड़ रु.)	अप्रैल-जून 2023	अप्रैल-जून 2022	वृद्धि
आमदनी	8,851	8,448	4%
शुद्ध लाभ	795	607	30%

एमऐंडएम (कंसो.)

(करोड़ रु.)	अप्रैल-जून 2023	अप्रैल-जून 2022	वृद्धि
आमदनी	33,892	28,412	19%
शुद्ध लाभ	3,423	1,918	78%

आइशर मोटर्स (कंसो.)

(करोड़ रु.)	अप्रैल-जून 2023	अप्रैल-जून 2022	वृद्धि
आमदनी	3,986	3,397	17%
शुद्ध लाभ	818	577	41%

एमआरएफ (कंसो.)

(करोड़ रु.)	अप्रैल-जून 2023	अप्रैल-जून 2022	वृद्धि
आमदनी	6,440	5,696	13%
शुद्ध लाभ	589	124	375%

संवर्धन मदरसन (कंसो.)

(करोड़ रु.)	अप्रैल-जून 2023	अप्रैल-जून 2022	वृद्धि
आमदनी	22,462	17,615	27%
शुद्ध लाभ	625	180	247%

कमिंस (कंसो.)

(करोड़ रु.)	अप्रैल-जून 2023	अप्रैल-जून 2022	वृद्धि
आमदनी	2,218	1,696	30%
शुद्ध लाभ	288	166	73%

सेबी ने लगाया सीएमडी और सीएफओ पर प्रतिबंध, शंकर शर्मा ने क्या दी सफाई?

ब्राइटकॉम ग्रुप में करोड़ों का गोलमाल : सेबी का अंतरिम आदेश

राग बाजारी
राजीव रंजन झा

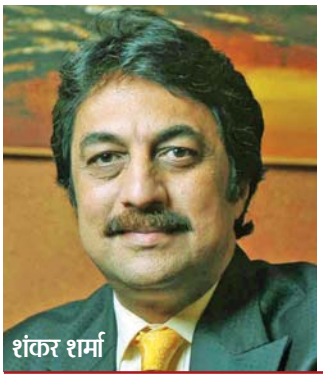
शंकर शर्मा

ब्राइटकॉम ग्रुप लिमिटेड या बीजीएल पर सेबी की जाँच की आँच अब शेयर बाजार के जाने-माने चेहरे शंकर शर्मा तक भी पहुँच गयी है। हालाँकि शंकर शर्मा ने सेबी को सारी जानकारी सौंप देने की सफाई पेश की है।

सुरेश रेड्डी

बाजार नियामक सेबी ने अपने एक ताजा आदेश में कहा है कि इसने ब्राइटकॉम ग्रुप के शेयरों के तरजीही (प्रेफरेंशियल) इश्यू के मामले में अनियमितताएँ पायी हैं। इस मामले में अपने अंतरिम आदेश में सेबी ने ब्राइटकॉम के सीएमडी सुरेश कुमार रेड्डी और सीएफओ नारायण राजू को कंपनी के बोर्ड में रहने पर प्रतिबंध लगा दिया है। इन दोनों को अगले आदेश तक सिक्योरिटीज मार्केट यानी प्रतिभूति बाजार में किसी भी तरह का लेन-देन करने से भी रोक दिया गया है। इस मामले में सेबी ने फर्स्ट ग्लोबल के वाइस चेयरमैन एवं जेएमडी शंकर शर्मा और 21 अन्य लोगों या निकायों पर भी यह प्रतिबंध लगाया है कि वे अगले आदेश तक ब्राइटकॉम के अपने शेयर बेच नहीं सकेंगे।

फिलहाल, आरोपों और संदेहों के आधार पर यह मामला शेयरों के प्रेफरेंशियल इश्यू के माध्यम से पैसों की हेराफेरी या राउंड ट्रिपिंग का लग रहा है। सेबी के अनुसार शंकर शर्मा और अन्य लोगों या निकायों को प्रेफरेंशिल शेयरों को जारी करने से जितना पैसा ब्राइटकॉम ग्रुप को मिला हुआ दिखाया गया, वास्तव में उतने पैसे ब्राइटकॉम ग्रुप के खातों में नहीं आये। सेबी को संदेह है कि जिन निवेशकों को प्रेफरेंशियल शेयर जारी किये गये, उनसे मिली राशि में से कुछ हिस्सा क्या वापस उन्हें किसी और तरीके से लौटा दिया गया?

पैसा घुमाने का संदेह

बीजीएल ने 2020-21 और 2021-22 के दो वित्त-वर्षों में चार बार तरजीही (प्रेफरेंशियल) इश्यू के जरिये शेयरों और वारंटों को जारी करके कुल 867.78 करोड़ रुपये जुटाये थे। इन प्रेफरेंशियल इश्युओं के 82 आवंटियों में एक नाम शंकर शर्मा का भी है। बीजीएल ने शंकर शर्मा को 37.77 रुपये के भाव पर 1.50 करोड़ वारंट जारी किये थे, यानी इसमें उनका कुल निवेश 56.66 करोड़ रुपये का था। ये वारंट 9 मार्च 2022 को शेयरों में परिवर्तित (कन्वर्ट) किये गये। शंकर शर्मा को यह आवंटन चौथे एवं अंतिम प्रेफरेंशियल इश्यू में किया गया था।

इस मामले में राउंड ट्रिपिंग या सेबी के शब्दों में 'स्ट्रक्चर्ड सर्कुलेशन ऑफ फंड्स' (संरचित तरीके से पैसा घुमाने का काम) किस तरह से किया गया? सेबी का आरोप है कि बीजीएल ने जिन निकायों या एंटिटी (यानी कंपनी या कोई व्यक्ति) को प्रेफरेंशियल इश्यू में शेयरों या वारंट जारी करके पैसा जुटाया, वे सीधे या परोक्ष तरीके से कंपनी से जुड़े हुए थे। फिर वह पैसा बीजीएल की सब्सीडियरी कंपनियों को कर्ज के रूप में दे दिया गया। उसमें से काफी बड़ी राशि का हिसाब मेल नहीं खा रहा है और सेबी को यह संदेह है कि प्रेफरेंशियल इश्यू का पैसा आवंटियों को ही किसी तरीके से लौटा दिया गया। कुछ पैसा कंपनी के प्रमोटर को हस्तांतरित किया गया, जो प्रेफरेंशियल इश्यू का उद्देश्य नहीं था। प्रमोटर ने वह पैसा आगे किनको दिया, इसकी भी जाँच सेबी कर रहा है।

सेबी ने अपने आदेश के पैरा 8 में बताया है कि बीजीएल ने इन प्रेफरेंशियल इश्युओं के 22 आवंटियों (एलॉटी) को 25.77 शेयर 245.24 करोड़ रुपये में जारी किये गये थे, लेकिन कंपनी को केवल 52.51 करोड़ रुपये मिले। बाकी 192.73 करोड़ रुपये की राशि या तो कंपनी को मिली ही नहीं, या सहायक कंपनियों और बिचौलियों (कॉन्डुइट) को शामिल कर लेन-देन के कई स्तरों के माध्यम से उक्त आवंटियों को वापस लौटा दी गयी। बाकी 60 आवंटियों के मामले में सेबी अभी छानबीन कर ही रहा है।

शंकर शर्मा का नाम कैसे?

इन 22 आवंटियों में शंकर शर्मा का भी नाम है। सेबी के अनुसार बीजीएल को शंकर शर्मा से 56.66 करोड़ रुपये मिलने थे। बीजीएल ने सेबी को जो विवरण सौंपे थे, उनमें 56.66 करोड़ रुपये की पूरी राशि अक्टूबर-नवंबर 2021 और मार्च 2022 में चार अलग-अलग भुगतान के जरिये मिलने की जानकारी दी गयी। बताया गया कि ये भुगतान अबूधाबी कमर्शियल बैंक के चार अलग-अलग चेक नंबरों से हुए। लेकिन बीजीएल ने सेबी के बार-बार माँगने पर भी इन भुगतानों के दस्तावेजी प्रमाण नहीं दिये।

बीजीएल के बैंक खातों की जाँच में सेबी ने पाया कि शंकर शर्मा के इंडसइंड बैंक खाते से बीजीएल को जुलाई से नवंबर 2022 के बीच अलग-अलग तारीखों में 25.79 करोड़ रुपये का भुगतान किया गया। ये पैसे बीजीएल के इक्विटास फाइनेंस बैंक एवं एचडीएफसी बैंक में मौजूद खातों में गये। इसके अलावा, शंकर शर्मा ने सेबी को जानकारी दी कि उन्होंने वारंट की आवेदन राशि के रूप में 14.19 करोड़ रुपये बीजीएल के एचडीएफसी बैंक खाते में जमा किये थे।

लेकिन इसे जोड़ने के बाद भी शंकर शर्मा की ओर से बीजीएल को 56.66 करोड़ रुपये के बदले केवल 39.98 करोड़ रुपये के भुगतान का ही विवरण मिलता है। इस तरह 16.67 करोड़

रुपये की कमी रह गयी। इस आधार पर सेबी का मानना है कि बीजीएल ने शंकर शर्मा से मिली राशि के बारे में झूठी जानकारी दी थी। वहीं बीजीएल ने शंकर शर्मा से मिले भुगतानों की तारीखें 29 अक्टूबर 2021 से 9 मार्च 2022 तक की बतायीं, लेकिन उसके बैंक खातों में शंकर शर्मा से मिले भुगतान की तारीखें 11 जुलाई 2022 से 28 नवंबर 2022 तक की हैं।

सेबी के आदेश के एक दिन बाद बुधवार, 23 अगस्त को शंकर शर्मा ने एक ट्वीट में कहा, 'हमने 37.7 रुपये के भाव पर 1.5 करोड़ शेयरों के लिए कुल 56.65 करोड़ रुपये की राशि भेजने (रेमिटेंस) के सभी आवश्यक मिलान किये हुए आँकड़े (रीकन्साइल्ड डेटा) आज सेबी को सौंप दिये हैं। इसमें जो देरी हुई, वह कंपनी (ब्राइटकॉम) की ओर से बैंक के मिलान किये हुए आँकड़े लंबित रहने के चलते हुई। हम आशा करते हैं कि यह मामला जल्द निपट जायेगा।'

473 करोड़ रुपये कहाँ गये

सेबी ने कहा है कि ब्राइटकॉम ग्रुप ने इस प्रेफरेंशियल इश्यू से मिलने वाली राशि का जो उपयोग बताया था, वास्तव में उन मदों पर वह पैसा खर्च नहीं किया गया। उस पैसे का अधिकांश हिस्सा ब्राइटकॉम की सब्सीडियरी कंपनियों को कर्ज के तौर पर दिया गया। उसमें भी जितनी राशि का कर्ज देना दिखाया गया, उतना पैसा वास्तव में उन सब्सीडियरी कंपनियों को दिया नहीं गया, तो फिर वह पैसा कहाँ गया?

ब्राइटकॉम ग्रुप को प्रेफरेंशियल इश्यू से 867.78 करोड़ रुपये की राशि मिली थी। कंपनी ने सेबी को बताया कि इसमें से 824 करोड़ रुपये का कर्ज इसकी दो पूर्ण स्वामित्व वाली या होलली ओन्ड सब्सीडियरी कंपनियों को दिया गया। इनमें से एक सब्सीडियरी एलआईएल प्रोजेक्ट्स प्राइवेट लिमिटेड को 506 करोड़ रुपये दिये जाने की बात बतायी गयी। लेकिन एलआईएल के खातों की जाँच करने पर सेबी ने देखा कि एलआईएल को केवल 257 करोड़ रुपये मिले। दूसरी सब्सीडियरी वाईरीच मीडिया प्राइवेट लिमिटेड को 318 करोड़ रुपये देने की बात कही गयी थी। लेकिन सेबी ने पाया कि असल में इस सब्सीडियरी को केवल 93 करोड़ 75 लाख रुपये दिये गये। दोनों को मिला लें तो कुल 350.75 करोड़ रुपये होते हैं। मतलब यह कि 473.25 करोड़ रुपये कहाँ गये, इसका हिसाब नहीं है।

आगे इन दोनों सब्सीडियरी के खातों की जाँच में सेबी ने यह भी पाया कि कर्ज की राशि के उपयोग का जो विवरण दिया गया, उसमें भारी

गोलमाल है। ब्राइटकॉम ग्रुप ने सेबी को सौंपे दस्तावेजों में इन सब्सीडियरी कंपनियों द्वारा कर्ज के इस्तेमाल का जो विवरण दिया था, वह इन सब्सीडियरी कंपनियों के बैंक खातों से मेल नहीं खाता है। ब्राइटकॉम ग्रुप के अनुसार उसकी सब्सीडियरी कंपनियों ने अलग-अलग फर्मों को 515.26 करोड़ रुपये का भुगतान किया। लेकिन इनके बैंक खातों में केवल 146.89 करोड़ रुपये के भुगतान दिखे। मतलब यह 368.38 करोड़ रुपये का हिसाब गलत बताया गया।

इन सब बातों को देखते हुए सेबी ने अपने अंतरिम आदेश में दर्ज किया है कि प्रथमदृष्टया ब्राइटकॉम ग्रुप के दावे झूठे हैं और बीजीएल एवं उसकी सब्सीडियरी कंपनियों से पैसा कहीं इधर-उधर किया गया है। सेबी ने इस अंतरिम आदेश के पैरा 105 में कहा है, 'इस जाँच में यह निकलता है कि बीजीएल ने संरचित तरीके से पैसा घुमाने का काम किया (BGL resorted to the structured circulation of funds)।' इसने आगे कहा है कि बीजीएल ने 'प्रेफरेंशियल आवंटन से मिली राशि अपनी सहायक कंपनियों को हस्तांतरित कर दी, जिसे फिर आगे प्रेफरेंशियल आवंटियों को वापस दे दिया गया। इस प्रकार, ये लेन-देन केवल बही-खाते में दर्ज प्रविष्टियाँ (बुक एंट्री) थीं, क्योंकि इनके चलते शुद्ध रूप से पैसा आया नहीं।'

सेबी को दिया जाली बैंक स्टेटमेंट

सेबी ने अपने अंतरिम आदेश में ब्राइटकॉम ग्रुप के कामकाज में गंभीर अनियमितताएँ सामने रखी हैं। इसके अनुसार, ब्राइटकॉम ग्रुप ने अपनी गलतियों को छिपाने के प्रयास में सेबी को जाली और मनगढ़ंत बैंक स्टेटमेंट सौंपे। सेबी ने यह भी कहा है कि कंपनी और इस मामले में नोटिस पाने वाले अन्य लोगों के घनघोर कृत्यों से गंभीर चिंता पैदा होती है कि कंपनी ने अब तक जो वित्तीय विवरण या फाइनेंशियल स्टेटमेंट और अन्य प्रकटीकरण या डिस्क्लोजर स्टॉक एक्सचेंजों को दिये हैं, वे सही हैं भी या नहीं।

अप्रैल 2023 में भी सेबी ने ब्राइटकॉम ग्रुप के विरुद्ध एक अंतरिम आदेश जारी किया था और कारण बताओ नोटिस दिया था। इसके बाद 14 जून 2023 को सेबी ने इस कंपनी और इसके प्रमोटरों पर कुल 40 लाख रुपये का जुर्माना लगाया था। तब बाजार नियामक ने गीता कांचरला पर 12 लाख रुपये, विजय कुमार कांचरला एचयूएफ पर छह लाख रुपये, कंपनी के सीएमडी सुरेश कुमार रेड्डी और एस. वी. राज्यलक्ष्मी रेड्डी पर 5 लाख रुपये का जुर्माना लगाया था।

सेबी ने ब्राइटकॉम ग्रुप पर इनसाइडर ट्रेडिंग नियमों के उल्लंघन को लेकर जाँच की थी। सेबी ने अप्रैल 2020 से अगस्त 2021 के दौरान कंपनी के शेयरों में हुई ट्रेडिंग की जाँच की थी। इसमें यह पुष्टि हुई कि जय कुमार कांचरला एचयूएफ, एम. सुरेश कुमार रेड्डी, एस. वी. राज्यलक्ष्मी रेड्डी और गीता कांचरला ने अप्रैल 2020 से अगस्त 2021 के दौरान कंपनी के शेयरों में ट्रेडिंग की थी। ट्रेडिंग करने के बावजूद इन लोगों ने एक्सचेंज को जरूरी प्रकटीकरण (डिस्क्लोजर) नहीं दिये। इनसाइडर ट्रेडिंग को रोकने वाले नियमों के मुताबिक 10 लाख रुपये की सीमा पार करने पर जरूरी डिस्क्लोजर देना पड़ता है।

अब शंकर शर्मा की ओर से पूरे भुगतान के विवरण सेबी को सौंप देने के ताजा बयान पर यह देखना होगा कि सेबी उनके द्वारा सौंपे गये विवरणों से कितना संतुष्ट होता है। वहीं ब्राइटकॉम और इसके प्रमोटरों को गलतबयानी यानी झूठे दस्तावेज सेबी को सौंपने और प्रेफरेंशियल इश्यू की राशि के गोलमाल के आरोपों पर अपने जवाब देने हैं। इन आरोपों पर सेबी जब अपना अंतिम आदेश पारित करेगा, तब जा कर स्थिति और स्पष्ट हो सकेगी।

ब्याज दरें न बढ़ाना रिजर्व बैंक का एक सही फैसला

अगस्त महीने में अपनी मौद्रिक नीति में भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने संभावनाओं के विपरीत रेपो दर बढ़ाने के बारे में कोई चर्चा नहीं की। उसने इसे यथावत रहने दिया और एक तरह से होम लोन, कार लोन वगैरह लेने वालों को राहत दी, जो बढ़ती ब्याज दरों से परेशान थे। अभी भी यह पहले की तरह 6.5% रहेगी। यह भी सही है कि देश में इस समय मुद्रास्फीति (महँगाई) दर 5.1% से बढ़ कर 5.4% हो गयी है। लेकिन गवर्नर शक्तिकांत दास ने इस पर ध्यान नहीं दिया, क्योंकि उनका मानना है कि महँगाई का यह दौर अल्पकालिक है और इस पर अन्य तरीकों से अंकुश लगाया जा सकता है।

मधुरेंद्र सिन्हा
वरिष्ठ पत्रकार

मुद्रास्फीति को थामने के लिए ब्याज दरों में बढ़ोतरी करना सारी दुनिया के बैंकों का एक परंपरागत हथियार है। इससे चलन में धन का प्रवाह कम हो जाता है और इसका असर मुद्रास्फीति पर पड़ता है। यह एक सिद्धांत है, जिसे दुनिया भर के केंद्रीय बैंक अपनाते हैं और समय-समय पर ब्याज दरों में बदलाव करते रहते हैं।

इस मौद्रिक नीति के तहत अमेरिका में लगातार ब्याज दरें बढ़ायी गयी और वहाँ इससे सफलता भी मिली। लेकिन इस बार लगातार ब्याज दरें बढ़ाने के बावजूद मुद्रास्फीति की दर पर लगाम नहीं लगायी जा सकी। वहाँ अभूतपूर्व महँगाई बनी हुई है और मुद्रास्फीति दर पिछले साल एक समय 9.3% तक जा पहुँची, लेकिन बाद में उसमें कुछ गिरावट आयी। इस साल जून महीने में वहाँ मुद्रास्फीति की दर में कमी आयी, लेकिन फिर जुलाई में इसमें बढ़ोतरी हुई है। इसमें खाद्य पदार्थों और ऊर्जा का बड़ा योगदान रहा।

उधर अमेरिका का केंद्रीय बैंक फेडरल रिजर्व लगातार दरों में बढ़ोतरी करता रहा और मार्च 2022 से लेकर अब तक 11 बार अपनी दरें बढ़ा चुका है। दरों में वृद्धि के इस दौर से पहले एक समय अमेरिका में लगभग शून्य ब्याज दर चल रही थी। फेडरल रिजर्व प्रमुख जेरोम पॉवेल का दावा है कि उनकी आक्रामक नीतियों के चलते ही मुद्रास्फीति दर में कमी आयी है। हालाँकि इस प्रक्रिया में देश में ब्याज दरें 5.25% से बढ़ कर 5.50% हो गयी, जिससे विभिन्न तरह के ऋण महँगे हो गये। यह 22 सालों में अब तक की अधिकतम ब्याज दर है और इसके दुष्प्रभाव भी देखने को मिल रहे हैं।

इसके अलावा, वहाँ भी एक सवाल उठ रहा है कि क्या दरें इस तरह से बढ़ाना उचित है, जबकि मुद्रास्फीति दर लगातार ऊपर ही जा रही है। इस पर ब्याज दरें बढ़ाने का वांछित असर नहीं दिख रहा है। लेकिन पॉवेल इस बात को नहीं मानते हैं और मुद्रास्फीति में थोड़ी-सी भी गिरावट को अपनी सफलता मान रहे हैं।

सितंबर में फेडरल रिजर्व की इस बारे में एक और बैठक है और ऐसा माना जा रहा है कि तब 0.25% की एक और बढ़ोतरी संभव है, क्योंकि अभी भी मुद्रास्फीति नियंत्रण से बाहर है। फेडरल रिजर्व मुद्रास्फीति को रोकने तथा बेरोजगारी को कम करने के लिए इस तरह से अपनी ब्याज दर बढ़ा रहा है। फेडरल रिजर्व द्वारा इस तरह से दर बढ़ाने का असर जनता महसूस कर रही है। आलोचक इसे गलत बता रहे हैं। वे खुद भी मान रहे हैं कि बढ़ी हुई ब्याज दरों से आर्थिक विकास ठहर जायेगा और श्रम बाजार पर भी इसका बुरा असर पड़ सकता है, जो अभी तक मजबूत दिख रहा है।

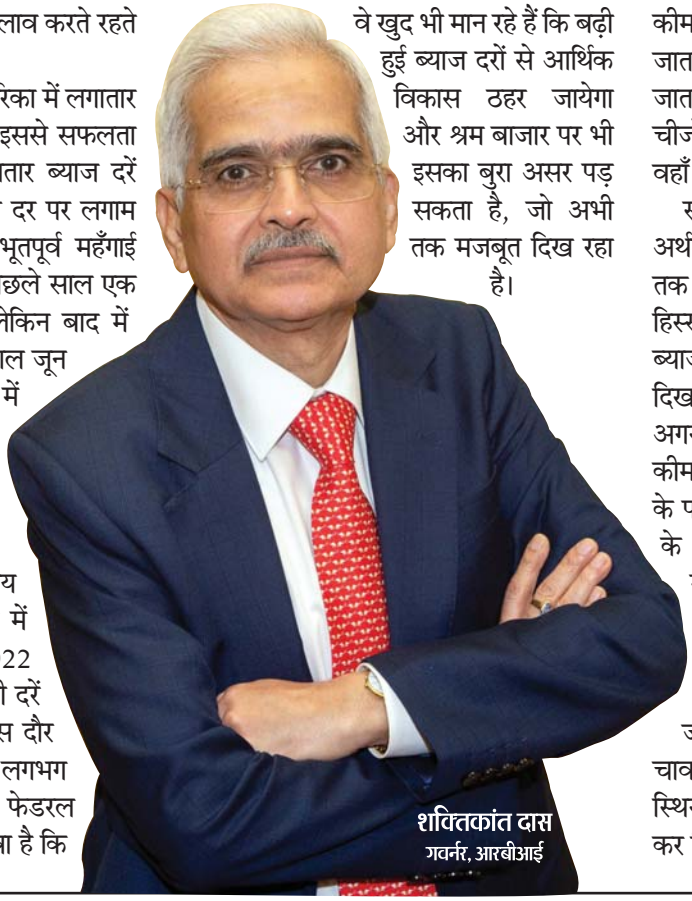

शक्तिकांत दास
गवर्नर, आरबीआई

आलोचक कहते हैं कि मुद्रास्फीति रोकने के लिए फेडरल रिजर्व के पास ले-देकर एक हथौड़ा है जिसे वह चलाता रहा है, चाहे उसका कितना ही बुरा असर क्यों न पड़े। अमेरिका में इस समय कम वेतन पाने वाले इसका असर झेल रहे हैं, क्योंकि मुद्रास्फीति तो नियंत्रण में नहीं आ रही है, उल्टे उनकी नौकरियाँ जा रही हैं। आप टीवी पर या अन्य मीडिया माध्यमों पर अमेरिका में बेघर लोगों की दुर्दशा देख सकते हैं - कैसे गरीबों की कतारें एक वक्त का भोजन पाने के लिए लगी हुई हैं। दरअसल अमेरिका में बड़ी-बड़ी कंपनियाँ मुद्रास्फीति का बहाना लेकर अपने उत्पादों की कीमतें बढ़ाती जा रही हैं। उन्हें रोकने वाला कोई नहीं है, क्योंकि अमेरिका एक पूँजीवादी देश है। और यही समस्या की असली जड़ है, न कि व्यवस्था में धन की अधिकता।

अब भारत पर आते हैं। पहले तो हमें यह समझना पड़ेगा कि यहाँ मुद्रास्फीति दर बढ़ने का कारण क्या है। भारत में महँगाई तब बढ़ती है, जब खाद्यान्नों या रोजमर्रा की चीजों की कीमतें बढ़ जाती हैं। इसके कई कारण हो सकते हैं, जिनमें सबसे बड़ा कारण हैं प्राकृतिक आपदाएँ जैसे बाढ़ या सूखा। रोजमर्रा के सामानों की कीमतें बढ़ जाने से मूल्य सूचकांक ऊपर चला जाता है, जबकि कीमतें गिरने से यह नीचे चला जाता है। अमेरिका के विपरीत यहाँ खाने-पीने की चीजों के दाम मुद्रास्फीति को प्रभावित करते हैं। वहाँ के हालात अलग हैं।

सबसे बड़ी बात यह है कि भारतीय अर्थव्यवस्था अभी भी नकदी पर काफी हद तक आधारित है और उसमें काले धन का भी हिस्सा है। यह एक बहुत बड़ी वजह है कि यहाँ ब्याज दरों में बढ़ोतरी का वैसा ज्यादा असर नहीं दिखता, जैसा कि अमेरिका-यूरोप में दिखता है। अगर मॉनसून कमजोर रह जाये तो खाद्यान्नों की कीमतें बढ़ जायेंगी और उसे संभालने में सरकार के पसीने छूट जायेंगे। कीमतों को नियंत्रित करने के लिए उसे कई तरह के उपाय करने होंगे, मसलन उन चीजों का आयात जिनके दाम बढ़े हैं। और अगर इसमें उसे सफलता मिली तो फिर कीमतें गिर जाती हैं।

ऐसे में ब्याज दरों की क्या भूमिका रह जाती है, यह विचारणीय है। सरकार ने भी चावल के निर्यात को रोक कर इसकी कीमतों को स्थिर रखने का काम किया। इस बार यही सोच कर रिजर्व बैंक ने ब्याज दरों को नहीं बढ़ाया और

इसे स्थिर रहने दिया। उनका मानना है कि दामों में समय के साथ खुद-ब-खुद गिरावट आयेगी। इतना ही नहीं, पिछले दिनों यह भविष्यवाणी की गयी थी कि अल निनो आने वाला है, जिससे मॉनसून पर बुरा प्रभाव पड़ेगा और उपज कम होगी। यह भी एक कारण था कि रिजर्व बैंक ने देखो और इंतजार करो की नीति अपनायी।

लेकिन महँगाई की स्थिति अभी काबू में है और अच्छे मॉनसून के बाद इसमें काफी नरमी आयेगी। इसलिए रिजर्व बैंक किसी तरह की जल्दी में नहीं है। वह इस वित्त-वर्ष की तीसरी या चौथी तिमाही में इस पर विचार करेगा। इस समय हमारी अर्थव्यवस्था में तेजी दिख रही है और जीडीपी आगे भी 6% की दर से इसके बढ़ने की उम्मीद की जा रही है। आईएमएफ का आकलन है कि भारत की जीडीपी आने वाले समय में 6.1% की दर से बढ़ेगी।

इसलिए यह जरूरी हो जाता है कि रिजर्व बैंक ब्याज दरों में कटौती करे। इससे रियल एस्टेट में तेजी आयेगी और बाजार में धन की उपलब्धता भी बढ़ेगी। हमारी अर्थव्यवस्था खपत आधारित है और जितनी खपत बढ़ेगी, उतनी ही इसमें तेजी आयेगी। ब्याज दरों के घटने से इस पर प्रभाव पड़ेगा ही। बढ़ी हुई ब्याज दरें बाधा तो पैदा करती ही हैं, बाजार के उत्साह को भी प्रभावित करती हैं।

ब्याज दरें भारत में मुद्रास्फीति पर नियंत्रण पाने का प्रभावी औजार कभी नहीं रही हैं। रिजर्व बैंक के पूर्व गवर्नर डी. सुब्बा राव ने अपने कार्यकाल में बढ़ती मुद्रास्फीति को थामने के लिए 13 बार ब्याज दरें बढ़ायीं और रेपो रेट को 4.75% से 8.50% पर पहुँचा दिया। इस बात पर उनकी आलोचना हुई कि उन्होंने बिना यह देखे रेपो दर में बढ़ोतरी की, कि उनके इस कदम का कोई फायदा हुआ भी या नहीं।

इस समय हमारे रियल एस्टेट क्षेत्र में तेजी दिख रही है। वर्ष 2013 के बाद यह क्षेत्र मंदी के आगोश में चला गया था, लेकिन पिछले साल से इसमें तेजी देखने को मिल रही है। टाइम्स ऑफ इंडिया की एक रिपोर्ट के मुताबिक दिल्ली-एनसीआर में मकानों की बिक्री में प्रभावशाली 46% की बढ़ोतरी हुई है। ऐसा तकरीबन लगभग सभी महानगरों में देखा जा रहा है। अगर ऐसे में होम लोन महँगा पड़ जायेगा तो फिर से इस क्षेत्र को धक्का लगेगा। यह याद रखने वाली बात है कि रियल एस्टेट कृषि के बाद सबसे ज्यादा रोजगार देने वाला दूसरा सबसे बड़ा क्षेत्र है और इसके मंदी की चपेट में आ जाने से रोजगार का बड़ा नुकसान हुआ। अब इन दोनों में जान आ रही है। ब्याज दरें बढ़ने से यह फिर ठहर जायेगा।

जनवरी-मार्च में घट सकती हैं दरें, पर शर्तें लागू

धर्मकीर्ति जोशी
मुख्य अर्थशास्त्री, क्रिसिल

मिंट रोड (आरबीआई का मुख्यालय) उपभोक्ता महँगाई दर को 4% के लक्ष्य के भीतर रखने पर दृढ़ता से केंद्रित है, हालाँकि इसने अपनी ब्याज दरों और मौद्रिक नीति के रुख को यथावत बनाये रखा है। साथ ही, अतिरिक्त नकद आरक्षित अनुपात (इन्क्रीमेंटल सीआरआर) की शुरूआत तात्कालिक रूप से छोटी अवधि की दरों को सख्त कर सकती है।

हाल तक उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (सीपीआई) आधारित महँगाई दर नीचे आ रही थी और जून की मौद्रिक नीति समीक्षा के समय लग रहा था कि इसने अपना चरम स्तर छू लिया है। लेकिन खाद्य महँगाई में हाल की बढ़ोतरी ने आरबीआई के जुलाई-सितंबर तिमाही के लिए सीपीआई के पूर्वानुमान को 5.2% से बढ़ा कर 6.2% कर दिया है। चालू वित्त-वर्ष के लिए आरबीआई का अनुमान है कि खुदरा महँगाई दर 5.4% या जून में रखे गये पूर्वानुमान से 30 आधार अंक (बीपीएस) अधिक होगी।

सब्जियों की महँगाई में बढ़ोतरी एक बार-बार होने वाली और अक्सर एक तात्कालिक घटना है और केंद्रीय बैंक इसे नजरअंदाज कर सकता है। लेकिन मौसम और वैश्विक घटनाओं से जुड़े जोखिमों के बीच उच्च खाद्यान्न महँगाई को नजरअंदाज करना आरबीआई के लिए मुश्किल है, क्योंकि खुदरा महँगाई के सूचकांक में इसका वजन अधिक है। हालाँकि रेपो दर में बढ़ोतरी ऐसी खाद्य महँगाई को नहीं घटा सकती है जो आपूर्ति की वजह से बनी हो। लेकिन यदि खाद्य महँगाई बनी रहती है और अन्य घटकों पर भी इसका असर होने लगता है तो यह एक चिंता का विषय बन जाता है। उस स्थिति में महँगाई दर अपने लक्ष्य से दूर होने लग जाती है। तो इस मोर्चे पर केवल आशाएँ रखी जा सकती हैं कि सब ठीक रहे। इसलिए जनवरी-मार्च 2024 तिमाही में ब्याज दर में 25 आधार अंक (बीपीएस) की कटौती अभी केवल एक सशर्त संभावना है।

धीमेपन की धीमी आहट

औद्योगिक उत्पादन सूचकांक (आईआईपी) में वृद्धि की दर कुछ धीमी पड़ते हुए मई में 5.3% के ऊपर की ओर संशोधित अनुमान की तुलना में जून में घट कर सालाना आधार पर 3.7% पर आ गयी। यह वृद्धि बाजार की अपेक्षाओं से कम थी। एसएंडपी पर्चेज मैनेजर्स इंडेक्स (पीएमआई) में दिखे रुझान के भी यह विपरीत है, क्योंकि जून में बहुत सकारात्मक 57.8 पीएमआई दर्ज किया गया था।

आगे चल कर दो कारक औद्योगिक प्रदर्शन को प्रभावित कर सकते हैं - उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में मंदी, और भारत में कमजोर मानसून। हालाँकि प्रमुख पश्चिमी अर्थव्यवस्थाएँ इस साल की पहली छमाही में लचीली बनी हुई हैं, पर एसएंडपी ग्लोबल का मानना है कि ब्याज दरें लंबे समय तक ऊँची रहने के कारण इनमें थोड़ी हल्की, लेकिन अधिक लंबे समय की सुस्ती आयेगी।

भारत में जून में धीमी शुरुआत के बाद अब कुल मिला कर मॉनसून सामान्य हुआ है, लेकिन अगस्त और सितंबर में बारिश पर नजर रखना बेहद जरूरी है। अनुमानों के अनुसार एक कमजोर अल नीनो आ गया है। इसका समय और तीव्रता का असर अभी बाकी बचे मॉनसून के दौरान होने वाली बारिश पर होगा और उससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था का प्रदर्शन प्रभावित होगा। कुल मिला कर हमारा अनुमान है कि जीडीपी वृद्धि दर पिछले वित्त-वर्ष के 7.2% की तुलना में इस वित्त-वर्ष में 6.0% रहेगी।

विकसित देश बनने की राह पर भारत

2047 में 15 लाख रुपये होगी प्रति व्यक्ति आय

सतीश सिंह
सहायक महाप्रबंधक
भारतीय स्टेट बैंक

सौम्य कांति घोष
समूह मुख्य आर्थिक सलाहकार
भारतीय स्टेट बैंक

भारत की आजादी के सौवें वर्ष यानी वर्ष 2047 में भारत दुनिया का एक शक्तिशाली देश बन सकता है। इस बात का पता लोगों द्वारा दाखिल किये गये आय कर रिटर्न के एक विश्लेषण से चलता है। विश्व बैंक के अनुसार भारत की आबादी अभी 140 करोड़ है, जो वित्त-वर्ष 2046-47 तक बढ़ कर 161 करोड़ हो जायेगी।

इसी अनुरूप भारत में कामगारों की संख्या 2022-23 में 53 करोड़ से बढ़ कर 2046-47 में 72.5 करोड़ होने का अनुमान है। आबादी की तुलना में कामगारों की संख्या 2022-23 में 37.9% से बढ़ कर 2046-47 में 45% हो जायेगी। वहीं आय कर के दायरे में आने वाले कामगार, यानी जो कृषि के अतिरिक्त अन्य गतिविधियों में लगे हैं, उनकी संख्या 2022-23 में 31.3 करोड़ है, जो 2046-47 में बढ़ कर 56.5 करोड़ हो सकती है। इस दौरान प्रतिशत में यह संख्या 59.1 से बढ़ कर 78 हो सकती है।

संयुक्त राष्ट्र संघ के अनुसार वर्ष 2040 तक 15 से 64 साल उम्र वाले कामगारों की संख्या उच्च स्तर पर रहेगी, लेकिन उसके बाद इसमें कमी आयेगी। इससे पता चलता है कि 2040 तक आर्थिक गतिविधियों में विशेष तेजी बनी रहेगी। वर्ष 2046-47 में लगभग 22% कामगार कृषि से जुड़े रहेंगे। चूँकि कृषि क्षेत्र में कार्यरत किसानों को आय कर से छूट प्राप्त है। इसलिए, खेती-किसानी में कामगारों की संख्या कम होने और दूसरे क्षेत्र में इनकी संख्या बढ़ने से आय कर संग्रह में उल्लेखनीय वृद्धि होगी।

निर्धारण वर्ष 2022-23 (यानी वित्त-वर्ष 2021-22) में भारतीयों की भारित औसत आय 13 लाख रुपये हो गयी है, जो 2046-47 में बढ़ कर 49.7 लाख रुपये हो सकती है। निर्धारण वर्ष 2013-14 में भारतीयों की भारित औसत आय महज 4.4 लाख रुपये थी।

निर्धारण वर्ष 2022-23 में आय कर रिटर्न दाखिल करने वालों की संख्या निर्धारण वर्ष 2021-22 की तुलना में 7.3 करोड़ से बढ़ कर 7.8 करोड़ हो गयी है। इनमें से 5.8 करोड़ या 75% रिटर्न निर्धारित तारीख से पहले दाखिल किये गये। निर्धारित तिथि के बाद दंड शुल्क के साथ आय कर रिटर्न दाखिल करने वालों की संख्या में भारी कमी आयी है। निर्धारण वर्ष 2019-20 में ऐसे लोगों की संख्या 60% थी, जो निर्धारण वर्ष 2022-23 में घट कर 25% रह गयी।

प्रति व्यक्ति आय

भारित औसत आय

निर्धारण वर्ष 2023-24 में निर्धारित तिथि तक 6.8 करोड़ लोगों ने आय कर रिटर्न दाखिल किये, जबकि मार्च 2024 तक 1.8 से 2.0 करोड़ लोग आय कर रिटर्न दाखिल कर सकते हैं। निर्धारण वर्ष 2022-23 में शून्य आय कर वाला रिटर्न दाखिल करने वाले लोगों के प्रतिशत में उल्लेखनीय कमी आयी है। ऐसे लोगों की संख्या निर्धारण वर्ष 2011-12 में 84.1% थी, जो निर्धारण वर्ष 2022-23 में कम होकर 64% रह गयी।

निर्धारण वर्ष 2022-23 में सबसे ज्यादा आय कर रिटर्न दाखिल करने वाले शीर्ष पाँच राज्य महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, गुजरात, राजस्थान और पश्चिम बंगाल हैं। निर्धारण वर्ष 2021-22 के मुक़ाबले निर्धारण वर्ष 2022-23 में 64 लाख ज्यादा आय कर रिटर्न दाखिल किये गये। आय कर रिटर्न दाखिल करने वाले राज्यों में शीर्ष पर महाराष्ट्र रहा।

तदुपरांत, उत्तर प्रदेश, पंजाब, गुजरात और राजस्थान क्रमशः दूसरे, तीसरे, चौथे और पाँचवें स्थान पर रहे। छोटे राज्यों में मणिपुर, मिजोरम और नगालैंड में विगत नौ सालों में आय कर रिटर्न दाखिल करने वालों की संख्या में 20% की वृद्धि हुई।

समग्र रूप से निर्धारण वर्ष 2014-15 की तुलना में निर्धारण वर्ष 2022-23 में 4.81 करोड़ अधिक आय कर रिटर्न दाखिल किये गये और निर्धारण वर्ष 2022-23 में निर्धारण वर्ष 2019-20 के मुक़ाबले 1.00 करोड़ अधिक आय कर रिटर्न दाखिल किये गये।

आय कर रिटर्न दाखिल करने वालों के कार्यस्थल और उनके स्थायी निवास में अंतर देखने में आया है, जिसका कारण कामगारों का रोजगार हेतु दूसरे प्रदेशों में प्रवास करना है। पैन कार्ड को आधार से लिंक करने पर आय कर रिटर्न दाखिल करने वालों के स्थायी निवास की वास्तविक तस्वीर सामने आ सकती है और राज्यवार आय कर रिटर्न दाखिल करने वालों के प्रतिशत में भी बदलाव आ सकता है। इससे आय कर रिटर्न दाखिल करने वाले राज्यों की रैंकिंग में भी परिवर्तन आ सकता है।

उदमियों को बेहतर सुविधाएँ मुहैया कराने के लिए उद्यम पोर्टल का आगाज मोदी सरकार द्वारा 1 जुलाई 2020 को किया गया था, जिसमें अभी तक 2.2 करोड़ सूक्ष्म, लघु और मँझोले उद्यमों (एमएसएमई) ने अपना पंजीकरण कराया है। उदयम पोर्टल पर एमएसएमई के पंजीकरण के आँकड़ों और राज्यवार आय कर रिटर्न दाखिल करने वाले आँकड़ों के मिलान से पता चलता है कि 2.18 करोड़ उदमियों ने आय कर रिटर्न दाखिल करने वाले लोगों की संख्या को बढ़ाने में उल्लेखनीय योगदान दिया है।

निर्धारण वर्ष 2010-11 में आय कर रिटर्न दाखिल करने वालों की संख्या 1.6 करोड़ थी, जिनमें 84% लोग पाँच लाख रुपये तक के आय वर्ग में आते थे। ऐसे लोगों की संख्या निर्धारण वर्ष 2022-23 में बढ़ कर 6.85 करोड़ हो गयी। इससे इस बात की पुष्टि होती है कि विगत सालों में आय कर रिटर्न दाखिल करने वालों की संख्या और उनकी आय दोनों में इजाफा हुआ है।

निर्धारण वर्ष 2011-12 के मुकाबले निर्धारण वर्ष 2022-23 में आय कर रिटर्न दाखिल करने वालों में से 13.6% लोगों ने पाँच लाख रुपये से ऊपर वाले आय वर्ग में जगह बनायी है, जिसमें से 8.1% लोग पाँच लाख रुपये से 10 लाख रुपये के वर्ग में, 3.8% लोग 10 लाख रुपये से 20 लाख रुपये के वर्ग में, जबकि 1.5% लोग 20 लाख रुपये से 50 लाख रुपये के वर्ग में चले गये हैं। वहीं, 0.2% लोगों ने 50 लाख रुपये से 1 करोड़ रुपये के वर्ग में और 0.02% लोगों ने 1 करोड़ रुपये से ऊपर के वर्ग में अपनी जगह बनायी है।

इतना ही नहीं, यह भी अनुमान है कि आय कर रिटर्न दाखिल करने वाले लगभग 27% लोग वर्ष 2046-47 तक नीचे से ऊपर वाले वर्ग में चले जायेंगे। इनमें से 17.5% आय कर रिटर्न दाखिल करने वाले लोग 5 लाख रुपये से 10 लाख रुपये वाले वर्ग में चले जायेंगे, जबकि 5% लोग 10 लाख रुपये से 20 लाख रुपये वाले वर्ग में पहुँचेंगे। वहीं 3% लोग 20 लाख रुपये से 50 लाख रुपये के वर्ग में, 0.5% लोग 50 लाख रुपये से 1 करोड़ रुपये के वर्ग में और 0.075% लोग 1 करोड़ रुपये से ऊपर के वर्ग में चले जायेंगे।

आय कर रिटर्न दाखिल करने वालों की संख्या और आयकर संग्रह में बढ़ोतरी के अनेक कारण हैं, जैसे निम्न आय वर्ग के लोगों की आय में वृद्धि, वैसे लोगों की संख्या में इजाफा जो पहले आय कर रिटर्न दाखिल नहीं कर रहे थे, कम आय या शून्य आय दिखाने वाले लोगों की संख्या में कमी आदि।

कहा जा सकता है कि सरकार की समीचीन नीतियों की वजह से भारतीय अर्थव्यवस्था लगातार मजबूत हो रही है और इसी वजह से देश में प्रति व्यक्ति आय वित्त-वर्ष 2022-23 के 2 लाख रुपये से बढ़ कर 2046-47 में 14.9 लाख रुपये होने का अनुमान है।

(सौम्य कांति घोष अर्थशास्त्री और भारतीय स्टेट बैंक के समूह मुख्य आर्थिक सलाहकार हैं। सतीश सिंह भारतीय स्टेट बैंक में सहायक महाप्रबंधक और आर्थिक मामलों के जानकार हैं। लेख में व्यक्त विचार श्री घोष व श्री सिंह के निजी विचार हैं।)

कार्यबल और आयकर रिटर्न

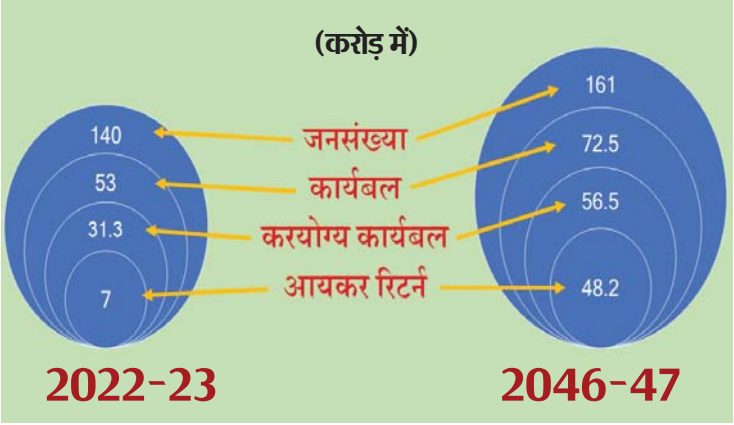

कर आधार में होगी वृद्धि

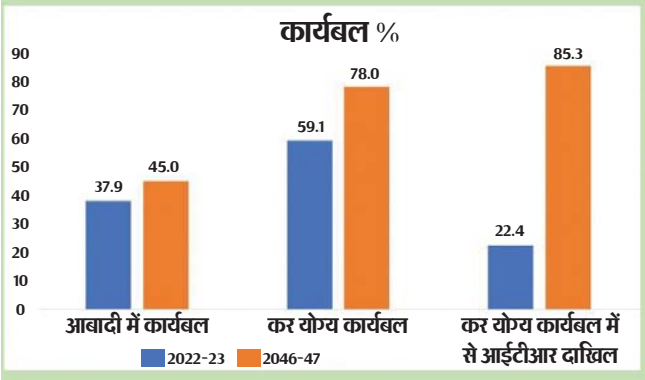

सेबी ने घटाया आईपीओ के बाद लिस्टिंग का समय

बाजार नियामक सेबी ने निवेशकों के हितों को ध्यान में रखते हुए प्रारंभिक सार्वजनिक निर्गम (आईपीओ) के बाद स्टॉक एक्सचेंजों पर शेयर की लिस्टिंग का समय घटा कर आधा कर दिया है। अब आईपीओ बंद होने के बाद कंपनी के शेयर की स्टॉक एक्सचेंजों पर लिस्टिंग का समय टी+3 दिन होगा, जो अब तक टी+6 था। यहाँ 'टी' का मतलब आईपीओ के बंद होने की तारीख है। सेबी की इस नयी समय-सीमा को दो चरणों में लागू किया जायेगा। पहले एक सितंबर 2023 या उसके बाद आईपीओ लाने वाली कंपनियों के लिए यह स्वैच्छिक होगा। यानी ऐसी कंपनियों की मर्जी है कि वे आईपीओ के बाद लिस्टिंग कितने दिनों में करती हैं। दूसरे चरण में एक दिसंबर 2023 या उसके बाद आईपीओ लाने वाली कंपनियों के लिए तीन दिनों में ही लिस्टिंग का नियम अनिवार्य होगा।

सेबी के इस फैसले से यह सुनिश्चित होगा कि कंपनियों के पास आईपीओ के जरिये जुटाया गया पैसा जल्दी पहुँचे। यानी इससे आईपीओ लाने वाली कंपनियों को भी फायदा होगा। सेबी ने बड़े निवेशकों, रजिस्ट्रार और ट्रांसफर एजेंट, ब्रोकर-वितरकों और बैंकों समेत अलग-अलग हितधारकों के साथ काफी चर्चा के बाद यह अहम फैसला लिया है। हाल ही में सेबी के निदेशक मंडल की बैठक हुई, जिसमें कई प्रस्तावों को हरी झंडी दिखायी गयी। लिस्टिंग का समय घटाने के साथ ही सेबी ने पारदर्शिता बढ़ाने के लिए कुछ श्रेणियों के विदेशी पोर्टफोलिओ निवेशकों (एफपीआई) के लिए कुछ और खुलासे करना जरूर कर दिया है।

आय कर रिटर्न की पुष्टि नहीं करने पर जुर्माना

आय कर विभाग कई बार करदाताओं को यह याद दिला चुका है, जिन लोगों ने आय कर रिटर्न (आईटीआर) दाखिल कर लिया है, उनके लिए इसका सत्यापन (वेरिफाई) करना भी जरूरी है। आईटीआर दाखिल करने के 30 दिनों के भीतर इसे सत्यापित करना आवश्यक है। ऐसा न करने पर करदाता का आईटीआर अस्वीकार कर दिया जायेगा। 27 अगस्त तक लगभग 6.93 करोड़ आईटीआर दाखिल किये गये थे, जिनमें से 6.69 करोड़ का सत्यापन पहले ही हो चुका है। यानी फिर भी 24 लाख करदाता ऐसे रहे, जिन्होंने अपने आईटीआर का सत्यापन नहीं किया।

निर्धारण वर्ष (एवाई) 2023-24 के लिए आईटीआर दाखिल करने की अंतिम तिथि 31 जुलाई 2023 थी। जिन लोगों ने 31 जुलाई से पहले अपना आईटीआर दाखिल किया था, उन्हें अब तक उसे सत्यापित करना लेना चाहिए था। हालाँकि यदि किसी ने आईटीआर को सत्यापित नहीं किया है तो इसे अस्वीकार कर दिया जायेगा। इस स्थिति में जिन करदाताओं का आईटीआर अस्वीकार कर दिया जायेगा, उन लोगों पर न सिर्फ 5,000 रुपये का जुर्माना लगेगा, बल्कि उन्हें फिर से आईटीआर दाखिल करना होगा।

पहले आईटीआर को सत्यापित करने के लिए 120 दिनों का समय मिलता था। मगर अगस्त 2022 में इस अवधि को घटा कर 30 दिन कर दिया गया। अब नियम यह है कि यदि कोई आज अपना आईटीआर दाखिल करता है, तो उसे 30 दिनों के भीतर सत्यापित भी करना होगा, वरना आईटीआर अस्वीकार कर दिया जायेगा। आईटीआर को कई माध्यमों से सत्यापित किया जा सकता है। इनमें आधार ओटीपी, नेटबैंकिंग, डीमैट खाता, एटीएम और बैंक खातों का भी रास्ता शामिल है, मगर इनमें से हरेक में प्रक्रिया अलग-अलग है।

डिजिटल धोखाधड़ी पर कसेगी नकेल, बैंकों की खास तैयारी

डिजिटल धोखाधड़ी पर नकेल कसने के लिए देश के अधिकतर बैंक मिल कर एक बड़ा कदम उठाने जा रहे हैं। बैंक धोखेबाजों की एक कॉमन निगेटिव रजिस्ट्री तैयार करने जा रहे हैं, जो डिजिटल धोखाधड़ी को रोकने और ऐसे मामलों का तेजी से समाधान करने के लिए सभी बैंकों को वास्तविक समय में जानकारी हासिल करने में मदद करेगी। एक ऑनलाइन पोर्टल पर यह कॉमन निगेटिव रजिस्ट्री बनायी जायेगी, जिसके लिए भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) और बैंकों के बीच चर्चा भी शुरू हो गयी है।

इस पोर्टल की मदद से कर्जदाता धोखाधड़ी के मामलों पर आसानी से जुड़ सकेंगे और एक खाते से अलग-अलग खातों में पैसे ट्रांसफर होने को रोक सकेंगे। इससे ऐसे पैसे के लेन-देन का पता लगाने में भी मदद मिलेगी। आम तौर पर डिजिटल धोखाधड़ी के ज्यादातर मामलों में पैसा अलग-अलग बैंकों और वित्तीय संस्थानों में फैले विभिन्न खातों में ट्रांसफर कर दिया जाता है। कई बार इस पैसे का पता लगाना मुश्किल हो जाता है, जिससे लोगों को पैसा वापस मिलने में देरी होती है। कॉमन पोर्टल इन्हीं दिक्कतों को खत्म करने में मददगार साबित होगा।

दुनिया भर के केंद्रीय बैंकों ने जम कर खरीदा सोना

भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) समेत दुनिया भर के केंद्रीय बैंकों ने 2023 की पहली छमाही में काफी सोना खरीदा। अकेले आरबीआई ने ही इस दौरान 10 टन सोने की खरीदारी की। वर्ल्ड गोल्ड काउंसिल (डब्लूजीसी) की एक रिपोर्ट के अनुसार जनवरी-जून 2023 की अवधि में केंद्रीय बैंकों ने रिकॉर्ड 387 टन सोने की खरीदारी की। जनवरी-मार्च की तिमाही में सोने की खरीदारी अप्रैल-जून से अधिक रही। अप्रैल-जून तिमाही में केंद्रीय बैंकों द्वारा सोने की कुल खरीदारी 103 टन रही, जो तिमाही दर तिमाही आधार पर 64% और सालाना आधार पर 35% कम रही। दूसरी तिमाही में सोने की खरीदारी सेंट्रल बैंक ऑफ तुर्कीये के कारण कम रही, जिसने इस दौरान सोने की बिकवाली की। तुर्कीये के केंद्रीय बैंक ने देश की कमजोर आर्थिक स्थिति के कारण सोना बेचा।

पहली छमाही के दौरान तुर्कीये शुद्ध विक्रेता रहा और उसका गोल्ड रिजर्व 102 टन घटा। तुर्कीये के अलावा सात और केंद्रीय बैंकों का स्वर्ण भंडार (गोल्ड रिजर्व) पहली छमाही में घटा। इन देशों में कजाकिस्तान (38 टन), उज्बेकिस्तान (19 टन), कंबोडिया (10 टन), रूस (3 टन), जर्मनी (2 टन), क्रोएशिया (2 टन) और ताजिकिस्तान (1 टन) शामिल हैं। 2023 की जनवरी-जून अवधि के दौरान जिन नौ केंद्रीय बैंकों के स्वर्ण भंडार में वृद्धि हुई, उनमें चीन का पीपुल्स बैंक ऑफ चाइना पहले स्थान पर रहा, जिसने 103 टन सोना खरीदा। सिंगापुर ने 73 टन, पोलैंड के केंद्रीय बैंक ने 48 टन और आरबीआई ने 10 टन सोना खरीदा। हालाँकि सोने की कुल माँग में 6% की गिरावट आयी है। इसका मुख्य कारण निवेशकों का गोल्ड एक्सचेंज ट्रेडेड फंडों (ईटीएफ) से पैसा निकालना रहा।

2024 का चुनाव और मोदी बनाम राहुल

राजीव रंजन झा

अगले लोक सभा चुनाव का परिदृश्य बनने लगा है, तस्वीर उभरने लगी है। इंडिया टुडे सी-वोटर के ताजा सर्वेक्षण के अनुसार अबकी बार फिर से मोदी सरकार। भूतपूर्व यूपीए के नये अवतार आईएनडीआईए गठबंधन में काफी सारे नये दलों के जुड़ने से इस विपक्षी गठबंधन का मत प्रतिशत तो यूपीए की तुलना में बढ़ा हुआ दिख रहा है, पर भाजपा थोड़े नुकसान के बावजूद 287 सीटों के साथ अकेले पूर्ण बहुमत पा लेगी और एनडीए को 306 सीटों का एक अच्छा बहुमत मिल जायेगा। कांग्रेस 2019 से थोड़ा बढ़ कर 74 सीटों तक पहुँचेगी और आईएनडीआईए की संख्या 193 रहने का अनुमान है। पर कांग्रेस के सामने चुनौती तो यह है कि कम-से-कम सर्वेक्षण में दिख रही लोक सभा सीटें भी असल में ले आये।

यह तो इस सर्वेक्षण की मोटी-मोटी बात है, पर कुछ दिलचस्प बातें और हैं। इसके अनुसार 2024 के लोक सभा चुनाव में भाजपा को 38% मत मिलेंगे, एनडीए को 43%, लेकिन मोदी को सबसे अच्छा मानते हैं 52%। मतलब जो भाजपा या एनडीए को वोट नहीं देंगे, ऐसे भी काफी लोग मोदी को सबसे अच्छा मानते हैं पीएम पद के लिए। उधर राहुल गांधी? कांग्रेस को तो 22% वोट मिलने का अनुमान लगाया गया है, लेकिन राहुल गांधी को पीएम पद के लिए सबसे अच्छा मानने वाले केवल 16% हैं। मतलब सारे कांग्रेसी वोटर भी उनको इस पद के लायक नहीं मानते।

गांधी परिवार से खुद कांग्रेसी ही थक कर निराश हो चुके हैं, पर वे करें भी तो क्या करें... मँझधार में हैं - इनसे कुछ होगा नहीं और इनके बिना कुछ होगा नहीं। इंडिया टुडे के इस सर्वेक्षण में पिछली कई बार से यह पूछा जा रहा है कि क्या कांग्रेस गांधियों के बिना बेहतर स्थिति में रहेगी। पिछले चार सर्वेक्षणों में इस पर हाँ कहने वालों की संख्या 49% से 53% के बीच चल रही है। ना कहने वाले पहले 41% थे, बीच में घट कर 30% रह गये और इस बार थोड़ा बढ़ कर 34% पर है। मतलब साफ है कि ज्यादा लोग गांधी परिवार के नेतृत्व में कांग्रेस का भविष्य सुरक्षित नहीं मानते। लेकिन गांधी परिवार के अलावा क्या कांग्रेस के पास कुछ विकल्प हैं भी? दिलचस्प है कि इंडिया टुडे के सर्वेक्षण में राहुल गांधी और सचिन पायलट की तुलना हुई है। राहुल गांधी कांग्रेस के लिए क्या हैं, यह बताने की जरूरत नहीं, हालाँकि वे अभी किसी पार्टी पद पर नहीं हैं, केवल सांसद हैं। पर कांग्रेस में कौन फिर से जान फूँक सकता है, इस सवाल पर 26% ने राहुल गांधी और 17% ने सचिन पायलट का नाम लिया। ऊपर के तीनों सवालों पर जनता का मिजाज क्या कुछ साफ-साफ संकेत नहीं दे रहा है?

स्वतंत्रता दिवस पर नयी परिपाटी

देश को स्वतंत्रता दिलाने का दावा करने वाली कांग्रेस ने अब एक नयी परिपाटी की नींव रख दी है। यह पहला अवसर है, जब कांग्रेस के अध्यक्ष ने स्वतंत्रता दिवस पर लाल किले पर आयोजित समारोह का बहिष्कार किया हो। गांधी परिवार का कोई सदस्य भी इस समारोह में नहीं पहुँचा। इसलिए भला क्या आश्चर्य कि कांग्रेस के कठपुतली अध्यक्ष इस समारोह से दूर रहे। हालाँकि इस पर सफाई देते हुए कांग्रेस ने कहा कि खड़गे को उनके घर और पार्टी कार्यालय में भी झंडा फहराना था, इसलिए वे लाल किले के कार्यक्रम में नहीं पहुँच सके।

तो क्या इससे पहले 76 वर्षों में विरोधी दलों के जो अध्यक्ष और नेता लाल किले पर उपस्थित रहते थे, वे अपने-अपने घर-दफ्तर पर झंडा नहीं फहराते थे? कांग्रेस अध्यक्ष और गांधी परिवार दोनों की लाल किले पर आयोजित समारोह में अनुपस्थिति स्पष्ट बताती है कि उन्होंने इस समारोह का बहिष्कार ही किया है। तो अब कांग्रेस ऐसी मनोस्थिति में आ गयी है कि अगर वह देश की सत्ता से दूर रहेगी तो लाल किले पर स्वाधीनता दिवस के समारोह तक से दूरी बना लेगी। इससे पहले सांसदों-विधायकों की तिरंगा रैली के मामले में भी कांग्रेस ने अपना यही रवैया दिखाया, जिसमें कांग्रेस के सांसदों-विधायकों ने बिल्कुल हिस्सा नहीं लिया। और उन्होंने ऐसा तब किया, जब तिरंगा रैली के कार्यक्रम की अध्यक्षता उपराष्ट्रपति कर रहे थे। क्या अब इसी तर्ज पर कांग्रेस आने वाली 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस समारोह का भी बहिष्कार करेगी?

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने स्वाधीनता दिवस पर लाल किले से मानो अपना भाषण नहीं दिया, बल्कि हवा में लाल मिर्च उड़ा दी। इस लाल मिर्च ने केवल उन्हीं लोगों को परेशान किया है, जो पिछले दो दशकों से मोदी नाम सुनते ही बावले हो जाते हैं। उन्होंने कह दिया कि अगले साल फिर से वे 15 अगस्त को लाल किले से भाषण देकर सरकार की उपलब्धियों को सामने रखेंगे।

यही काम उन्होंने इससे पहले हाल में संसद में भी किया था, लोकसभा में अविश्वास प्रस्ताव पर बहस के दौरान यह बोल कर कि विपक्ष 2028 में फिर उनकी सरकार के विरुद्ध अविश्वास प्रस्ताव लायेगा। वैसे यह उनकी पुरानी आदत है। साल 2018 में भी अविश्वास प्रस्ताव पर उन्होंने ऐसी ही भविष्यवाणी करते हुए विपक्ष से कहा था कि आप 2023 में फिर से अविश्वास प्रस्ताव लायेंगे। वह भविष्यवाणी सच हुई। अब मोदी नाम सुन कर आँखों में लाल मिर्च या काली मिर्च का असर महसूस करने वाले लोग इस ताजा भविष्यवाणी से एकदम बिफरे हुए हैं। पता नहीं गुस्सा हैं या उनका डर गुस्से के रूप में, बौखलाहट के रूप में दिख रहा है।

मोदी के तीसरी बार प्रधानमंत्री बनने पर कोई शक नहीं

प्रदीप सिंह
वरिष्ठ पत्रकार

लोकसभा चुनाव में क्या होगा? क्या नरेंद्र मोदी तीसरी बार बनेंगे प्रधानमंत्री, या नहीं? क्या लोकसभा चुनाव में भाजपा की सीटें घट जायेंगी, या बढ़ जायेंगी? उसे अकेले बहुमत मिल जायेगा या एनडीए के बहुमत से सरकार चलानी पड़ेगी? जो विपक्षी गठबंधन बना है, उसका कितना प्रभाव होगा? क्या वह भाजपा को सत्ता से हटा देगा? क्या वह सत्ता में आ जायेगा?

ऐसे सारे सवाल हवा में तैर रहे हैं - अलग-अलग तर्कों और तथ्यों के आधार पर लोग अपनी-अपनी राय और पसंद-नापसंद बताने की कोशिश करते हैं। जमीनी हकीकत जानने वालों को मालूम है कि नतीजा क्या आने वाला है? लेकिन जो जमीनी हकीकत को जानते हैं, लेकिन मानना नहीं चाहते, उनका भी एक वर्ग है। ऐसे भी लोग हैं जो जमीनी हकीकत को जानते भी नहीं हैं और बताने पर मानते भी नहीं हैं।

नेहरू के बाद पहली बार...

यह पहली सरकार (नेहरू के बाद) है, जिसके लगातार तीसरी बार आने की संभावना दिख रही है। अभी तक केवल 1952, 1957 और 1962 में लगातार तीन बार जवाहरलाल नेहरू सरकार बनाने में कामयाब हुए थे। तब आजादी के बाद का माहौल था। कांग्रेस पार्टी आजादी के आंदोलन की वाहक थी, इसलिए उसका असर था और विपक्ष बिखरा हुआ, कमजोर था।

लेकिन उसके बाद ऐसा कोई अवसर नहीं आया। गांधी परिवार के भी दो-दो लोग प्रधानमंत्री बने, इंदिरा गांधी और राजीव गांधी। वे भी यह करिश्मा नहीं कर पाये। लेकिन नरेंद्र मोदी ऐसा करने जा रहे हैं। पाँच साल के दो पूरे कार्यकाल के बाद तीसरी बार उनके आने की प्रबल संभावना है। यह मैं नहीं कह रहा हूँ, यह इंडिया टुडे और सी-वोटर के मूड ऑफ द नेशन सर्वेक्षण में आया है, जो बता रहा है कि हैट्रिक लगने वाली है मोदी की।

विश्व-व्यवस्था पर असर

अब सवाल यह है कि मोदी के जीतने या न जीतने का असर क्या है? अभी विश्व-व्यवस्था (वर्ल्ड ऑर्डर) बदल रही है। अमेरिका पहले जैसा ताकतवर नहीं रह गया, उसकी दादागिरी नहीं रह गयी। चीन उसकी जगह लेने की कोशिश कर रहा है, ले नहीं पा रहा है। पहले कोरोना,

फिर यूक्रेन का युद्ध, उसके अलावा विश्व में आर्थिक मंदी का माहौल है। इन सब को देखते हुए पूरी विश्व-व्यवस्था एक बदलाव के दौर से गुजर रही है।

इसमें सबसे महत्वपूर्ण भूमिका होने जा रही है भारत की और भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की। प्रधानमंत्री मोदी इस समय दुनिया के सबसे लोकप्रिय और प्रभावी नेता हैं, जिनकी बात दुनिया भर में सुनी जाती है। जब आपकी ताकत इतनी बड़ी होती है तो आपके दोस्त और दुश्मन भी उतने ही बड़े और ताकतवर लोग होते हैं। तो ऐसे देश हैं, जो चाहते हैं कि भारत बढ़ने ना पाये, मोदी का कद बढ़ने ना पाये। वहीं ऐसे भी देश हैं, जो चाहते हैं कि भारत और मजबूत हो, प्रधानमंत्री मोदी और ताकतवर हों। उनके प्रभाव से जो नयी विश्व व्यवस्था बनेगी, उसमें जो कमजोर या छोटे देश हैं, उनकी भी आवाज सुनी जायेगी, ऐसी उम्मीद नरेंद्र मोदी से है कि वे उनकी आवाज बन कर उभरेंगे।

इसलिए 2024 का चुनाव भारत के लिए ही नहीं, पूरी दुनिया के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। इस चुनाव का नतीजा केवल भारत में सरकार का भविष्य नहीं तय करेगा, बल्कि नयी विश्व-व्यवस्था में भारत का स्थान और भूमिका भी तय करेगा। और उससे ज्यादा, नरेंद्र मोदी पिछले साढ़े नौ साल में विश्व-पटल पर सबसे प्रभावशाली लोकप्रिय नेता के रूप में उभरे हैं। उन पर दुनिया भर की नजर है। भारत मजबूत होगा तो उससे विश्व में शक्ति संतुलन बनाने में आसानी होगी, क्योंकि विश्व-व्यवस्था बदल रही है।

इसलिए 2024 का चुनाव केवल यह चुनाव नहीं है कि कौन जीतेगा-हारेगा, कौन सरकार बनायेगा, किसकी कितनी सीटें आयेंगी? मेरी नजर में 2024 का सवाल यह है कि मोदी मजबूत होंगे या कमजोर होंगे? मोदी सत्ता में आयेंगे, इसमें कोई शक नहीं है मुझे। इंडिया टुडे और सी-वोटर का जो मूड ऑफ द नेशन सर्वेक्षण आया है, उसके मुताबिक आज चुनाव हो जाये तो भाजपा को अकेले 287 सीटें मिलेंगी। मेरा मानना है कि यह बड़ा संकोची (कंजर्वेटिव) अनुमान है, लेकिन अगर उसी को मान कर चलते हैं कि 287 सीटें आयेंगी तो इसका मतलब मोदी

तीसरी बार लगातार प्रधानमंत्री बनेंगे। नेहरू के अलावा न कोई लगातार तीन बार प्रधानमंत्री चुना गया है, न कोई पार्टी लगातार तीसरी बार सत्ता में आयी है। तो यह एक रिकॉर्ड बनने जा रहा है।

आई.एन.डी.आई.ए. नहीं हरा सकता

यह अपने-आप में एक बड़ी खबर है, लेकिन मेरी नजर में उससे बड़ी बात यह है कि 54% लोगों का मानना है कि जो नया विपक्षी गठबंधन बना है आई.एन.डी.आई.ए. नाम का, वह भाजपा को नहीं हरा सकता। केवल 39% लोग कह रहे हैं कि वे हरा सकते हैं। ये 39% लोग कौन हुए? इस गठबंधन की सभी पार्टियों को मिला दें तो इस सर्वेक्षण के मुताबिक इस गठबंधन को 41% मत मिलने की उम्मीद है। उनमें से भी 2% लोग यह नहीं मानते कि भाजपा को हरा सकते हैं।

इस सर्वेक्षण के मुताबिक 43% मत एनडीए को मिलने की उम्मीद है, जबकि भाजपा को 38% मत। आप समझिए कि कितनी बड़ी संख्या है भाजपा के मतदाताओं के बाहर की, जिनका भरोसा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर है। इससे आप आकलन कीजिए कि 2024 में क्या होने वाला है। मेरा तो मानना है कि 2019 में जितनी सीटें आयी थीं और जो मत प्रतिशत था, दोनों बढ़ेंगे।

जब नेहरू 1952 और 1957 के बाद 1962 में तीसरी बार आये, तब तक उनकी लोकप्रियता गिरनी शुरू हो चुकी थी। यह अलग बात है कि उस समय विपक्ष उतना एकजुट और मजबूत नहीं था उसका फायदा उठाने के लिए। लेकिन नेहरू की सरकार और स्वयं नेहरू की व्यक्तिगत छवि को 1962 के चीन युद्ध से पहले ही काफी धक्का लग चुका था। चीन युद्ध के बाद तो और भी हालत ख़राब हो गयी थी। लेकिन प्रधानमंत्री मोदी की लोकप्रियता में इजाफा हो रहा है। इस सर्वेक्षण के मुताबिक तो उनकी लोकप्रियता 1% घटी है पिछले सर्वेक्षण से, लेकिन मेरा मानना है कि अगर आप अपने शासन के दसवें साल में इतने लोकप्रिय हैं, तो लोकप्रियता घटने का सवाल नहीं है।

नहीं है सत्ता-विरोधी लहर

सत्ता-विरोधी लहर की चर्चा हम लोग हर चुनाव में करते हैं। चाहे नगर निगम का चुनाव हो, विधानसभा का चुनाव हो या लोकसभा का चुनाव हो, जो भी सत्ता में होता है, उसके खिलाफ नाराजगी होती है। तो सत्ता में होने का नुकसान अगर न हो रहा हो तो संसदीय लोकतंत्र में किसी भी दल के लिए यह बहुत बड़ी उपलब्धि है। यानी उस सरकार का काम-काज लोगों को पसंद आ

अगर 2024 के लोकसभा चुनाव की दृष्टि से 2019 से तुलना करें तो कोई ऐसा राज्य नहीं है, जहाँ आप कह सकें कि भाजपा कमजोर हो गयी है। कमजोरी की बात दो राज्यों में होती है - बिहार और महाराष्ट्र। पर वहाँ एनडीए कमजोर हुआ है। बिहार में कुछ झटका जरूर एनडीए को लगेगा, पर भाजपा को नहीं।

रहा है, लोग उस सरकार का विकल्प खोजने की भी कोशिश नहीं कर रहे हैं।

मोदी सरकार के काम-काज से 59% लोग संतुष्ट हैं। यह इस सर्वेक्षण के आँकड़ों के मुताबिक प्रधानमंत्री की लोकप्रियता के प्रतिशत से भी ऊपर जाता है। मुझे नहीं लगता कि किसी भी सरकार के पहले कार्यकाल के भी अंत में इस तरह की रेटिंग आयी होगी कि उसके काम-काज से 59% लोग संतुष्ट हों। मैं लोकसभा की बात कर रहा हूँ, विधानसभाओं की नहीं। विधानसभाओं में अलग-अलग राज्यों में अलग-अलग तरहके नतीजे आते हैं। जैसे गुजरात को ही देख लीजिए, जहाँ 1995 के बाद भाजपा आज तक हारी नहीं है। यह अपने-आप में एक बड़ी उपलब्धि है भाजपा के लिए गुजरात जैसे राज्य में, जहाँ दो ही दल हैं।

अगर 1962 के बाद की राजनीति को आप देखिए तो कांग्रेस का जब वर्चस्व था तब भी दो लगातार लोकसभा चुनावों में 12-13 राज्यों में केंद्र में सत्तारूढ़ दल की स्ट्राइक रेट 80-95% तक होना मुश्किल था। लेकिन भाजपा को देखिए तो उत्तर प्रदेश में 90% स्ट्राइक रेट 2014 में था। जब 2019 में सपा, बसपा और आरएलडी का गठबंधन हुआ, तो भी यह घट कर 80% से नीचे नहीं आया। दूसरे राज्यों को देखें तो गुजरात में 100% है दोनों चुनाव में, और इस सर्वेक्षण के मुताबिक तीसरे चुनाव में भी 100% प्रदर्शन रहेगा। दिल्ली में सात में से सात सीटें आयीं।

फिर मध्य प्रदेश, राजस्थान और छत्तीसगढ़ को मिला कर लोक सभा की 65 सीटें आती हैं, जहाँ भाजपा 2019 में 62 सीटें जीती है, यह 95% से भी ऊपर स्ट्राइक रेट है। उसके बाद हरियाणा की 10 में नौ, हिमाचल प्रदेश की चार में चार, उत्तराखंड की पाँच में पाँच, झारखंड की 14 में 12, त्रिपुरा की दो में दो, गोवा की दो में दो सीटें भाजपा को मिली थीं। उत्तर-पूर्व के राज्यों में कुल 25 सीटें हैं असम और त्रिपुरा को मिला कर, उनमें 20 से कम नहीं आती भाजपा की। कर्नाटक को भी 80% या इससे अधिक स्ट्राइक रेट वाले राज्यों की सूची में जोड़ लीजिए। अब कुछ ऐसे राज्य देखें, जहाँ भाजपा 40% के नीचे नहीं गयी। पश्चिम बंगाल, बिहार और उड़ीसा – ये पूरब के तीन राज्य ऐसे हैं। उड़ीसा में भाजपा की सीटें एक-दो बढ़ ही सकती हैं, कम होने का सवाल नहीं है। तो 13 राज्य ऐसे हैं, जहाँ भाजपा की सफलता दर 80% से 100% तक है। कौन उसको सत्ता से बाहर ले जा सकता है?

अगर 2024 के लोकसभा चुनाव की दृष्टि से 2019 से तुलना करें तो कोई ऐसा राज्य नहीं है, जहाँ आप कह सकें कि भाजपा कमजोर हो गयी है। कमजोरी की बात दो राज्यों में होती है - बिहार और महाराष्ट्र। पर वहाँ एनडीए कमजोर हुआ है। महाराष्ट्र में शिव सेना और बिहार में जेडीयू के निकल जाने के बाद उसका असर निश्चित रूप से एनडीए पर हो सकता है। हालाँकि महाराष्ट्र के बारे में मैं पक्के तौर पर नहीं कह सकता कि वहाँ भाजपा का जो प्रदर्शन एनडीए के रूप में 2019 में था, उसमें कोई बहुत बड़ी गिरावट आयेगी। बिहार में कुछ झटका जरूर एनडीए को लगेगा, पर भाजपा को नहीं।

इसलिए भाजपा की जो 303 की संख्या है, उसको जोड़ने के लिहाज से अगर आप देखिए तो बिहार से उसने 40 में से जो 17 सीटें जीती थीं, मुझे नहीं लगता कि भाजपा उससे नीचे जाने वाली है। महाराष्ट्र में भाजपा 48 में से 23 सीटें जीती थी। वहाँ भाजपा की सीटें कम नहीं होने वाली, उसके साथियों की कम हो सकती है। जिन राज्यों में प्रदर्शन से भाजपा को 303 सीटें मिली थीं, उन राज्यों में से किसी में भाजपा का प्रदर्शन खराब नहीं होता हुआ दिखाई दे रहा है।

जो राज्य चौंका भी सकते हैं, उनमें एक है पश्चिम बंगाल। जिस तरह की सिर-फुटौवल टीएमसी, कांग्रेस और सीपीएम के बीच में हो रही है, भाजपा को पिछली बार 42 में से जो 18 सीटें आयी थीं, वे बढ़ जायें तो कोई आश्चर्य की बात नहीं है। दूसरा ऐसा राज्य है तमिलनाडु। वहाँ भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष के. अन्नामलाई की यात्रा चल रही है। दक्षिण भारत में भाजपा के कार्यक्रम में कर्नाटक में भी इस तरह का तरह की भीड़ दिखाई नहीं देती है। वहाँ एआईएडीएमके और भाजपा का गठबंधन पिछले चुनाव की तुलना में बहुत बेहतर करेगा। पर कितनी सीटें आयेंगी, इसके बारे में अभी नहीं कहा जा सकता।

भाजपा की दृष्टि से दो राज्य हैं, जहाँ उसके लिए अभी कोई संभावना दिखाई नहीं देती। एक है केरल और दूसरा है आंध्र प्रदेश। चंद्रबाबू नायडू की पार्टी से अगर गठबंधन हुआ तो हो सकता है भाजपा एक-दो सीटें आंध्र प्रदेश में जीत जाये।

मोटोरोला ने पेश किया ई13 स्मार्टफोन

मोटोरोला ने 8 जीबी रैम और 128 जीबी की स्टोरेज वाले ई13 स्मार्टफोन का नया वैरिएंट बाजार में उतारा है। इसकी कीमत 8,999 रुपये रखी गयी है। यह फोन कॉस्मिक ब्लैक, ऑरोरा ग्रीन और क्रीमी व्हाइट में उपलब्ध होगा। इसमें 13 मेगापिक्सेल का प्राइमरी कैमरा और सेल्फी और वीडियो कॉल के लिए 5 मेगापिक्सेल का फ्रंट कैमरा दिया गया है। स्मार्टफोन में 6.5 इंच की एचडी+ आईपीएस एलसीडी डिस्प्ले दी गयी है। इसमें ऑक्टाकोर यूनिसॉक टी606 एसओसी और माली-जी57 एमपी1 जीपीयू प्रोसेसर है। यह एंड्रॉयड 13 (गो एडिशन) पर काम करेगा। 5,000 एमएएच की बैटरी वाले इस फोन में 10 वाट की वायर्ड चार्जिंग है। इस स्मार्टफोन में कनेक्टिविटी के लिए 2.4 गीगाहर्ट्ज और 5 गीगाहर्ट्ज ड्यूल बैंड वाई-फाई, ब्लूटूथ 5.0 वायरलेस और 3.5 एमएम का हेडफोन जैक है।

टीवीएस का नया इलेक्ट्रिक स्कूटर एक्स आया बाजार में

टीवीएस ने अपना नया इलेक्ट्रिक स्कूटर पेश कर दिया है। एक्स नाम से पेश इस नये इलेक्ट्रिक स्कूटर की शुरुआती कीमत 2.50 लाख रुपये (एक्स-शोरूम, बेंगलूरु) है। इस स्कूटर पर फेम योजना के तहत सब्सिडी नहीं मिलेगी। एक्स का डिजाइन आईक्यूब से बिल्कुल अलग है। डिजाइन के मामले में एक्स मैक्सी-स्टाइल स्कूटर की तरह है, जिसमें आक्रामक फ्रंट और फेयर्ड बॉडी है। एक्स का खास आकर्षण फ्रंट में एप्रन के अंदर खड़े डिजाइन में (वर्टिकल) हेडलाइट है। एक बड़े साइड पैनल से लैस एक्स की अन्य खूबियों में स्प्लिट सीट और 12-इंच ब्लैक-आउट एलॉय व्हील शामिल हैं। टीवीएस एक्स एक हाई टेंसिल एल्यूमीनियम चेसिस पर आधारित है, जिसे एक्सलेटन प्लेटफॉर्म कहा जाता है। ब्रेकिंग के लिए दोनों पहियों में डिस्क ब्रेक मिलेगा। एंटी-ब्रेकिंग सिस्टम को केवल अगले पहियों में शामिल किया गया है।

होंडा की नयी एसपी160 बाइक

होंडा मोटरसाइकिल इंडिया ने नयी बाइक एसपी 160 को बाजार में उतार दिया है। बाइक को 160 सीसी की प्रीमियम श्रेणी में पेश किया गया है। यह बाइक रोजमर्रा के कामों के लिए बेहतर है। इसमें 160 सीसी का सिंगल सिलेंडर एयर कूल्ड इंजन दिया गया है। इसमें पीजीएम-एफआई तकनीक भी है। बाइक में पैटल डिस्क ब्रेक हैं, जिससे ब्रेकिंग में सुधार होता है। इसके साथ ही बाइक में सिंगल चैनल एंटी ब्रेकिंग सिस्टम दिया गया है। बाइक में रियर मोनो शॉक सस्पेंशन भी हैं। इंजन स्टार्ट/स्टॉप स्विच, हजार्ड स्विच, एलईडी हेडलाइट, एलईडी टेल लाइट, 594 एमएम लंबी सीट, 177 एमएम का ग्राउंड क्लियरेंस, 1347 एमएम का लंबा व्हीलबेस और एडवांस डिजिटल मीटर जैसे फीचर्स भी बाइक में शामिल हैं।

सैमसंग की नयी टीवी श्रृंखला, कर सकेंगे वीडियो कॉल

सैमसंग ने भारत में अपनी नयी टीवी श्रृंखला उतारी है, जिसका नाम क्रिस्टल विजन 4के यूएचडी टीवी है। इस श्रृंखला में 43 इंच, 55 इंच और 65 इंच के तीन अलग आकार की स्क्रीन के विकल्प हैं। इनके साथ सौर ऊर्जा से चलने वाला रिमोट भी मिलेगा। इनमें वीडियो कॉलिंग सपोर्ट से लेकर मल्टी-वॉयस असिस्टेंट फीचर भी हैं। इनमें 43 इंच वाले मॉडल की कीमत 31,490 रुपये, 55 इंच वाले मॉडल की कीमत 46,990 रुपये और 65 इंच वाले मॉडल की कीमत 71,990 रुपये है। इन स्मार्ट टीवी में नेटफ्लिक्स, प्राइम वीडियो, डिज्नी+हॉटस्टार और यूट्यूब जैसे कई ऐप्प मिलेंगे। इस श्रृंखला के टीवी सैमसंग के एंड्रॉयड टीवी ओएस की जगह टाइजेन ऑपरेटिंग सिस्टम पर चलेंगे। सैमसंग के इन स्मार्ट टीवी के अंदर वीडियो कॉलिंग के लिए गूगल मीट का विकल्प भी मिलेगा।

आ गयी टाटा पंच की आईसीएनजी

टाटा मोटर्स ने अपनी एक नयी सीएनजी कार पेश की है। यह है इसकी पंच का आईसीएनजी संस्करण। नयी कार में सनरूफ के साथ ही बेहतर सुरक्षा उपाय और ज्यादा बूट स्पेस है। इस नयी कार की कीमत 7.09 लाख रुपये से लेकर 9.67 लाख रुपये तक है। टाटा मोटर्स ने पंच आईसीएनजी को अल्फा आर्किटेक्चर प्लेटफॉर्म पर तैयार किया है, जिसे ग्लोबल एनकैप से 5 स्टार सेफ्टी रेटिंग मिली है। इस सीएनजी एसयूवी में माइक्रो स्विच दिया गया है, जिसकी मदद से ईंधन भरते समय कार अपने-आप बंद हो जायेगी। पंच सीएनजी में थर्मल इंसिडेंट प्रोटेक्शन भी है। अन्य सुविधाओं में वॉयस असिस्टेड इलेक्ट्रिक सनरूफ, फ्रंट सीट आर्मरेस्ट, यूएसबी सी टाइप चार्जर और शार्क फिन एंटिना शामिल हैं।

BSE
Investors Protection Fund

इन्वेस्टमेंट शास्त्र

मिस्टर. इन्वेस्ट राईट के साथ

सफल पोर्टफोलियो बनाते समय ध्यान रखने योग्य बातें

- समझें कि बाजारों में उतार-चढ़ाव होते रहेंगे
- अपने निवेश लक्ष्यों के आधार पर स्टॉक चुनें
- अपने पोर्टफोलियो की निगरानी और यदि आवश्यक हो तो समायोजन भी करें
- बेहतर रिटर्न पाने के लिए लंबे समय तक निवेशित रहें

इन्वेस्ट राईट तो फ्यूचर ब्राइट

सुरक्षित निवेश पद्धतियों को जानने के लिए https://www.bseipf.com/doandonts.html पर जाएं।

नियमित ग्राहक बनें 70% तक छूट पायें

ग्राहक शुल्क (प्रिंट + डिजिटल)

अंक	नियमित शुल्क	छूट	देय राशि	
12	600 रु.	25.0%	450 रु.	☐
24	1200 रु.	30.0%	840 रु.	☐
36	1800 रु.	33.3%	1200 रु.	☐

मैंने ग्राहक बनने के लिए यह विकल्प चुना है (✓निशान लगायें)

ग्राहक शुल्क (डिजिटल)

अंक	नियमित शुल्क	छूट	देय राशि	
12	600 रु.	50.0%	300 रु.	☐
24	1200 रु.	60.0%	480 रु.	☐
36	1800 रु.	70.0%	540 रु.	☐

मैंने ग्राहक बनने के लिए यह विकल्प चुना है (✓निशान लगायें)

यूपीआई से डिजिटल भुगतान

पेटीएम, भीम ऐप्प या किसी भी अन्य यूपीआई ऐप्प से भुगतान के लिए यह क्यूआर कोड स्कैन करें।

चेक/ड्राफ्ट से भुगतान

NARADVANI SANCHAR MADHYAM PVT. LTD. के नाम से दिल्ली में ऐट पार पर देय चेक (या डिमांड ड्राफ्ट) देना है। चेक के पीछे ग्राहक का पूरा नाम, पूरा पता और मोबाइल नंबर लिखा होना चाहिए। नीचे दिया गया फॉर्म पूरा भरें और चेक के साथ लगा कर इस पते पर भेजें :

निवेश मंथन, 138 ई, पॉकेट-1, मयूर विहार-1, दिल्ली-110091
दूरभाष : 011-79633546, 47529834

नियमित ग्राहकों को पत्रिका सामान्य डाक से भेजी जायेगी। कोई अंक नहीं मिलने की शिकायत पर उसकी एक और प्रति भेज दी जायेगी।

निवेश मंथन ग्राहक आवेदन फॉर्म

नाम : .....
उम्र : ..... स्त्री / पुरुष
मोबाइल : .....
फोन नंबर : .....
ईमेल : .....
पूरा पता : .....
.....
..... पिन : .....
चेक संख्या : .....
बैंक : .....

मैंने इस ग्राहक योजना की सभी शर्तों को पढ़ और समझ लिया है।

प्रिंट + डिजिटल 12 अंक : 450 रुपये ☐
प्रिंट + डिजिटल 24 अंक : 840 रुपये ☐
प्रिंट + डिजिटल 36 अंक : 1200 रुपये ☐
डिजिटल 12 अंक : 300 रुपये ☐
डिजिटल 24 अंक : 480 रुपये ☐
डिजिटल 36 अंक : 540 रुपये ☐

हस्ताक्षर

(ग्राहक योजना के बारे में किसी भी जानकारी के लिए nivesh@sharemanthan.com पर ई-मेल करें या +911147529834 पर व्हाट्सऐप्प से संदेश भेजें)

UTI Mutual Fund

अपने सपनों का
घर बनाने की योजना बनाएं
आज ही एस.आइ.पी. शुरू करें।

सिस्टेमैटिक इनवेस्टमेंट प्लान (एस.आइ.पी.) एक ऐसी सुविधा है, जिसकी मदद से एक निश्चित अवधि में नियमित रुप से किसी विशेष म्यूचुअल फंड योजना में पूर्व-निर्धारित तिथि पर निश्चित राशि का अनुशासनबद्ध तरीके से निवेश किया जाता है।

UTI SWATANTRA®
India Invest Karo®

यह क्रिएटिव UTI म्यूचुअल फंड के निवेशक शिक्षा एवं जागरुकता पहल के अधीन है। KYC दस्तावेज़ों से जुड़ी आवश्यकताओं और पते, फोन नंबर, बैंक विवरण, आदि में बदलाव की प्रक्रिया के बारे में जानने के लिए कृपया https://www.utimf.com/servicerequest/kyc पर जाएं। कृपया केवल पंजीकृत म्यूचुअल फंड्स से लेन-देन करें जिनके विवरण का सत्यापन सेबी की वेबसाइट में "मध्यवर्ती (इंटरमीडियरी) / बाज़ार की बुनियादी संस्थाएं" के तहत किया जा सकता है। UTI म्यूचुअल फंड के संबंध में सभी शिकायतें service@uti.co.in पर की जा सकती हैं या www.scores.gov.in(सेबी स्कोर्स पोर्टल) पर जाएं।

म्यूचुअल फंड में निवेश बाज़ार जोखिमों के अधीन है, योजना संबंधी सभी दस्तावेज़ों को ध्यान से पढ़ें।

RNI No. DELHIN/2011/37667. Postal registrations: DL(DS)-53/MP2022-23-24

MUTUAL FUNDS *Sahi Hai*

CANARA ROBECO
Mutual Fund

अपने इंवेस्टमेंट को ट्यून करें

3S के साथ

SIP

सिस्टेमैटिक इंवेस्टमेंट प्लान म्यूचुअल फ़ंड्स द्वारा दी जानेवाली एक ऐसी सुविधा है जिसकी मदद से निवेशक एक ख़ास फ़ंड में एक सुनिश्चित रकम को एक निर्धारित अवधि के लिए निवेश कर सकता है.

STP

सिस्टेमैटिक ट्रांसफ़र प्लान एक ऐसी सुविधा है जहां निवेशक पहले से निर्धारित फ़्रिक्वेंसी पर एक सुनिश्चित रकम को एक स्कीम से दूसरी स्कीम में ट्रांसफ़र करने का विकल्प चुन सकता है.

SWP

सिस्टेमैटिक विद्ड्रॉवल प्लान एक ऐसी सुविधा है जहां आप पहले से निर्धारित अवधि के लिए एक सुनिश्चित रकम को मौजूदा म्यूचुअल फ़ंड से निकाल सकते हैं.

#smarTomorrows

www.canararobeco.com/smartomorrows
An Investor education and awareness initiative

म्यूचुअल फ़ंड निवेश बाज़ार जोखिमों के अधीन होते हैं, स्कीम संबंधी सभी दस्तावेज़ों को ध्यान से पढ़ें.

निवेशक सिर्फ़ रजिस्टर्ड म्यूचुअल फ़ंड्स में ही डील करें, जिससे संबंधित जानकारी की पुष्टि सेबी की वेबसाइट (https://www.sebi.gov.in) पर 'Intermediaries/Market Infrastructure Institutions' के तहत कर सकते हैं. एक-बार का KYC (नो योर कस्टमर) पूरा करने की प्रक्रिया संबंधी जानकारी के लिए कृपया विज़िट करें http://bit.ly/cr-mandatory-disclosures, जिसमें पते, फ़ोन नंबर, बैंक संबंधी जानकारी, इत्यादि में बदलाव की प्रक्रिया भी शामिल है. अगर निवेशक अपने म्यूचुअल फ़ंड्स की प्रतिक्रिया से संतुष्ट नहीं हैं, तो वे अपनी शिकायत स्कोर्स पोर्टल (https://www.scores.gov.in) पर दर्ज कर सकते हैं. टैक्स संबंधी मौजूदा नियमों के अधीन. व्यक्तिगत टैक्स अनुमान के लिए, निवेशकों से निवेदन है कि निवेश करने से पहले वे अपने टैक्स एडवाइज़र की सलाह लें.